चैम्पियन किसानों का संक्षिप्त परिचय

भा.कृ.अनु.प–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान
नई दिल्ली – 110012

आईएसबीएनः 978–93–83168–20–0

चैम्पियन किसानों का संक्षिप्त परिचय

भा.कृ.अनु.प.–भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान
नई दिल्ली–110012

मार्च 2015 में मुद्रित

निदेशक
रविन्द्र कौर

संयुक्त निदेशक (अनुसंधान)
के.वि. प्रभु

संकल्पना
हिन्दी प्रकाशन समिति

सम्पादन
जे.पी. शर्मा
नारायण कुम्भारे
प्रेमलता सिंह
मनजीत सिंह नैन
राजर्षि राय बर्मन

तकनीकी सहयोग
संगीता उपाध्याय
रमेश चन्द्रा
शशि गुप्ता

प्रकाशन सहयोग
सुभाष चन्द्र
करूणा दीक्षित
अनिता नारायण (कवर पेज)

उद्धरण : चैम्पियन किसानों का संक्षिप्त परिचय (2015) भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली 110012

ISBN : 978-93-83168-20-0

मुद्रित प्रतियां : 1000

मूल्यः ₹ 150/–

©2015 – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली सर्वाधिकार सुरक्षित

वेबसाइट : www.iari.res.in

निदेशक, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली की ओर से प्रकाशन यूनिट द्वारा प्रकाशित एवं वीनस प्रिंटर्स एवं पब्लिशर्स बी–62/8, फेस–II, नारायणा औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली–110028, मोबाईलः 9810089097, 011–45576780, ई–मेलः **pawannanda@gmail.com** द्वारा मुद्रित।

भा.कृ.अ.प. – भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली–110012 (भारत)
ICAR - INDIAN AGRICULTURAL RESEARCH INSTITUTE
(A UNIVERSITY UNDER SECTION 3 OF UGC ACT, 1956)
NEW DELHI - 110012 (INDIA)

डॉ० रविन्द्र कौर
निदेशक (कार्यकारी)
Dr. (Mrs.) Ravinder Kaur
Director (Acting)

Phones : 011-2584 2367, 2584 3375 (Off.)
Fax : 011-2584 6420
E-mail : director@iari.res.in
Personal: rk132.iari@gmail.com
Website : www.iari.res.in

आमुख

किसान कम आयु से ही कृषि कार्य से जुड़े होते हैं और समय के साथ–साथ पारम्परिक ज्ञान, परीक्षणों और प्रयोगात्मक सीख के परिणामस्वरूप उनकी जानकारी और कौशल में वृद्धि होती जाती है। स्वतंत्रता के बाद हुई वैज्ञानिक प्रगति ने भारतीय कृषि के लिए तकनीकी सृजन को एक नया आयाम दिया है लेकिन अभी भी कृषि पारिस्थितिकीय परिस्थितियों के संदर्भ में किसानों के पास उपलब्ध जानकारी, बुद्धिमत्ता, नवोत्परिवर्तन, प्रतिक्रिया के अंगीकरण का सामाजिक–आर्थिक परिपेक्ष्य में अत्यधिक महत्व है। अनुसंधान संस्थानों द्वारा सृजित की गई प्रौद्योगिकियों से भी आगे जाकर विभिन्न कृषि जलवायु परिस्थितियों के अनुकूल मांग चालित प्रौद्योगिकियों का विस्तार करने के लिए किसानों द्वारा किए गए नवोत्परिवर्तन और पुनः अन्वेषण देश में कृषि विकास के लिए महत्वपूर्ण हैं।

कृषक समुदाय ने अनेक मूल्यवान नवोत्परिवर्तनों को विकसित कर उन्हें अपने खेतों में अपनाकर सफलता हासिल की है। इसके साथ ही इन्होंने अपने साथी किसानों के खेतों पर भी इन नवोत्परिवर्तनों को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनके जीवन की वास्तविक सफल गाथाएं हमारे लिए प्रेरणा का स्रोत हैं और मुझे विश्वास है कि नवोन्मेषी किसानों के नवोत्परिवर्तनों और उनकी सफल गाथाओं को दस्तावेजी रूप देने की यह अनूठी पहल भारत के कृषक बंधुओं व वैज्ञानिकों को और अधिक नवोत्परिवर्तन तथा उत्पादकता हासिल करने की दिशा में प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करेगी।

मैं इस पुस्तिका के प्रकाशन के लिए संस्थान के संयुक्त निदेशक (अनुसंधान) डॉ. के.वि. प्रभु को साधुवाद देना चाहूंगी जिनकी अध्यक्षता में गठित हिन्दी प्रकाशन समिति ने ऐसे प्रेरणादायक प्रकाशन की संकल्पना की है।

इस प्रकाशन को मूर्त रूप देने में मैं इस संस्थान के कृषि प्रसार संभाग द्वारा किए गए प्रयासों की सराहना करती हूं।

नई दिल्ली
7 मार्च, 2015

(रविन्द्र कौर)

प्राक्कथन

कृषि पारिस्थितिकी एवं सामाजिक–आर्थिक व्यवस्था के संदर्भ में भारत विविधताओं से परिपूर्ण राष्ट्र है और यहां के अधिकांश किसान छोटी जोत वाले हैं। भारतीय कृषि को विश्व की 17% जनसंख्या की खाद्य तथा पौषणिक सुरक्षा सुनिश्चित करने, प्राकृतिक संसाधनों का इष्टतम सदुपयोग करने, किसानों का सशक्तीकरण करने तथा विभिन्न उत्पादन प्रणालियों के टिकाऊपन व उच्चतर उत्पादकता पर अपना ध्यान केंद्रित करने की जरूरत है। कृषि अनुसंधान संस्थानों के व्यापक नेटवर्क के सहयोग के साथ राष्ट्रीय अनुसंधान प्रणाली द्वारा देश की विभिन्न प्राकृतिक संसाधन निधियों के लिये प्रौद्योगिकियों, तकनीकों, रीतियों, प्रक्रियाओं, मशीनों एवं उपकरणों को विकसित करने का प्रयास किया जा रहा है। प्राचीन काल से ही कृषक भी प्रौद्योगिकी सृजन की प्रतिक्रिया में शामिल हैं और उनके द्वारा किये गये नवोन्मेषों को विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मंचों पर मान्यता मिल रही है। इन सफल चैम्पियन किसानों को अब प्रौद्योगिकी विकास प्रक्रिया में भागीदार माना जाता है। इस प्रकार के किसानों को मान्यता और अधिकार प्रदान हेतु राष्ट्रीय नवोन्मेष फाउंडेशन, पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण, राष्ट्रीय जैव विविधिता प्राधिकरण, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् जैसे सरकारी प्रयासों के साथ–साथ एस्पी फाउंडेशन, क्रिस्टल इंन्डिया, महेंद्रा ग्रुप आदि ने सराहनीय कदम उठाये हैं।

ऐसे किसानों को पहचानने, उन्हें मान्यता प्रदान करने के लिये और बढ़ावा देने की विशेष आवश्यकता है जो जमीनी स्तर पर कृषि प्रौद्योगिकियों के वास्तविक नव–प्रवर्तक है। ऐसे चैम्पियन किसानों द्वारा अपनी सूक्ष्म कृषि परिस्थितियों के विश्लेषण के आधार पर अर्जित व्यापक अनुभव एवं ज्ञान के परिणाम होते हैं। ऐसे अन्वेषणों से किसानों द्वारा नई किस्मों सहित सटीक तकनीकों के विकास को बल मिलता है तथा साथ ही नवोन्मेषी कृषि प्रौद्योगिकियों के माध्यम से कृषि उत्पादकता बढ़ाने में मदद मिलती है जिसके परिणामस्वरूप अंततः ग्रामीण समृद्धि बढ़ती है।

किसानों द्वारा किये गये नवोन्मेष एवं उनका सफलतापूर्वक क्रियांवयन, किसान से किसान के स्तर पर प्रसार और कृषकों की सफलता की कहानी को एक प्रकाशन के रूप में प्रौद्योगिकी विकास उपयोग एवं उसके प्रसार में शामिल कृषि पेशेवरों एवं संगठनों के लाभ के लिये तैयार किया गया है। देश भर के मान्यता प्राप्त सफलतम किसानों द्वारा अपनाई गई रीतियों का संकलन विभिन्न उत्पादन प्रणालियों में वर्गीकृत किया गया है। इसमें किसानों का विवरण उनके उद्यानिकी, बीज उत्पादन एवं किस्म सुधारीकरण, फसल पोषण व सुरक्षा प्रबंधन, कृषि मशीनरी, समेकित कृषि प्रणाली फसलोत्तर प्रबंधन, प्रसंस्करण एवं मूल्यवर्धन में किये गये नवोन्मेषी कार्य तथा विपणन में अपनाये गये आयामों को दस्तावेजी रूप में संकलित किया गया है। इनमें से अधिकांश किसानों को अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगठनों द्वारा पुरस्कार प्रदान किये जा चुके हैं।

हम संस्थान के माननीय निदेशक एवं संयुक्त निदेशकों के आभारी हैं जिनके सतत सहयोग, मार्गदर्शन और प्रोत्साहन के परिणाम स्वरूप ही इस प्रकाशन को मूर्तरूप देना संभव हो सका। इसके लिए हम चैम्पियन किसानों को अमूल्य सहयोग देने हेतु विशेष धन्यवाद देते है जिनके सहयोग के बिना यह प्रयास संभव नही था। साथ ही हम, श्री वी.के. चतुर्वेदी, श्री सत्यप्रकाश एवं श्रीमती लीना वोहरा का उनकी निरंतर भागीदारी एवं निष्ठावान सहयोग के लिये आभार व्यक्त करते हैं।

संपादक मंडल

विषय सूची

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1.	उद्यानिकी	1–20
2.	बीज उत्पादन एवं किस्म सुधारीकरण	21–39
3.	फसल पोषण व सुरक्षा प्रबंधन	40–48
4.	कृषि अभियांत्रिकी	49–55
5.	समेकित कृषि प्रणाली	56–93
6.	कृषि आधारित उद्यम	94–105
7.	कृषि विविधीकरण	106–113

सरदार गुरप्रीत सिंह शेरगिल

पिता का नाम	सरदार बलदेव सिंह शेरगिल
आयु	43 वर्ष
शिक्षा	मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा
कृषि भूमि	36 एकड़
मुख्य फसल	गेहूं, धान, चारा, ग्लैडिओलस, गुलाब एवं गेंदा

पता		
गांव	:	मजहल खुर्द,
पोस्ट	:	पंजोला
जिला	:	पटियाला – 147101, पंजाब
मोबाइल	:	09872624253
ई–मेल	:	shergill_farms@yahoo.com

उपलब्धियां

• स. गुरप्रीत सिंह शेरगिल ने बेहतर उत्पादन एवं उत्पादकता के लिए अपने फार्म में नई तकनीकों को अपनाया। स. शेरगिल ने भूमिगत पाइपलाइन और भण्डारण टैंक (जिसका कि मात्स्यिकी के लिए भी उपयोग किया गया) के माध्यम से जल प्रबंधन करके ड्रिप सिंचाई प्रणाली स्थापित की। जल संरक्षण के लिए इन्होंने गुलाब की खेती में धान की पुआल की पलवार का उपयोग किया। स. शेरगिल पॉलीहाउस की फसलों में उर्वरकों का पर्णीय छिड़काव कर रहे हैं और गुलाब में निराई गुड़ाई के लिए सेल्फ पावर्ड रोटावेटर का उपयोग कर रहे हैं। स. शेरगिल ने गुलाब जल संयंत्र, ग्लैडिओलस बल्ब के लिए शीत भण्डार और वर्मीकम्पोस्ट इकाई भी स्थापित की है।

• स. शेरगिल ने अपने कृषि फार्म में विभिन्न फसल चक्र अपनाए हैं जिनमें मुख्यतः धान–ग्लैडिओलस, धान–गेंदा, हरा चारा–ग्लैड़िओलस–हरा चारा, हरा चारा–गेंदा–दलहन, हरा चारा–ग्लैडिओलस–गेंदा हैं। एक ही बार में चार विभिन्न आकारों में ग्लैडिओलस बल्ब की ग्रेडिंग करने के लिए स. शेरगिल ने शून्य प्रतिशत नुकसान के साथ स्वयं ही एक सेल्फ पॉवर्ड ग्रेडर की डिजाइन तैयार कर उसका निर्माण किया। यह ग्रेडर एक घंटे में 7–8 क्विंटल ग्लैडिओलस बल्ब की ग्रेडिंग कर सकता है। ग्लैडिओलस की खेती से इन्हें एक लाख रुपये प्रति एकड़ तक की शुद्ध आय हुई है। अन्य कृषि प्रचालनों से भी इन्हें आकर्षक लाभ हुआ है।

• स. शेरगिल ने ताजा फूलों की विभिन्न मण्डियों का सर्वे किया और इन्होंने थोक विक्रताओं के साथ सम्पर्क बनाकर पहले से तय मूल्य पर अपने उत्पाद को बेचा और बाजार में अनावश्यक डम्पिंग से बचा जाता है। ग्लैडिओलस बल्ब का भण्डारण करने के लिए शीत भण्डार सुविधा का उपयोग किया जिससे बल्ब को बीज के रूप में बेचा जा सकता है अथवा अगली फसल के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। बेहतर मूल्य पाने में उत्पाद की ग्रेडिंग/श्रेणीकरण करना मद्दगार रहा।

• श्री शेरगिल ने गुलाब में मूल्य वर्धन करने तथा गुलाब के फूलों से बेहतर लाभ अर्जित करने के लिए गुलाब जल संयंत्र स्थापित किया। इससे उत्पाद की निधानी आयु में कई गुना वृद्धि हो गई। इसके अलावा, स. शेरगिल ने अपने ब्राण्ड नाम से विभिन्न आकार के आकर्षक पैक में वर्मीकम्पोस्ट को बेचा। पुष्प डंडियों (कर्तित फूलों) की निधानी आयु को बढ़ाने के लिए इन्हें अपने फार्म पर स्थापित शीत कक्ष में रखकर मूल्य वर्धन किया और अधिकतम लाभ हासिल करने के लिए इन फूलों को उपयुक्त समय पर बाजार में बेचा।

• श्री शेरगिल ने हालैण्ड में आयोजित 'फलोरिडे 2002 में तथा ग्लासगो (यू.के.) में आयोजित ''विश्व गुलाब सम्मेलन 2003'' में भाग लिया। इन्हें राष्ट्रीय, राज्य एवं जिला स्तर पर कई बार प्रतिष्ठित प्रगतिशील किसान पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

श्री अमरजीत सिंह ढिल्लों

पिता का नाम	सरदार जरनैल सिंह ढिल्लों
आयु	38 वर्ष
शिक्षा	स्नातक (बी.टेक, मैकेनिकल इंजीनियरिंग) पी.जी. डिप्लोमा (प्रोड. इंजीनियरिंग)
कृषि भूमि	12 एकड़
मुख्य फसलें	फल – अमरूद, कीन्नू, अंगूर, सब्जियां–शिमला मिर्च, टमाटर, खीरा, लौकी

पता		
गांव	:	बरगारी (जाखड वाला रोड)
पोस्ट	:	बरगारी (जाखड वाला रोड)
जिला	:	फरीदकोट–151208, पंजाब
मोबाइल	:	09814322390
ई–मेल	:	asbargari@gmail.com

उपलब्धियां

• श्री अमरजीत सिंह ढिल्लों ने एकल फसल चक्र के स्थान पर बागवानी फसलों को उगाया। बेहतर मूल्य पाने के लिए इन्होंने स्थानीय बाजार की आवश्यकता के साथ तालमेल बिठाकर सब्जियों की बुवाई के समय को समायोजित किया।

• विक्रताओं के बीच इनके उत्पाद की विश्वसनीयता कहीं ज्यादा है और इसी भरोसे के कारण श्री ढिल्लों अपने उत्पाद का मूल्य रुपये 1 से 2 प्रति कि.ग्रा. अधिक ले सके। श्री ढ़िल्लों किन्नू, अंगूर और अमरूद जैसे फलों से प्रति एकड़ रुपये 60,000 से 1,50,000 का लाभ तथा टमाटर, जीरा, लौकी, शिमला मिर्च आदि जैसी सब्जी फसलों से प्रति एकड़ 50,000 से 1,20,000 रुपये का लाभ अर्जित करते हैं।

• श्री ढिल्लों कम लागत वाली तकनीकों का इस्तेमाल करते हैं जिनमें शामिल हैं:– सब्जियों में कम ऊंचाई वाली टनल तकनीक (दिसम्बर व जनवरी में पाले के बचाव), जल संचयन एवं ड्रिप सिंचाई, वर्षा जल संचयन, खीरा वर्गीय फसलों के लिए बावर प्रणाली (वर्षा काल में नुकसान से बचने के लिए), बेमौसमी सब्जियां उगाने के लिए पॉलीहाउस में नर्सरी तैयार करना, तथा मृदा के नीचे कठोर सतह के कारण फल रोपण के लिए मिट्टी को बदलना।

• श्री ढिल्लों ने मजदूरी की जरूरतों को कम करने के लिए ट्रैक्टर माउन्टिड पॉवर स्प्रेयर के साथ एक एटैचमेन्ट विकसित किया है। इसके साथ ही इन्होंने जल संरक्षण के लिए अनेक विधियां अपनाई हैं जिनमें बागवानी फसलों की खेती, हरी खाद, गोबर की खाद, समेकित नाशीजीव प्रबंधन एवं रासायनिक उर्वरकों की संतुलित एवं जरूरी मात्रा का उपयोग, फल एवं सब्जियों के लिए ड्रिप सिंचाई तथा नहर और वर्षा जल का संचय करने के लिए 40 लाख लिटर की क्षमता वाले जल भण्डारण टैंक का प्रयोग प्रमुख हैं।

श्री जी. अजीथन

पिता का नाम	श्री एम.वी. गणपति
आयु	55 वर्ष
शिक्षा	सुगर टैक्नोलॉजी में स्नातकोत्तर
कृषि भूमि	20 एकड
बोई गईं फसलें	केला, गन्ना, धान, कंदाकार फसलें, मूंगफली, अरण्डी, चीकू फल तथा नारियल बागान

पता		
गांव	:	24 / 13, अग्रहारम
पोस्ट	:	मोहानुर
जिला	:	नामक्कल–637015 तमिलनाडु
मोबाइल	:	09443714352
टेलिफोन	:	04286–255252
ई–मेल	:	ajeethkisan@gmail.com

उपलब्धियां

• श्री जी. अजीथन तमिलनाडु के एक प्रयोगात्मी कृषक हैं। इनके पास कृषि कार्य को पूरी तरह से अपनाने के लिए इस उद्योग में कार्य करने का एक दशक से भी अधिक का अनुभव है। श्री अजीथन को केला, गन्ना के साथ–साथ धान एवं कंदाकार फसलों की अन्य किस्मों और तिलहन फसलों की खेती का 27 वर्षों का अनुभव है।

• संतुलित कृषि तकनीकों को अपनाने के साथ ही श्री अजीथन द्वारा अधिकांशत हरी फलियों की खाद, घूरे की खाद, खली, जैव उर्वरकों का इस्तेमाल, जरूरत आधारित शुद्ध रासायनिक उर्वरकों और सूक्ष्म पोषक तत्वों के साथ मिलाकर किया जाता है। श्री अजीथन द्वारा एनपीओपी प्रमाणन के अनुसरण में जैविक खेती भी की जाती है।

• श्री अजीथन ड्रिप एवं फर्टिगेशन के साथ ऊतक संवर्धित केला उगाना पसंद करते हैं जिससे पारम्परिक विधियों की तुलना में कहीं बेहतर उपज मिलती है। इस तकनीक के लिए श्री अजीथन को राष्ट्रीय केला अनुसंधान केन्द्र, त्रिचुरापल्ली से वर्ष 2003 का सर्वश्रेष्ठ केला उत्पादक पुरस्कार मिला है।

• तिलहन फसलों में बेहतर उपज के लिए उर्वरकों का जैविक आदानों के साथ सम्मिश्रण का उचित उपयोग करने के लिए श्री अजीथन को अनेक पुरस्कार मिले हैं।

• श्री अजीथन, कृषि मंत्रालय, नई दिल्ली के तहत ऑल इंडिया बनाना ग्रोअर्स एसोसिएशन के संयुक्त सचिव तथा कंसोर्शियम ऑफ इंडियन फार्मर्स एसोसिएशन, तमिलनाडु शाखा के तकनीकी सचिव हैं। श्री अजीथन विभिन्न जिलों की ग्रोअर्स एसोसिएशन को एक साथ लाकर तमिल नाडु बनाना ग्रोअर्स फेडरेशन के महासचिव के रूप में कार्य कर रहे हैं और साथ ही तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय एवं राष्ट्रीय केला अनुसंधान केन्द्र की अनुमति से केला के विकास पर कार्य कर रहे हैं। इसके साथ ही श्री अजीथन मोहानुर कैनाल वाटर यूजर्स एसोसिएशन एवं सलेम को–ऑपरेटिव सुगरमिल कैन कल्टीवेटर्स एसोसिएशन के सचिव भी हैं।

पिता का नाम	श्री हरी कृष्ण
आयु	63 वर्ष
शिक्षा	10वीं
कृषि भूमि	6 एकड़
मुख्य फसलें	ग्लैड़िओलस, कार्नेशन, गुलदाउदी, लिलियम व गुलाब

पता

गांव : महोग
डाकघर : चॉयल
तहसील : कंडाघाट
जिला : सोलन, हिमाचल प्रदेश
मोबाइल : 09805712644
ई–मेल : thakur_bhanu4444@yahoo.com

उपलब्धियां

- श्री आत्म स्वरूप ने एक पुष्प उत्पादक के रूप में अपनी पहचान बनाई है। श्री आत्म स्वरूप ने वर्ष 1989 में महाराजा पटियाला फार्म, दोची से ग्लैडिओलस की दूधिया सफेद किस्म खरीदकर खुले खेत में ग्लैडिओलस की खेती प्रारंभ की और बाद में ग्लैडिओलस के 30,000 घनकंद और कुछ अन्य किस्मों के धन कन्द खरीदे तथा उसके बाद हालैण्ड से कुछ किस्मों का आयात किया। वर्ष 1992 तक इनके फार्म में घनकंदों की संख्या बढ़कर 1.50 लाख तक पहुंच गई। वर्ष 1994 में श्री आत्म स्वरूप ने कार्नेशन की चार किस्मों यथा पिंक कैण्डी, व्हाइट कैण्डी, येलो कैण्डी और इस्पना का खुले खेत में उत्पादन शुरू किया। वर्ष 1996 तक श्री आत्मस्वरूप इन फूलों की खेती खुली परिस्थितियों में ही करते रहे। इसके बाद इन्होंने अपने फार्म पर कुछ पॉलीहाउस बनवाएं और गुलनार (कार्नेशन) की खेती को पॉलीहाउस में स्थानान्तरित किया। संरक्षित खेती को अपनाने के बाद श्री आत्म स्वरूप अपनी आमदनी को कई गुणा तक बढ़ा सकें जिससे इनके गांव के अन्य किसान भी फूलों की खेती के लिए इस तरह की संरचना का निर्माण कराने के लिए प्रेरित हुए। ऐसा करके गांव के सभी किसानों को लाभ पहुंचा जिससे उन्हें एक उद्यम के रूप में पुष्प उत्पादन को बढ़ाने और उसका विविधीकरण करने की प्रेरणा मिली।
- वर्ष 2007 में श्री आत्म स्वरूप ने गुलदाउदी और गुलाब की किस्मों की शुरूआत कर अपने उद्यम को विविधीकृत बनाया। मार्च, 2011 में इन्होंने जापान से युस्टोमा (सुमुख) के बीजों का आयात किया और कृषि विज्ञान केन्द्र, कंडाघाट के वैज्ञानिकों द्वारा हिमाचल प्रदेश में मध्यम ऊंचाई वाले पर्वतीय क्षेत्र में इस पुष्प की खेती की संभावना के बारे में प्रदान की गई सलाह पर खेती करना प्रारंभ किया। श्री आत्म स्वरूप ने डॉ. वाई.एस. परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, नौनी, सोलन द्वारा विकसित नवीनतम उत्पादन एवं संरक्षण तकनीकों को अपनाया और साथ ही उत्पादन लागत को किफायती बनाने के लिए ड्रिप सिंचाई व स्प्रिंक्लर (टपक व फव्वारा सिंचाई) प्रणाली का उपयोग कर जल के उचित प्रयोग द्वारा सभी आदानों का समुचित उपयोग किया। वर्ष 1989 में इनकी मामूली आय 25,000 रुपये प्रति वर्ष थी जबकि अब इनकी आमदनी बढ़कर 20 रुपये लाख प्रतिवर्ष हो गयी है। श्री आत्म स्वरूप द्वारा किए गए इन प्रयासों एवं पहल के कारण सोलन जिले का महोग गांव देश के एक पुष्प उत्पादन केन्द्र के तौर पर उभर कर सामने आया है और गांव के किसानों की सामाजिक आर्थिक स्थिति में आमूलचूल सकारात्मक बदलाव हुआ है।

श्री राम लाल चौहान

पिता का नाम	स्व. श्री आत्मा राम
आयु	50 वर्ष
शिक्षा	स्नातक (बी.ए.) एवं होटल रिसेप्शन व मधुमक्खी पालन में डिप्लोमा
कृषि भूमि	12 एकड़
मुख्य फसलें	सेब फलोद्यान

पता		
गांव	:	धान्गवी
पोस्ट	:	कुकुनाला
तहसील	:	कोटखाई
जिला	:	शिमला – 171 202 हिमाचल प्रदेश
टेलिफोन	:	01783–257552 (आवास)
मोबाइल	:	09816047552

उपलब्धियां

- श्री राम लाल चौहान, हिमाचल प्रदेश के शिमला जिले में गांव धान्गवी के एक प्रगत सेब उत्पादक हैं। श्री चौहान को वर्ष 1987 में सेब फलोद्यान विरासत में मिला जिसमें सेब के पुराने पौधे थे। इनके सेब फलोद्यान में रॉयल डिलीशियस, रेड़ डिलीशियस, रिचा रेड तथा गोल्ड़न डिलीशियस किस्में थीं। तब ये अपने फलोद्यान से 2 लाख रुपये सालाना का मामूली लाभ कमा पा रहे थे। उसके बाद श्री चौहान ने उत्पादन प्रौद्योगिकी में नई नवोन्मेषी तकनीकों को अपनाना शुरू किया। इन्होंने सभी पुराने सेब के पौधों पर कार्य किया और उन्हें अंतर–राष्ट्रीय रूप से अपनाये जाने योग्य उच्च उपजशील किस्मों एवं नियमित फल देने वाली व्यावसायिक किस्मों नामतः रेड़ चीफ, ब्राइट एन अर्ली, ऑरेगन स्पर, सिल्वर स्पर, सुपर चीफ, सेलेक्ट स्पर, गाला, फुजी तथा ग्रैनी स्मिथ किस्मों के साथ बदला। इन्होंने फलोद्यान में लगे पुराने वृक्षों पर समर क्वीन, गोल्ड़न स्पर, रेड़ गोल्ड़ तथा टाइडेमन्स अर्ली जैसी 3–4 परागक किस्मों पर कार्य करते हुए अपर्याप्त परागण एवं फल स्थापन की समस्या को सुलझाया। अपने फलोद्यान में पर्याप्त परागण एवं फल स्थापन हासिल करने के लिए इन्होंने प्रति एकड़ 4 मधुमक्खी छत्ते रखे। इनके प्रयासों ने तीन साल की मेहनत के पश्चात रंग दिखाना प्रारंभ किया और पांच साल के भीतर वर्ष 1992 में इनका लाभ 2 लाख रुपये से बढ़कर 8 लाख रुपये तक पहुंच गया। इससे उत्साहित होकर इन्होंने फलोद्यान के निकटवर्ती हिस्से में और 700 वृक्षों में इस नवोन्मेषी युक्ति को अपनाया। श्री चौहान ने उत्पादन प्रौद्योगिकी में क्लोनल मूलवृंतों पर सेब की उन्नत किस्मों की उच्च सघनता रोपण जैसी अन्य नवोन्मेषी तकनीक को अपनाया। अपनी इस नवोन्मेषी युक्ति का प्रयोग करके श्री चौहान ने मानक सेब रोपण में 56 टन प्रति हेक्टेयर का उत्पादकता स्तर हासिल किया। यह उत्पादकता स्तर राज्य में औसत उत्पादकता की तुलना में लगभग 7–8 गुणा है और विकसित देशों के उत्पादकता स्तर का तुलनीय है। अपने फलोद्यान में इन्होंने 30 प्रतिशत क्षेत्र की सिंचाई स्प्रिंक्लर के माध्यम से की। अपने फलोद्यान की शुरूआती जरूरतों को पूरा करने के लिए इन्होंने 130 क्विंटल प्रति वर्ष उत्पादन क्षमता वाली वर्मीकम्पोस्ट इकाई स्थापित की है। बीस साल की अवधि में इनकी आमदनी 2 लाख रुपये से बढ़कर 30 लाख रुपये प्रतिवर्ष तक पहुंच गई है।
- श्री चौहान अपनी सफलता का श्रेय अपने मजबूत इरादों और डॉ. वाई.एस. परमार बागवानी एवं वानिकी विश्वविद्यालय, सोलन से लगातार मिले तकनीकी सहयोग को देते हैं। अब तक श्री चौहान को विभिन्न राज्य स्तरीय कार्यक्रमों में गुणवत्ता फलों के उत्पादन के लिए कुल 35 पुरस्कार मिल चुके हैं। जिसमें पूसा, नई दिल्ली से प्रगतिशील किसान पुरस्कार भी शामिल है।

श्री सुधांशु कुमार

पिता का नाम	श्री दुर्गा प्रसाद सिन्हा
आयु	52 वर्ष
शिक्षा	स्नातकोत्तर (एम.ए. इतिहास)
प्रगत प्रमाण पत्र	पी.सी. अनुप्रयोग
कृषि भूमि	60 एकड़
मुख्य फसलें	गेहूं मक्का, मसूर, सरसों चना, लीची एवं आम

पता		
गांव	:	402, रामेश्वरम अपार्टमेंटस, मिस मण्डल कम्पाउंड, पूर्वी बोरिंग कैनाल रोड,
जिला	:	पटना – 800 001, बिहार
मोबाइल	:	9934917017
ई–मेल	:	sudhanshu5506 @gmail.com

उपलब्धियां

• श्री सुधांशु कुमार, बिहार राज्य के एक प्रगतिशील किसान हैं जिन्हें विविधीकृत कृषि और आम की फसल में नवोन्मेषी कृषि के लिए जाना जाता है। इन्होंने आम को पकाने के लिए कैल्सियम कार्बाइड के स्थान पर इथेफोन (इथ्रेल) का उपयोग प्रारंभ किया। आम फलों को पानी में डुबोना और अनुकूल तापमान बनाए रखने की कार्य प्रक्रिया श्रम साध्य एवं बड़ी होती है। कार्य का दायरा भी कहीं ज्यादा था। बिना बिजली के यह कार्य करना मुश्किल होता है। एक दिन इन्होंने केले को पकाने के लिए इथेफोन की कुछ बूंदें केले के मुख्य पर्णवृंत पर डाल दी और ये बूंदें केलों को पकाने के लिए पर्याप्त थीं। तब इन्होंने इस प्रक्रिया को आम के मामले में भी अपनाने की सोची। विभिन्न तरीकों एवं मात्रा को आजमाने के बाद अंततः इन्होंने माचिस की तीली से इथेफोन की थोड़ी सी मात्रा को आम फल के ताजा पर्णवृंत पर लगाया। इसके बाद इन्होंने आम के फलों को टोकरी में रखकर उसे जूट की बोरियों और अखबार से अच्छी तरह से लपेट दिया। इन आमों को 4–6 दिन तक इसी अवस्था में रहने दिया और इनकी युक्ति सफल रही। निसन्देह सही दिनों की संख्या तक पहुंचने और इस तकनीक को कामयाब बनाने में कई बार परीक्षण करने पड़े। कार्बेट अथवा गर्म जल इथेफॉन में डुबोने की तुलना में यह प्रक्रिया कहीं अधिक प्रभावी थी तथा साथ ही लागत में भी उल्लेखनीय कमी आई। पूरी प्रक्रिया के लिए केवल 600/– रुपये मूल्य का 400 मिलि. इथ्रेल पर्याप्त पाया गया। इस तकनीक से पर्यावरण, आय तथा निवेश की लागत में सुधार हुआ। अब पड़ोसी क्षेत्र के लगभग सभी किसान आम के फलों को पकाने के लिए इस तकनीक का प्रयोग कर रहे हैं।

• लीची के फूलों तथा फलों पर स्थापन तथा परिपक्वन दोनों स्थितियों में गर्म "पछुआ" हवा का प्रभाव कम करने के लिए श्री सुधांशु कुमार को लीची फलोद्यान के लिए कूलर के रूप में स्प्रिंक्लर का उपयोग करने के लिए नवम्बर, 2010 में सुत्तूर, मैसूर में आयोजित राष्ट्रीय फार्म नव–प्रवर्तक बैठक 2010 में प्रशंसा प्रमाण–पत्र मिल चुका है। इनके पास 15 एकड़ के लीची फलोद्यान में 1100 लीची वृक्ष और प्रत्येक वृक्ष के नीचे तीन फीट की ऊंचाई पर ग्यारह सौ सूक्ष्म स्प्रिंक्लर हैं। यह प्रणाली एक बहुत विशाल कूलर के रूप में कार्य करती है। इस प्रणाली का प्रयोग करने से श्री सुधांशु कुमार को वर्ष 2012 में इनके पहली बार इस्तेमाल करने पर 15 एकड़ से रुपये 6 लाख की शुद्ध आय अर्जित हुई। श्री सुधांशु कुमार को अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं जिनमें आम में नवोन्मेषी कृषि के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का वर्ष 2009 का जगजीवन राम किसान पुरस्कार भी शामिल है।

श्री गनपतराव अप्पासाहेब पाटिल

पिता का नाम	श्री अप्पासाहेब अलीयास एस.आर. पाटिल
आयु	68 वर्ष
शिक्षा	स्नातक (बी.ए.)
कृषि भूमि	117 एकड़
मुख्य फसलें	शिमला मिर्च, अंगूर, गुलाब और जरबेरा

पता

गांव	:	अजिंक्यतारा कॉ–ऑपरेटिव हाउसिंग सोसायटी जयसिंगपुर
तालुका	:	शिरोल
जिला	:	कोल्हापुर–416101, महाराष्ट्र
मोबाइल	:	09422582220, 09822582220
ई–मेल	:	klp_srivardh@sancharnet.in

उपलब्धियां

• श्री गनपतराव अप्पासाहेब पाटिल, महाराष्ट्र में जिला कोल्हापुर के मूलतः एक बागवानी किसान हैं जो कि अपनी 60 एकड़ जमीन पर उच्च तकनीकी (हाईटेक) ग्रीनहाउस तकनीक का उपयोग कर रहे हैं और डच गुलाब एवं जरबेरा की किस्मों की खेती के लिए कोको पीट एवं मिट्टी के गमलों का उपयोग कर रहे हैं।

• इन्होंने प्रति एकड़ 24 टन अंगूर का उत्पादन किया जो कि भारत में सबसे ज्यादा है। साथ ही इन्होंने प्रति एकड़ 65 टन रंगीन शिमलामिर्च का उत्पादन भी किया जो कि भारत में सर्वाधिक उत्पादन का एक रिकार्ड है। श्री पाटिल अपने फार्म पर विभिन्न राज्यों से आने वाले किसानों, सरकारी अधिकारियों, कृषि संस्थानों एवं कृषि विश्वविद्यालयों के वैज्ञानिकों और विदेशों से आने वाले आगन्तुकों को उच्च तकनीक कृषि रीति के बारे में जानकारी एवं मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

• वर्तमान में श्री पाटिल द्वारा जापान, इटली और यूनान के बाजारों में गुलाब का निर्यात किया जा रहा है। वर्ष 2006–07 में भारत में सबसे बड़े गुलाब निर्यातक के रूप में श्री पाटिल को "मीडिया टुडे ग्रुप, दिल्ली" से पुरस्कार मिल चुका है। श्री पाटिल छोटी कृषि जोत वाले किसानों को भी फ्लोरा पार्क की अवधारणा में शामिल होने के लिए प्रोत्साहित करते हैं ताकि उन्हें भी श्रीवर्धन बायोटेक से अनुभव, प्रौद्योगिकी और विपणन संबंधी सहयोग का लाभ मिल सके जिससे क्षेत्र में सामंजस्य पैदा करते हुए एक अपनी तरह की क्रान्ति की शुरूआत की जा सके।

• श्री अप्पासाहेब एस.आर. पाटिल और उनके पुत्र श्री गनपतराव पाटिल दोनों की एक "पिता व पुत्र" की एक उत्कृष्ट टीम है जिसका कि "नवोन्मेषी बागवानी", सहकारिता आन्दोलन एवं सार्वजनिक सेवा" के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए राज्य में बहुत आदर व सम्मान है। अप्पासाहेब देश में सर्वाधिक सफल सहकारी चीनी फैक्टरी के संस्थापक अध्यक्ष रहे हैं और इन्हें पिछले 30 वर्षों से चुना जा रहा है।

• आज श्रीवर्धन बायोटेक एवं इसके भागीदारों के पास निजी क्षमता में 23.40 हेक्टेयर (2.34,000 वर्ग मीटर) क्षेत्रफल है जिसमें गुलाब, जरबेरा, कार्नेशन, शिमला मिर्च, आर्किड एवं गुलदाउदी की खेती की जाती है। यह भारत की सबसे बड़ी परियोजना है जिसमें बढ़वार मीडियम के तौर पर कोको पीट का उपयोग किया जाता है और इसमें कम्प्यूटर द्वारा संचालित पोषण प्रणाली को अपनाया जाता है। अब इनके द्वारा कर्तित फूलों और सब्जियों की खेती को 10 हेक्टेयर के क्षेत्र में विस्तारित किया जा रहा है।

• इनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली द्वारा श्री गनपतराव अप्पासाहेब पाटिल को प्रगतिशील किसान पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

• श्री पाटिल अनेक संगठनों जैसे कि श्री दत्ता सोयाबीन प्रोसेसिंग कॉपरेटिव सोसायटी लि.; जम्भाली शिक्षण प्रसारक मण्डल; श्री विरशैव कॉपरेटिव बैक लि., कोल्हापुर; महाराष्ट्र राज्य दरक्षा उत्पादक संघ, पुणे; जयसिंगपुर उडगांव सहकारी बैंक लि.; श्री दत्ता शेतकारी सहकारी सखार कारखाना लि., शिरोल; यशवंतराव चव्हाण प्रतिष्ठान; कारद श्रीवर्धन बायोटेक, कोंडीग्रे एवं श्रीवर्धन बायोटेक प्रा. लि., कोंडीग्रे का प्रतिनिधित्व करते हैं। इन्होंने कैलिफोर्निया, इस्रायल तथा हालैण्ड का दौरा किया है और अनेक पुरस्कार व सम्मान भी हासिल किए हैं।

श्रीमती आशा शेषाद्रि

पति का नाम	कन्नांगी शेषाद्रि
आयु	58 वर्ष
शिक्षा	स्नातकोत्तर (समाज विज्ञान)
कृषि भूमि	68 एकड़
मुख्य फसलें	केला, रोपण फसलें (सुपारी, रबर, कॉफी, वनिला, मिर्च, जायफल), फूल (एन्थुरियम, आर्किड्स, हेलिकोनिया, बर्ड ऑफ पेराडाइज) तथा वनस्पति (जैंडो, कार्डिनल ब्लैक, मंजरी, एस्पैरेगस, सॉग ऑफ इंडिया, सॉग ऑफ जमैका)

पता

गांव व	:	कन्नांगी
पोस्ट	:	कन्नांगी
तालुका	:	तीर्थाहल्ली
जिला	:	शिमोगा – 577 226, कर्नाटक
टेलिफोन	:	08181 241824
मोबाइल	:	9448093033
ई–मेल	:	kssheshadri@gmail.com

उपलब्धियां

• श्रीमती एच.सी. आशा शेषाद्रि फूलों के साथ–साथ उच्च मूल्य वाली फसलों की खेती करती हैं। श्रीमती शेषाद्रि कर्नाटक के मलनाड क्षेत्र में एन्थुरियम और आर्किड्स की खेती के लिए पॉलीहाउस तकनीक का उपयोग करने में अग्रणी हैं। इन्होंने अपने क्षेत्र में रबड़ तथा वनीला की खेती प्रारंभ की और उच्चतर उत्पादन दर्ज किया। इन्होंने घरेलू तथा अंतरराष्ट्रीय बाजार दोनों के लिए फूलों की पैकिंग एवं विपणन के लिए वैज्ञानिक विधि (डच प्रणाली) को अपनाया। श्रीमती आशा ने उच्च उत्पादकता और गुणवत्ता के लिए बेल्जियम, हालैण्ड और थाईलैण्ड से आयातित पौधा प्रजातियों को चुना और उनका पौध रोपण किया।

• इन्होंने भूजल का पुनर्भरण करने के लिए वर्षा जल संचयन संरचना तथा जल के निर्बाध बहाव को रोकने के लिए रबड़ के पौध रोपण में सीढ़ीदार खेती करने जैसी जल बचत की रीतियों को अपनाया। इन्होंने ग्रीनहाउस की छत से वर्षा जल को संकलित और भण्डारित करने के लिए 4 लाख लीटर भण्डारण क्षमता का एक टैंक का निर्माण कर जल का पुनर्चक्रण सिंचाई प्रयोजनों के लिए किया। सुपारी पौध रोपण में यूडीआई (मिट्टी की मेड बनाने का एक पारम्परिक तरीका) का गठन किया गया।

• अच्छी डिजाइन वाले 'डाइजेस्टर' से तैयार किए गए जैविक उत्पादन के साथ इन्होंने आहार संयंत्र स्थापित किया और इस प्रकार मृदा के उर्वरता और उत्पादकता स्तर को सुधारा। मृदा कटाव रोकने के लिए इन्होंने मृदा को फलीदार फसल से ढ़कने की रीति अपनाई और उच्चतर संसाधन उपयोग प्रभावशीलता के लिए तथा मजदूरी की लागत कम करने के लिए फर्टिगेशन के रूप में प्रचलित आधुनिक सिंचाई प्रणाली का उपयोग कर पौधों को पोषित किया। परागण स्तर को सुधारने के लिए मधुमक्खी पालन के साथ एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाया और इससे इनके खेत की उत्पादकता बढ़ी। इन्होंने डेयरी इकाई की स्थापना भी की है और डेयरी से निकलने वाले घूरे की खाद तथा वर्मी कम्पोस्ट का उपयोग जैविक खेती के लिए किया जाता है।

• इनके खेत में उगाई गई सुपारी, रबड़, वनीला, मिर्च, कोको तथा कॉफी को प्रसंस्कृत कर उनमें मूल्य वर्धन किया जाता है जिससे इन्हें कहीं ज्यादा आय और शुद्ध लाभ मिलता है। श्रीमती शेषाद्रि को अनेक पुरस्कार/मान्यता प्रमाण–पत्र मिल चुके हैं जिनमें कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, बंगलुरू का डॉ. एम.एच. मैरीगौडा सर्वश्रेष्ठ बागवानी किसान पुरस्कार तथा ASPEE एल.एम. पटेल, कृषि अनुसंधान एवं विकास फाउंडेशन, मुम्बई का सर्वश्रेष्ठ महिला किसान पुरस्कार शामिल है।

पिता का नाम	श्री शिवय्या	पता
आयु	48 वर्ष	गांव : कोडीमन्चेनाहल्ली
शिक्षा	एस.एस.एल.सी.	जिला : देवाराहल्ली–562 110 कर्नाटक
कृषि भूमि	6 एकड़	मोबाइल : 9980751569
मुख्य फसलें	औषधीय एवं सगंधीय फसलें	

उपलब्धियां

- श्रीमती मालम्मा किसान समुदाय से संबंध रखती हैं और औषधीय एवं सगंधीय फसलों के उत्पादन एवं उनके मूल्य वर्धन कर कृषि के माध्यम से अपनी आजीविका चलाती हैं।
- श्रीमती मालम्मा सीआईएमएपी, बंगलुरू के तकनीकी मार्गदर्शन और प्रोत्साहन से मूल्य वर्धन के रूप में अपना व्यवसाय बदलने में समर्थ हुईं। प्रारंभ में इन्होंने रुपये 50,000 के छोटे निवेश के साथ सिट्रोनेला एवं दवाना से तेल निकालकर अपना व्यवसाय प्रारंभ किया।
- सीआईएमएपी द्वारा तीन वर्ष तक दिए गए तकनीकी मार्गदर्शन के बाद इन्होंने अपनी उद्यमशीलता का विस्तार किया और अपनी गतिविधियों का विविधीकरण करके दवाना से कच्चा सगंधीय तेल निकालना, जून के महीने में सिट्रोनेला तेल की सर्वश्रेष्ठ गुणवत्ता हासिल करना और वर्ष के बाकी महीनों में सिट्रोनेला व लेमन ग्रास की खेती करना शामिल किया।
- पूरे वर्ष तेल निकालकर उसकी आपूर्ति अथवा बिक्री निजी कम्पनियों को की जाती है। यहां तक कि अपनी व्यावसायिक यात्रा में इन्हें वित्त, ऋण सुविधा, मजदूरी और स्थानीय लोगों पर निर्भरता, बाजार से जुड़ी समस्याओं का भी सामना करना पड़ा लेकिन अपने सतत प्रयासों के कारण आज श्री मालम्मा प्रति वर्ष 8 लाख रुपये की आय अर्जित कर रहीं हैं और इनका कुल निवेश 20 लाख रुपये हो गया है।
- श्रीमती मालम्मा औषधीय एवं सगंधीय पौधों के बीजों और रोपण सामग्री की आपूर्ति पड़ोसी किसानों को कर उन्हें इसकी खेती अपनाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं और साथ ही अपने तेल निष्कर्षण व्यवसाय में कच्ची सामग्री के रूप में उन्हें अपने उत्पाद देने के लिए भी प्रोत्साहित करती हैं।

श्री अरविन्द प्रभाकर अमृते

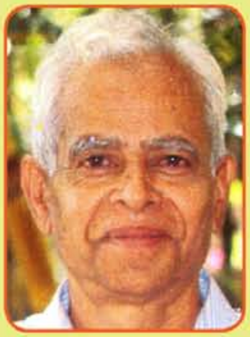

पिता का नाम	श्री प्रभाकर विनायक अमृते
आयु	71 वर्ष
शिक्षा	स्नातक (बी.कॉम, एल.एल.बी.)
कृषि भूमि	22 एकड़
मुख्य फसलें	आम, काजू, कटहल, सुपारी, नारियल, अनानास व केला जैसी, बागवानी फसलें, काली मिर्च, जायफल जैसे मसाले

पता		
गांव	:	गवहे
तालुका	:	दपोली
जिला	:	रत्नागिरी–415712, महाराष्ट्र
टेलिफोन	:	02358–282315
मोबाइल	:	09422443740 9869937609
ई–मेल	:	ashikarosery@gmail.com

उपलब्धियां

- श्री अरविन्द प्रभाकर अमृते पौधा प्रवर्धन तकनीकों तथा नर्सरी/फलोद्यान प्रबंधन रीतियों को विकसित करने में शामिल रहे हैं। इनकी नर्सरी एवं खेत की भूमि असमतल है लेकिन तटवर्ती वर्षा वन स्थान तथा बागवानी व जलसंभर हस्तक्षेपों के कारण इसकी ऊपरी सतह हरियाली वाली है।
- पौधा नर्सरी में अनेक फलदार पौधों की प्रजातियों, औषधीय पौधों तथा अन्य घर में लगने वाले तथा सजावटी पौधों का उत्पादन किया जाता है। 34 वर्ष पुरानी नर्सरी में प्रमाणित मातृ पौध रोपण की बड़ी संख्या मौजूद हैं जिसमें समुचित एवं वैज्ञानिक प्रवर्धन तकनीकों का उपयोग करके गुणवत्ता रोपण सामग्री हासिल की जा रही है एवं बहु–गुणनीकरण किया जा रहा है। इनकी नर्सरी देशभर के वैज्ञानिकों, नर्सरी उत्पादकों, किसानों, बागवानों तथा भूदृश्य पेशेवरों को आकर्षित करती है।
- श्री अरविन्द अमृते द्वारा विभिन्न वर्गों के प्रतिभागियों के लिए विभिन्न विषयों पर अल्पावधि आवासीय प्रशिक्षण कार्यशालाओं का आयोजन किया गया जिनमें शामिल हैं:– किसानों के लिए पौधा प्रवर्धन, कलमबंधन तकनीकें एवं नर्सरी प्रबंधन; किसानों के लिए प्रकृति अनुकूल खेती एवं फलोद्यान प्रबंधन रीतियां; वनस्पति विज्ञान, कृषि तथा पारिस्थितिकी विज्ञान के छात्रों के लिए जैव–विविधता की खोज करना और समझना; शहर की भीड़ और विशेषकर बच्चों के लिए मूलभूत गार्डेनिंग तथा प्रकृति को समझना; तथा स्वः स्थाने अंगूर कलमबंधन तकनीक के लिए विशेष प्रशिक्षण।
- श्री अरविन्द अमृते ने महाराष्ट्र और अब कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश, गुजरात तथा राजस्थान सहित अन्य राज्यों में अंगूर की कलमबंधन (ग्राफ्टिंग) में योगदान किया है। अंगूर के ऐसे पुराने फलोद्यान जिनमें कम होती उत्पादकता के साथ–साथ गुणवत्ता में भी कमी आ रही थी, वहां यह क्रान्तिकारी तकनीक अंगूर उत्पादकों के लिए एक वरदान साबित हुई। श्री अरविन्द अमृते द्वारा प्रारंभ की गई गतिविधियों से गवहे तथा आसपास के गांवों में अनेक नर्सरी विकसित हुई हैं जिससे दपोली क्षेत्र "नर्सरी तहसील" के रूप में लोकप्रिय हो रहा है। इसका असर लोगों के जीवन में उनकी जीवनचर्या और आर्थिक स्तर में आए बदलावों से महसूस किया जा सकता है।
- श्री अरविन्द अमृते द्वारा सोनचम्पका (मिशेलिया चम्पका) में वेज (मुलायम लकड़ी) कलमबंधन तकनीक का मानकीकरण करवाया गया है।

सरदार देविन्दर सिंह

पिता का नाम	सरदार सुखदेव सिंह
आयु	46 वर्ष
शिक्षा	हायर सेकेण्डरी (10+2)
कृषि भूमि	10 एकड़ निजी, 10 एकड़ लीज पर
मुख्य फसलें	टमाटर, शिमला मिर्च (हरी), मिर्च, खीरा, आलू, करेला एवं लौकी

पता		
गांव व डाकघर	:	मुश्काबाद
तहसील	:	समराला
जिला	:	लुधियाना–141 114, पंजाब
मोबाइल	:	09876835433
ई–मेल	:	qvpindia@yahoo.com
वेबसाइट	:	www.qualityvegproduce.com

उपलब्धियां

• सरदार देविन्दर सिंह वर्ष 1996 से एक प्रगतिशील सब्जी उत्पादक हैं। इन्होंने अपनी 0.75 एकड़ जमीन पर मिर्च की संकर किस्म (सीएच–1) की खेती करके 50,000/– रुपये का लाभ अर्जित किया जिससे इन्हें सब्जी की खेती के तहत अपने कृषि क्षेत्र को और अधिक बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन मिला। अब श्री सिंह टमाटर, खीरा, मिर्च, शिमला मिर्च, करेला, लौकी और आलू की खेती कर रहे हैं। बेहतर गुणवत्ता और सब्जियों की अधिक पैदावार हासिल करने के लिए इन्होंने बांस की डण्डियों पर खीरा, टमाटर, शिमला मिर्च, करेला तथा लौकी जैसी सब्जियों की खेती करने के लिए स्थाई फ्रेमवर्क (ढ़ांचा) स्थापित किया है।

• श्री सिंह प्लग ट्रे में सब्जियों की नर्सरी तैयार करके उसका रोपण अपने फार्म में स्थित कम ऊंचाई वाली सुरंग तथा पॉलीहाउस में करते हैं। इन्होंने राष्ट्रीय बागवानी मिशन तथा राष्ट्रीय कृषि विकास योजना की सहायता से नर्सरी घर (400 वर्गमीटर) के साथ साढ़े पांच एकड़ क्षेत्र में पांच पॉलीहाउस बनाए हैं। श्री सिंह रंगीन शिमला मिर्च और टमाटर जैसी सब्जियों की खेती पॉलीहाउस में करके उसे भारती वॉलमार्ट, सरहिन्द में बेचते हैं। इन्होंने अपने खेत में पानी की बचत के लिए ड्रिप एवं स्प्रिंक्लर सिंचाई की सुविधा स्थापित की है तथा साथ ही वर्षा जल के पुनर्भरण का भी प्रबंध किया है।

• श्री सिंह नियमित तौर पर कृषि विज्ञान केन्द्र, समराला तथा पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना का दौरा करते हैं और वहां कार्यरत विशेषज्ञों के साथ अपने अनुभव सांझा करते हैं। श्री सिंह ने नवीन तकनीकों के बारे में जानकारी हासिल करने और सब्जी उत्पादन के क्षेत्र में बाजार सम्पर्क की तलाश करने के उद्देश्य से इटली, स्पेन, जर्मनी तथा इंग्लैंड का दौरा भी किया है। श्री सिंह द्वारा ''मुश्काबाद एग्रो हेल्प ऐड सोसायटी'' के नाम से एक संस्था पंजीकृत कराई है और इनका आशय ''क्वालिटी वेजिटेबल प्रोड्यूस'' के व्यापारिक नाम से अंतर–राष्ट्रीय बाजारों में सब्जियों का निर्यात प्रारंभ करने का है।

• सरदार देविन्दर सिंह को अनेक सम्मान एवं पुरस्कार मिल चुके हैं जिनमें प्रगतिशील सब्जी खेती के लिए पंजाब कृषि विश्वविद्यालय द्वारा दिया गया सरदार उजागर सिंह धालीवाल स्मारक पुरस्कार और, पूसा कृषि विज्ञान मेला में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा प्रगतिशील किसान पुरस्कार भी शामिल है। इसके अलावा, बागवानी (सब्जी) में नवोन्मेषी किसान के लिए मुख्य मंत्री पुरस्कार तथा मेहराम प्रकाशन, नाभा, पटियाला द्वारा ''पंजाब का प्रगतिशील किसान'' पुरस्कार भी इनके पुरस्कारों की सूची में शामिल है।

सरदार मेहरबान सिंह

पिता का नाम	श्री शीतल सिंह
आयु	40 वर्ष
शिक्षा	हायर सेकेण्डरी
कृषि भूमि	15 एकड़ (12 एकड़–निजी, 3 एकड़–लीज पर)
मुख्य फसलें	मिर्च, शिमला मिर्च, करेला, खीरा, टमाटर, घीया, तरबूज

पता

गांव	:	सहोली
पोस्ट	:	भदसन
ब्लॉक	:	नाभा
जिला	:	पटियाला, पंजाब
टेलिफोन	:	07165–285042
मोबाइल	:	9876715042
ई–मेल	:	qvpindia@yahoo.com

उपलब्धियां

• सरदार मेहरबान सिंह ने बेमौसमी (अगेती अथवा पछेती) सब्जियों की खेती को बाजार में अधिक लाभ हेतु अपनाया। श्री सिंह द्वारा टमाटर, मिर्च, शिमला मिर्च, खीरा, करेला तथा लौकी आदि की खेती की जाती है। बेमौसमी फसलों को उगाने के लिए श्री सिंह पॉलीहाउस का तथा नर्सरी को उगाने के लिए नेटहाउस का उपयोग करते हैं। फसलों को तापमान की अधिकता (ताप एवं पाला) से बचाने के लिए ड्रिप (टपक) सिंचाई के साथ–साथ स्प्रिंक्लर (फव्वारा) का उपयोग भी किया जाता है। पॉलीहाउस तथा नेटहाउस दोनों की डिजाइन श्री सिंह द्वारा स्वयं तैयार की गई है। पॉलीहाउस को सूत्रकृमियों से मुक्त रखने के लिए मृदा सौरीकरण किया जाता है। इन्होंने मृदारहित नर्सरी विकसित की है। इन्होंने पूरी की पूरी नर्सरी को पॉलीहाउस में ट्रे में उगाते है। खेती के लिए श्री सिंह द्वारा कॉकपिट और वर्मी कम्पोस्ट का संतुलित मिश्रण उपयोग किया जाता है।

• इनके द्वारा प्रयुक्त ड्रिप सिंचाई द्वारा जल प्लवन सिंचाई प्रणाली की तुलना में 70 प्रतिशत तक पानी की बचत होती है, सिंचाई प्रभावशीलता में सुधार होता है तथा साथ ही उर्वरकों के अत्यधिक उपयोग से बचा जा सकता है, अन्ततः खेती की लागत कम होती है। इनके द्वारा फसल अपशिष्ट का भी न्यायोचित उपयोग किया जाता है। श्री सिंह द्वारा फसल उपरान्त टमाटर के पौधों का इस्तेमाल करेले की बेल को चढ़ाने के लिए किया जाता है। इससे मिट्टी तथा पानी के सम्पर्क में आने से फलों को बचाया जाता है।

• श्री सिंह ने एक पुनर्भरण कुंए की डिजाइन भी तैयार की है। 35 फीट गहराई तथा 3 फीट चौड़ा एक कुंआ बनाया गया है जिसमें 4 इंच व्यास वाले प्लास्टिक के तीन पाइप लगाए गए हैं। एक पाइप में 5 फीट की ऊंचाई पर तथा दूसरे पाइप में 10 फीट की ऊंचाई पर छिद्र किये गए हैं। जड़ सड़न तथा अन्य मृदाजनित रोगों से बचने के लिए इन्होंने रोपाई से पहले 30 मिनट के लिए रिडोमिल @ 2 ग्राम/लिटर के साथ पौधे की जड़ों को उपचारित करने के लिए अपनी एक विधि विकसित की है।

• अन्य सब्जी उत्पादकों के साथ श्री सिंह ने "इनोवेटिव फार्मर्स ग्रुप" नाम से स्वः सहायता समूह पंजीकृत कराया है। इस समूह के सभी सदस्यों के पास ड्रिप एवं स्प्रिंक्लर सिंचाई के अंतर्गत 80 प्रतिशत क्षेत्र है। समूह के सदस्य आपस में एक–दूसरे को मंडी भाव तथा बाजार का रुझान तथा अन्य जानकारी सांझा करते हैं। समूह का एक सदस्य किसान बाजार में उत्पादों की बिक्री करता है जिससे समय और संसाधनों दोनों की बचत होती है। वर्तमान में समूह में कुल 30 सदस्य हैं। श्री सिंह के प्रयासों को विभिन्न मंचों से सराहा गया है और पुरस्कृत किया गया है।

श्री कंवल सिंह चौहान

पिता का नाम	श्री अभय राम चौहान
आयु	48 वर्ष
शिक्षा	स्नातकोत्तर (एम ए समाज विज्ञान, एल एल बी)
कृषि भूमि	4 एकड़ (निजी), 10 एकड़ (पट्टे पर)
मुख्य फसल	धान, गेहूं, सब्जियां, मशरूम, बेबीकॉर्न व मक्का (स्वीट्कॉर्न)

पता		
गांव	:	अटेरना
पोस्ट	:	अटेरना
जिला	:	सोनीपत–131023, हरियाणा
टेलीफोन	:	0130.2110570, 011.20014369
मोबाइल	:	09416314843

उपलब्धियां

- श्री कंवल सिंह चौहान, हरियाणा राज्य के एक सफल बेबीकॉर्न उत्पादक हैं। अपने गांव में बेबीकॉर्न की खेती करने वाले श्री चौहान पहले व्यक्ति हैं और अब इनके अटेरना गांव को बेबीकॉर्न गांव के नाम से जाना जाता है।
- श्री चौहान इसके साथ ही भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित चावल की किस्मों (पूसा 1121 एवं पीआरएच 10) तथा गेहूं की उन्नत किस्मों की खेती करते हैं।
- श्री चौहान ने टमाटर, खीरावर्गीय सब्जियों, ब्रोकोली तथा धनिया जैसी शाकीय फसलों की खेती करके तथा मशरूम के उत्पादन, मधुमक्खी पालन एवं वर्मी कम्पोस्टिंग आदि जैसे सम्बद्ध उद्यमों को अपनाकर अपनी कृषि प्रणाली को विविधीकृत रूप प्रदान किया है।
- श्री चौहान, चावल तथा शाकीय फसलों के गुणवत्ता बीज उत्पादन में भी जुटे हुए हैं। अपने गांव में मशरूम तथा बेबीकॉर्न की खेती की पहल करने का श्रेय श्री चौहान को जाता है।
- श्री चौहान ने बेबीकार्न में मूल्य वर्धन के लिए एक इकाई भी स्थापित की है जिसमें वे अपने तथा साथी किसानों के उत्पादों का प्रसंस्करण करते हैं तथा उसे राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर बेचते हैं। इनकी इस इकाई में 50 से ज्यादा लोगों को रोजगार मिला हुआ है।
- इन्होंने अपने गांव में ''गुलाब फल–सब्जी उत्पादन एवं वितरण कॉपरेटिव सोसायटी' के नाम से एक सहकारी समिति की स्थापना की है।
- इन्होंने कृषि में हुई प्रगति को देखने के लिए इस्राइल तथा मोजाम्बिक गणराज्य का दौरा किया। भारत तथा विदेशों से अनेक गणमान्य अतिथि इनके खेत का दौरा कर चुके हैं।
- श्री कंवल सिंह चौहान को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका हैं जिनमें वर्ष 2011 में विविधीकृत कृषि के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का एन.जी. रंगा पुरस्कार प्रमुख है। श्री चौहान को जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर अनेक बार प्रगतिशील किसान पुरस्कार मिल चुके हैं। इन्हें भा.कृ.अ.सं. के फैलो अवार्ड से नवाजा जा चुका है।

श्री विनोद कुमार

पिता का नाम	मदनलाल
आयु	41 वर्ष
शिक्षा	हयर सेकंड्री
कृषि भूमि	4 एकड़
मुख्य फसल	टमाटर, मिर्च, बैंगन व खीरा

पता		
गांव	:	करालियां, ब्लॉक– विजयपुर, जम्मू व कश्मीर
जिला	:	जम्मू व कश्मीर
मोबाइल	:	09419871108

उपलब्धियां

- श्री विनोद कुमार, जम्मू जिले के एक सफल सब्जी उत्पादक हैं। इन्होंने टमाटर, मिर्च, बैंगन तथा खीरावर्गीय फसलों जैसी शाकीय फसलों की उन्नत एवं संकर किस्मों की नर्सरी तैयार करने के लिए पॉलीहाउस तकनीकों को अपनाया है।

- वैज्ञानिक कृषि रीतियों को अपनाकर और बेमौसमी सब्जियों की सीधी मार्केटिंग को अपनाकर श्री विनोद कुमार वर्ष 2006 में अपनी 2.5 एकड़ जमीन से 1.5 लाख रूपये की आमदनी हासिल करने में सफल रहे। इन्होंने बाद में अपनी जमीन 4 एकड़ तक बढ़ा ली और उससे वर्ष 2007 में 3.5 लाख रूपये का शुद्ध लाभ प्राप्त किया।

- श्री विनोद कुमार ने कृषि विज्ञान केन्द्र, जम्मू से बेमौसमी सब्जियों की खेती तथा सब्जियों की बेमौसमी नर्सरी तैयार करने का प्रशिक्षण प्राप्त किया। इन्होंने कृषि विभाग से मधुमक्खी पालन पर भी प्रशिक्षण प्राप्त किया। ग्रीष्म काल में निचले पर्वतीय क्षेत्रों जैसे– कटरा, उधमपुर, चेनैनी आदि में फूल के पराग कणों के लिए स्थानांतरित करते हैं और प्रत्येक छत्ते अधिक शहद प्राप्त करते हैं। शहद को सड़के किनारे बैठकर पर्यटकों को ऊचें दामों पर बेचते हैं।

- श्री विनोद कुमार वर्ष 2005 से टमाटर, मिर्च, बैंगन व खीरावर्गीय सब्जियों की नर्सरी तैयार करने के लिए पॉलीहाउस विधि का उपयोग कर रहे हैं। वर्ष 2006 में इन्होंने संकर किस्मों वाली सब्जियों की खेती में शेरे ए कश्मीर कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, जम्मू द्वारा सुझाई गई वैज्ञानिक कृषि रीतियों का पालन कर अपनी 2.5 एकड़ जमीन में पूर्णतया आधुनिक रीतियों का प्रयोग शुरू करके लाभ अर्जित किया।

- क्षेत्र के अन्य किसानों की तुलना में श्री विनोद कुमार अपनी सब्जियों को सीजन प्रारंभ होने से पहले ही बाजार में भेजकर अच्छा लाभ कमाते हैं। ये मधुमक्खी पालन से भी उच्च लाभ अर्जित कर रहे हैं।

- इनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों को मान्यता प्रदान करते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा इन्हें कृषि विज्ञान मेला, 2008 में प्रगतिशील किसान पुरस्कार प्रदान किया गया।

श्री कुलभूषण खजुरिया

पिता का नाम	श्री कृष्ण दत्त	**पता**
आयु	61 वर्ष	गांव : सोहनजना
शिक्षा	स्नातक	पोस्ट : जम्मू, जम्मू व कश्मीर जिला : जम्मू, जम्मू व कश्मीर
कृषि भूमि	14 एकड़	मोबाइल : 01923.228150, 09906142662
मुख्य फसल	बेमौसमी खीरा, घिया, चप्पन कद्दू, ब्रोकोली, बेबी कॉर्न, स्ट्राबेरी, अजवाइन, लेटयूस, पार्सले एवं जट्रोफा पौधे	

उपलब्धियां

• श्री कुलभूषण खजुरिया द्वारा देसी सब्जियों की खेती और जैविक कृषि का बढ़–चढ़कर अनुपालन किया जा रहा है। इन्होंने पॉलीहाउस में बेमौसमी खीरा, घिया तथा चप्पनकद्दू, ब्रोकोली एवं बेबीकॉर्न की खेती सफलतापूर्वक की है। इन्होंने अपने क्षेत्र में पहली बार स्ट्राबेरी की खेती की। श्री खजुरिया ने जट्रोफा के 2.2 लाख पौधे उगाए और उनकी आपूर्ति कमांड क्षेत्र विकास विभाग को की। इनके द्वारा जैव उर्वरक एवं जैविक कीट नियंत्रण का अनुप्रयोग कर जैविक खेती को भी बढ़ावा दिया जाता है। इन्होंने अपने क्षेत्र में आलू का वास्तविक बीज उत्पादन प्रारंभ किया।

• श्री खजुरिया मिलिट्री डेयरी फार्म, सतवारी में बरसीम की नियमित आपूर्ति करते हैं जिससे 7 व्यक्तियों को नियमित रोजगार मिलता है। श्री खजुरिया ने जम्मू के अग्रणी होटलों को बेबीकॉर्न एवं अन्य देसी सब्जियों यथा ब्रोकोली, पार्सले लेटयूस आदि की आपूर्ति की। इसके साथ ही इन्होंने अनाज, मोटे अनाज एवं ताजा सब्जियों जैसे अन्य कृषि उत्पादों को जम्मू के बाजार में बेचा। श्री खजुरिया एक लाभप्रद डेयरी फार्म चला रहे हैं और डेयरी से निकलने वाले अपशिष्ट खाद एवं केचुओं की मदद से वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन कर रहे हैं प्रतिवर्ष 5000 क्विंटल क्षमता वाली ये जम्मू जिले में सबसे बड़ी वर्मीकम्पोस्टिंग इकाई है। श्री खजुरिया नवीनतम तकनीकों का इस्तेमाल कर विभिन्न फसलों के साथ–साथ नई फसलों की खेती कर रहे हैं। श्री खजुरिया ने सी.आई.पी.एम. से 14 सप्ताह का प्रशिक्षण हासिल किया और 30 अन्य किसानो को स्वयं प्रशिक्षण दिया। श्री खजुरिया "मानव कल्याण मिशन जम्मू व कश्मीर" नाम के एक गैर सरकारी संगठन के सक्रिय सदस्य, एक सामाजिक कार्यकर्ता तथा पंच (सदस्य, हलका पंचायत सोहनजना) हैं।

• श्री खजुरिया को विपणन समिति, सोहनजना की एमपीसीएस (प्राथमिक सहकारी समिति) के अध्यक्ष के रूप में श्री खजुरिया ने छः वर्ष तक कार्य किया। श्री खजुरिया द्वारा गेहूं में 28 क्विंटल प्रति एकड़, धान (370 किस्में) में 16 क्विंटल प्रति एकड़ की उपज हासिल करके अपना नाम बनाया। इन्होंने कुफरी, शिमला, हिमाचल प्रदेश से लाए गए आलू के परिशुद्ध बीजों की खेती प्रारंभ की। श्री खजुरिया बेमौसमी खेती के लिए पॉलीहाउस में सब्जियों की खेती करते हैं जो कि बाजार तथा मंडी के लिए हमेशा आकर्षण का केन्द्र बनी रहती हैं। श्री खजुरिया ने स्थानीय किसानों को फलदार फसलों की बडिंग और कलमबंधन पौधों का वितरण करने के लिए नर्सरी तैयार की।

• इनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों को मान्यता प्रदान करते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा इन्हें कृषि विज्ञान मेला, 2008 के अवसर पर प्रगतिशील किसान पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

मोहम्मद शबन वानी

पिता का नाम	श्री रेशी वानी
आयु	70 वर्ष
शिक्षा	निरक्षर
कृषि भूमि	1.75 एकड़
मुख्य फसलें	सेब, अखरोट, चावल, सरसों, मिर्च एवं सब्जियां

पता		
गांव	:	मिरहामा
जिला	:	कुलगाम – 19223, जम्मू व कश्मीर

उपलब्धियां

• मोहम्मद शबन वनी, कश्मीर घाटी के एक प्रगतिशील किसान हैं। इनके द्वारा नए सेब फलोद्यान में अन्तर फसल के रूप में अपनी 0.2 हेक्टेयर जमीन पर खरीफ के दौरान चावल (झेलम) तथा सरसों (गुल्चिन); मिर्च (0.2 हेक्टेयर); एवं दलहन (0.2 हेक्टेयर) की खेती की जा रही है।

• इन्होंने 0.4 हेक्टेयर जमीन पर सेब तथा 0.1 हेक्टेयर जमीन पर अखरोट के फलोद्यान स्थापित किए हैं। इन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, कुलगाम द्वारा सुझाई गईं उन्नत रीतियों यथा एकीकृत रोग एवं पोषक तत्व प्रबंधन, मृदा एवं पत्ती विश्लेषण, जैविक खाद का उपयोग, तथा कटाई छंटाई आदि को अपनाया है जिससे इन्हें पर्याप्त रूप से उत्पादन गुणवत्ता और लाभ में वृद्धि करने में मदद मिली।

• इन्होंने लघु स्तर पर अहाता कुक्कुट पालन और दूध एवं जैविक खाद के लिए पशु पालन प्रारंभ किया है। इनके द्वारा अपनाई गईं प्रौद्योगिकियों और इसके परिणामस्वरूप उपज एवं आय में बदलाव आया।

• कटाई छंटाई कौशल, पत्ती एवं मृदा नमूनों के आधार पर सेब में एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन, जड़ सड़न, कॉलर सड़न तथा कैंकर के विशेष संदर्भ में सेब का प्रबंधन अपनाने के कारण श्री वनी ने 6 टन/हेक्टेयर की अतिरिक्त उपज हासिल की (पहले 16.20 टन/हेक्टेयर तथा बाद में 22.22 टन/हेक्टेयर)।

• धान में एकीकृत रोग एवं पोषक तत्व प्रबंधन को अपनाने के कारण इन्हें 15 क्विंटल/हेक्टेयर उपज का अधिक लाभ हासिल हुआ (पहले 35.40 क्विंटल/हेक्टेयर और बाद में 49.15 क्विंटल/हेक्टेयर)।

• सेब के फलोद्यान में दलहनी फसलों को अन्तर फसल के रूप में शामिल करने से इन्होंने 9.3 क्विंटल/हेक्टेयर का अतिरिक्त लाभ अर्जित हुआ। समग्र इकाई से मिलने वाला अतिरिक्त शुद्ध लाभ लगभग एक लाख रुपये है।

श्री दयानदेव गनपत महाजन

पिता का नाम	श्री गनपत पी. महाजन
आयु	64 वर्ष
शिक्षा	स्नातक (बी.ए.)
कृषि भूमि	25 एकड़
मुख्य फसलें	केला

पता		
गांव	:	चिनावल
पोस्ट	:	चिनावल
तालुका	:	रावेर
जिला	:	जलगांव, महाराष्ट्र
टेलिफोन	:	02584–285246
मोबाइल	:	9422279338
ई–मेल	:	dnyandeogmahajan@gmail.com

उपलब्धियां

- श्री दयानदेव गनपत महाजन, महाराष्ट्र राज्य के एक प्रगतिशील केला उत्पादक हैं। इन्होंने रोपण सामग्री (चूसक) का चयन, प्राथमिक ऊतक संवधर्न (टिश्यू कल्चर) पौधों की सेकेण्डरी हार्डनिंग (लागत में बचत), भारी काली मिट्टी में अच्छी जल निकासी के लिए खाईयां, खेत के चारों ओर शेवारी, गजराज घास तथा ऊंची तुर से चारदीवारी और वर्षाकाल में पोषक तत्वों की पर्णीय फीडिंग जैसे नवोन्मेषी प्रौद्योगिकियों का अनुप्रयोग केले की खेती में किया।
- देसी सहयोग प्रणाली (प्रोसोपिस (बबूल) की Y आकृति की डण्डियां) का उपयोग करके भारी/चक्रवाती हवा वेग से केले के पौधों का बचाव किया गया। इन्होंने निर्यात प्रयोजन के लिए केला उत्पादन को बढ़ावा दिया और महाबनाना के माध्यम से केला उत्पादन के लिए किसानों को प्रोत्साहित किया।
- एनआरसीबी से प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त तथा बीआरएस, जलगांव के मार्गदर्शन में केला उत्पादकों के समक्ष ग्रेडिंग, पैकिंग तथा कटाई उपरांत रखरखाव की अवधारणा को प्रचलित किया गया है। श्री महाजन बीआरएस, वैज्ञानिकों तथा बागवानी विभाग के अधिकारियों के साथ मिलकर केला आश्वासन नीति फोरम के लिए किसान प्रतिनिधि के रूप में कार्य करते हैं।
- केले की खेती में उन्नत प्रौद्योगिकियों को अपनाने के कारण, श्री महाजन अपनी उपज में 20–25 प्रतिशत तक की वृद्धि करने और गुणवत्ता पाने में सफल हुए जिससे इनकी आमदनी बढ़ी। इसके परिणामस्वरूप इनका सामाजिक व आर्थिक उत्थान हुआ।
- इनके द्वारा विशेष बागवानी रेल की पहल करने और उसे चलाने के लिए किसान प्रतिनिधि और महाबनाना के अध्यक्ष के रूप में विशेष प्रयास किए गए। श्री महाजन सहकारी फल बिक्री समिति, चाइनावाल के संस्थापक अध्यक्ष के रूप में कार्य कर रहे हैं।
- बागवानी में उत्कृष्ट कार्य के लिए श्री महाजन को वर्ष 2003 में महाराष्ट्र सरकार द्वारा उद्यान पंडित पुरस्कार तथा केला निर्यात को बढ़ावा देने के लिए वसन्तराव नाइक पुरस्कार मिल चुके हैं। इसके अलावा श्री महाजन को माननीय डॉ. स्वामीनाथन एवं माननीय कृषि मंत्री भारत सरकार से सर्वश्रेष्ठ केला उत्पादक, ASPEE फाउंडेशन पुरस्कार तथा सामाजिक कार्यों के लिए कई सामाजिक पुरस्कार भी मिल चुके हैं।

श्री बलविन्दर सिंह टिक्का

पिता का नाम	सरदार नंद सिंह	
आयु	50 वर्ष	
शिक्षा	स्नातक (बी.एससी. मेडीकल)	
कृषि भूमि	150 एकड़	
मुख्य फसलें	कीन्नू, अंगूर, अमरूद, आलूबुखारा एवं अनार	

पता

गांव : अबूल खुराना
तहसील : मलौट
जिला : मुक्तसर, पंजाब
मोबाइल : 09815478653

उपलब्धियां

• जिला मुक्तसर में गांव अबूल खुराना के श्री बलविन्दर सिंह टिक्का एक बागवानी किसान हैं। इन्होंने वर्ष 1981 में 4 एकड़ जमीन पर कीन्नू तथा 1.5 एकड़ जमीन पर अंगूर की खेती कर एक फल उत्पादक के रूप में अपनी यात्रा प्रारंभ की थी। सफलता मिलने पर इन्होंने कीन्नू की खेती को 8 एकड़ क्षेत्रफल में बढ़ा लिया और बाद में रेत के टीलों पर 40 एकड़ क्षेत्र में इसे बढ़ा लिया। श्री टिक्का ऐसे पहले किसान थे जिन्होंने रेत के टीलों पर स्थापित कीन्नू के फलोद्यान में ड्रिप सिंचाई तकनीक को अपनाया।

• श्री टिक्का ने नवोन्मेषी कार्यों के अंतर्गत पौधे से पौधे के बीच फासले को कम किया तथा पौधों की संख्या को बढ़ाया। श्री टिक्का अपने इस प्रयास में अत्यंत सफल रहे और इस तकनीक ने उन्हें न केवल अपने क्षेत्र वरन् पूरे पंजाब राज्य में लोकप्रिय बना दिया। इन्होंने एक सफल गाथा का निर्माण किया और साथ ही अबोहर जिले में 500 एकड़ जमीन पर ड्रिप सिंचाई को अपनाने हेतु अन्य किसानों को भी जागरूक किया। वर्तमान में श्री टिक्का के पास कुल 150 एकड़ जमीन है जिसमें ऊंचे रेत के टीलों पर 110 एकड़ जमीन में फलोद्यान हैं। कीन्नू के अलावा, श्री टिक्का अंगूर, अमरूद, आलूबुखारा और अनार की खेती भी सफलतापूर्वक करते हैं।

• वर्ष 1994 में, जब पंजाब राज्य द्वारा ड्रिप सिंचाई योजना पर एक समझौता किया गया तब इन्होंने रेत के टीलों वाली बंजर जमीन खरीदने का निर्णय किया। श्री टिक्का ने बागवानी को पूरी तरह से अपना लिया है और पारम्परिक खेती की तुलना में इनकी आमदनी में तीन गुणा बढ़ोतरी हुई है। इन्होंने स्वयं अपने उत्पादों का विपणन प्रारंभ किया है और अपने घर पर ही कीन्नू की ग्रेडिंग करने का एक प्लांट लगाया है। इन्होंने ड्रिप तकनीक को अपनाया और सीढ़ी प्रणाली द्वारा अनुप्रयुक्त जमीन को समतल किया। प्रत्येक सीढ़ी पर इन्होंने फल एवं इमारती लकड़ी के वृक्ष के रूप में झाड़ी अथवा पौधें की रोपाई की जिन्होंने हवा को रोकने का कार्य किया। ये पौधे इनकी आय का अतिरिक्त स्रोत बनें। इनमें फलदार वृक्ष जैसे जामुन, आम तथा जैतून और इमारती लकड़ी के वृक्षों में पोपलर, शीशम, सागवान, बर्मा ड्रेक आदि शामिल हैं। श्री टिक्का ने 1700–2000 रुपये प्रति पौधा की दर से पोपलर की दो फसलों की बिक्री की है।

• बागवानी विभाग, मृदा संरक्षण विभाग तथा पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के विशेषज्ञों द्वारा इनके फार्म पर ब्लॉक स्तरीय, जिला स्तरीय और राज्य स्तरीय शिविर एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। प्रशिक्षण शिविरों के माध्यम से श्री टिक्का अन्य किसानों के लिए प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं और इनके फार्म तथा फलोद्यान का दौरा कर अन्य किसान काफी हद तक इनसे प्रेरणा लेते हैं और श्री टिक्का अक्सर किसान मेलों में भी अपनी भागीदारी करते हैं। इनकी विशिष्ट उपलब्धियों को देखते हुए पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा इन्हें प्रवासी भारतीय पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इनकी उपलब्धियों को मान्यता देते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली ने श्री टिक्का को प्रगतिशील किसान पुरस्कार प्रदान किया।

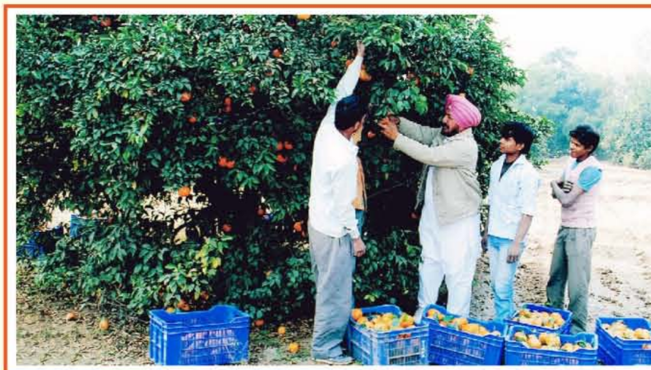

श्री अब्दुल अहद मीर

पिता का नाम	श्री गुलाम मोहम्मद मीर
आयु	51 वर्ष
शिक्षा	मिडिल पास
कृषि भूमि	3 एकड़
मुख्य फसलें	स्ट्राबेरी

पता

गांव : गौसू, हजरतबल,
श्रीनगर –190 006,
जम्मू व कश्मीर

टेलिफोन : 0194–2262777

मोबाइल : 9419447976

ई–मेल : sah_bismi@rediffmail.com

उपलब्धियां

- राष्ट्रीय बागवानी मिशन के अंतर्गत श्री अब्दुल अहद मीर ने कश्मीर के बागवानी विभाग की गहन निगरानी में स्ट्राबेरी की खेती करना प्रारंभ किया।
- इन्होंने 0.05 हेक्टेयर जमीन तथा अपने गांव में 0.5 हेक्टेयर क्षेत्रफल में स्ट्राबेरी की खेती करना प्रारंभ किया। अब गौसू गांव में 16 हेक्टेयर से भी अधिक जमीन पर स्ट्राबेरी की खेती की जा रही है।
- श्री मीर राज्य में गुणवत्तापूर्ण स्ट्राबेरी पौध/कलम वितरण के लिए एक पंजीकृत आपूर्तिकर्ता है और प्रति वर्ष लगभग 2 लाख स्ट्राबेरी पौध/कलम की आपूर्ति कर अनुमानित रुपये 2 लाख की आय अर्जित कर रहे हैं।
- श्री मीर को राज्य के माननीय मुख्यमंत्री द्वारा सम्मानित किया जा चुका है। इन्हें राज्य पुरस्कार भी मिल चुका है। इन्होंने नवीनतम प्रौद्योगिकियों को अपनाने में तत्परता दिखाई है। श्री अब्दुल अहद मीर से प्रेरित होकर गौसू गांव के निकटवर्ती कुछ अन्य गांवों में भी स्ट्राबेरी की व्यावसायिक खेती प्रारंभ की गई है।

श्री नरसीभाई कुबेरभाई पटेल

		पता
पिता का नाम	श्री कुबेर भाई पटेल	गांव : नायका
आयु	71 वर्ष	तालुका : खेड़ा
शिक्षा	एस.एस.सी.	जिला : खेड़ा, गुजरात
कृषि भूमि	25 एकड़	टेलीफोन : 079–29289955
मुख्य फसल	भिंडी, टमाटर व आल	मोबाइल : 09426510188

उपलब्धियां

• श्री नरसीभाई कुबेरभाई पटेल, गुजरात राज्य के एक प्रगतिशील सब्जी उत्पादक हैं। इन्होंने ड्रिप सिंचाई प्रणाली का उपयोग कर व्यावसायिक कृषि के लिए वैज्ञानिक रीतियों को अपनाया है। श्री पटेल सब्जियों की खेती विशेषकर भिंडी, टमाटर व आलू की खेती से जुड़े हुए हैं जिसमें इनके द्वारा समुचित फसल चक्र का उपयोग किया जाता है।

• श्री पटेल शाकीय फसल उत्पादन में एकीकृत कीट प्रबंधन तथा एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन रीतियों का उपयोग कर रहे हैं। इन्होंने प्रति एकड़ भिंडी का 14 टन, आलू का 16 टन और संकर टमाटर का 550 टन उत्पादन हासिल किया है। श्री पटेल ने एपीएमसी, निर्यात एजेंसियों तथा खाद्य उद्योगों के साथ अपने सम्पर्क बनाए हैं।

• श्री पटेल द्वारा अपनी सब्जियों का निर्यात लंदन एवं कुछ एशियाई देशों में किया गया। इनके पास पिछले 15 वर्षों से ट्यूबवैल, नहर, भंडारण टैंक तथा ड्रिप सिंचाई जैसी सुविधाएं हैं। इन्होंने कृषि मेलों, अंतरराष्ट्रीय मेलों एवं इस्राइल फार्मिंग एवं मेला का दौरा किया है। श्री पटेल द्वारा अन्य एजेंसियों के साथ मिलकर कृषि पर सम्मेलन आयोजित किया गया।

• ड्रिप सिंचाई प्रणाली के उपयोग और प्रसार में उल्लेखनीय योगदान के लिए श्री नरसीभाई कुबेरभाई पटेल को कृषि मंत्रालय, गुजरात सरकार द्वारा सरदार पटेल पुरस्कार प्रदान किया गया।

• इनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों को मान्यता प्राप्त करते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा श्री नरसीभाई कुबेरभाई पटेल को कृषि विज्ञान मेला, 2008 के अवसर पर प्रगतिशील किसान पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

श्री सुधीर अग्रवाल

पिता का नाम	श्री भवानी शंकर
आयु	57 वर्ष
शिक्षा	एम.ए. (दर्शन शास्त्र), एलएलबी
कृषि भूमि	8 एकड़
मुख्य फसल	गेहूं, धान, सरसों, मूंग, अड़द, अरहर, मौसमी सब्जियां, ग्लैडिओलस, कंदाकार, गेंदा व टीक, शीशम, यूकेलिपटस का रोपण

पता

गांव	:	भुरेका
पोस्ट	:	सुरीर
तहसील	:	मॉट
जिला	:	मथुरा, उत्तर प्रदेश
मोबाइल	:	09412278153, 9675371805
ई–मेल	:	bhawaniseeds@gmail.com

उपलब्धियां

• श्री सुधीर अग्रवाल, उत्तर प्रदेश के एक प्रगतिशील बीज उत्पादक और भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के अध्येता हैं। श्री अग्रवाल मुख्यतः धान, गेहूं एवं सरसों की खेती करते हैं और कोनो वीडर का उपयोग कर धान की खेती में चावल सघनीकरण प्रणाली (SRI) का प्रयोग करते हैं। श्री अग्रवाल, बीज उपचार, अंतर फसल, फसल चक्र, एकीकृत कीट प्रबंधन, एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन आदि के बारे में किसानों को जागरूक करने में गहरी रूचि लेते हैं जिसके परिणामस्वरूप अलग–अलग फसलों में प्रति एकड़ 2–4 क्विंटल तक की उपज बढ़ोतरी हुई है और प्रति एकड़ 5000 से 7000 रूपये की अतिरिक्त आय हुई है।

• श्री सुधार अग्रवाल द्वारा बड़े क्षेत्र में चावल की पीआरएच 10 संकर किस्म की 7.5 टन/हेक्टेयर की उपज प्रदर्शित की गई। वर्ष 2010 में उत्तर प्रदेश में पहली बार इनके द्वारा पूसा बासमती 6 (1401) को परीक्षण के तौर पर आजमाया गया। इन्होंने नवीन एवं अद्यतन तकनीकों को अपनाकर अपने पुराने कृषि खेत को उन्नत बनाया और इसका रूपांतरण अन्य किसानों के लिए एक ''प्रदर्शन इकाई'' के रूप में किया। इस कार्य में इन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, मथुरा एवं भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली की मदद ली। श्री अग्रवाल द्वारा भारतीय पशुचिकित्सा अनुसंधान संस्थान, इज्जतनगर, बरेली की कम लागत वाली नवोन्मेषी तकनीकों का अनुप्रयोग कर केचुआ पालन (वर्मीकल्चर) की परियोजना चलाई जा रही है।

• श्री अग्रवाल के बीज उत्पादन कार्यक्रम में 40 किसानों से शुरू किया। अब 15 गांव के लगभग 450 किसान हैं जिससे इन किसानों को प्रति हेक्टेयर ₹ 15000–20000 की अतिरिक्त आमदनी हो रही है। इनका बीज प्रसंस्करण संयंत्र 20 से 30 लोगों को नियमित रूप से रोजगार मिला। इनके द्वारा 1995 से क्षेत्र में पुष्प उत्पादन को अपना कर प्रति एकड़ ₹ 3 से 5 लाख की नियमित आमदनी हो रही है।

• श्री सुधीर अग्रवाल द्वारा उत्पादित किए गए बीजों की गुणवत्ता और लोकप्रियता के कारण भवानी सीड्स एण्ड बायोटैक की स्थापना की जिसके अंतर्गत श्री सुधीर अपना बीजोत्पादन का व्यवसाय करते हैं। श्री अग्रवाल, उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, गुजरात, कर्नाटक, राजस्थान, हरियाणा तथा पंजाब के 500 से अधिक गांवों में नवीनतम किस्मों के उच्च गुणवत्ता वाले बीजों की बिक्री कर रहे हैं और उनका प्रवर्धन कर रहे हैं। इनका वार्षिक टर्नओवर ₹ 20 लाख से बढ़कर 2.5 करोड़ हो गया है। वैज्ञानिक कृषि को बढ़ावा देने में इनके प्रयासों को मान्यता प्रदान करते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं।

श्री बोरावल्ली विनोद कुमार

पिता का नाम	श्री बोरावल्ली चन्द्र शेखर रेड्डी
आयु	43 वर्ष
शिक्षा	स्नातक (बी.ए. एल.एल.बी.)
कृषि भूमि	50 एकड़
मुख्य फसलें	अरहर, अरण्डी, टमाटर, मिर्च, खरबूज, प्याज, गन्ना, चना, तरबूज,

पता

गांव : रामापुरम
ब्लॉक : वाड्डेपल्ली
जिला : महबूबनगर–509126
आन्ध्र प्रदेश
मोबाइल : 09440882800
टेलिफोन : 08502 203040
ई–मेल : vkboravelly@rediffmail.com, vk28671@gmail.com

उपलब्धियां

- श्री बोरावल्ली विनोद कुमार द्वारा ड्रिप सिंचाई के तहत अरण्डी के संकर बीज उत्पादन को अपनाया गया है। इस विधि को अपनाकर इन्होंने लगभग 850 किग्रा./एकड़ मादा बीज का उत्पादन किया जो कि 400 किग्रा./एकड़ की औसत मादा बीज पैदावार क्षमता के मुकाबले मादा बीज पैदावार क्षमता का एक रिकार्ड है। इस तकनीक को अब इनके गांव में लगभग 40–50 किसान अपना रहे हैं और प्रतिवर्ष अरण्डी का 800–1000 क्विंटल गुणवत्ता संकर बीज उत्पादन कर रहे हैं।
- श्री बोरावल्ली ने विभिन्न फसलों नामतः मसूर, अरण्डी, टमाटर, खरबूज, प्याज, सूरजमुखी, गन्ना को उगाने के लिए ड्रिप सिंचाई प्रणाली का उपयोग किया। महत्वपूर्ण विधियों का आकलन करने के बाद अभी इनके गांव के लगभग 200 किसान भी ड्रिप सिंचाई का इस्तेमाल कर रहे हैं।
- श्री बोरावल्ली द्वारा हासिल की गई पैदावार और अपनाई गईं विधियों का प्रमाणन कृषि विभाग के अधिकारियों, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के वैज्ञानिकों तथा प्रगतिशील किसानों द्वारा किया गया है।
- श्री बोरावल्ली द्वारा विभिन्न उन्नत कृषि रीतियां अपनाई गई हैं जिनमें रबी मौसम में अरण्डी को उगाना, सूरजमुखी में डिबलिंग तथा उचित फासले (2 फीट x 1 फीट) को अपनाना, विभिन्न फसलों में टॉप ड्रेसिंग के लिए काम्पलेक्स फर्टिलाइजरों के इस्तेमाल से बचना, तथा चावल, मक्का, अरहर, गन्ना, मिर्च, अरण्डी, टमाटर और बंदगोभी में खरपतवार की रोकथाम के लिए शाकनाशियों का इस्तेमाल करना शामिल है।

पिता का नाम	श्री कालू राम त्यागी
आयु	46 वर्ष
शिक्षा	10वीं पास
कृषि भूमि	32 एकड़
मुख्य फसल	धान, गेहूं एवं सब्जियां

पता		
गांव	:	बादशाहपुर
पोस्ट	:	खेड़ी कलां
जिला	:	फरीदाबाद, हरियाणा
टेलीफोन	:	0129–2202210
मोबाइल	:	09313032710

उपलब्धियां

- श्री धर्म पाल त्यागी, हरियाणा राज्य के एक सफलतम नवोन्मेषी किसान एवं बीज उत्पादक हैं। श्री त्यागी द्वारा किसान समुदाय के लाभ के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की किस्मों का बीज उत्पादन किया जा रहा है। इन्होंने सब्जियों, फलदार फसलों तथा फूलों की खेती कर फसल विविधीकरण को बढ़ावा दिया है जिससे इनकी आमदनी पर्याप्त रूप से बढ़ी है। इन्होंने गैर पारम्परिक सब्जियों की खेती को अपनाया। श्री त्यागी ने अपने खेत में एक वर्मीकम्पोस्ट इकाई भी स्थापित की।
- श्री त्यागी ने अपनी कृषि को पूरी तरह से मशीनीकृत किया हुआ है। इनके पास दो ट्रेक्टर, लेजर लेवलर, गाजर खोदने की मशीन तथा अन्य ट्रेक्टर चालित कृषि यंत्र हैं, जिनको न केवल अपने खेत पर प्रयोग करते हैं बल्कि किराये पर देकर भी आमदनी प्राप्त करते हैं।
- श्री त्यागी द्वारा कृषि प्रौद्योगिकियों को अपनाकर संकर चावल (PRH 10) का बीज उत्पादन किया जा रहा है। इन्होंने रेडियो एवं टेलीविजन पर अनेक वार्ता कार्यक्रमों में भाग लिया है। इनके खेत का दौरा विभिन्न विशिष्ट अतिथियों द्वारा किया जा चुका है।
- श्री त्यागी ने शोध संस्थानों, किसान सहकारी समीतियों, किसान कल्बों, गैर सरकारी संस्थाओं और कृषि निवेश से जुड़ी फर्मों के साथ विपणन और दूसरे प्रयोजनों के लिए कड़ी स्थापित की है।
- भूमि की उर्वरा शक्ति के लिए नीम के पत्ते और गौमुत्र का मिश्रण, हरी खाद का प्रयोग, जैविक उर्वरकों को उपयोग इनके खेत की विशेषता है।
- इन्होंने बाजार की मांग के अनुसार उत्पाद की गुणवत्ता और श्रेणीकरण को अपनाया है। जैसे छोटे परिवारों की जरूरत के लिए छोटी धीया व फूलगोभी जिसके लिए इन्होंने पौधे से पौधे की दूरी और बोने के समय में बदलाव किया।
- इन्होंने विभिन्न प्रकार के उत्पादित बीजों की बिक्री के लिए एक बीज कम्पनी 'डी एम सीडस' को पंजीकृत किया है।
- श्री धर्मपाल त्यागी को कृषि के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर अनेक पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र मिल चुके हैं। कृषि में उल्लेखनीय योगदान के लिए श्री धर्मपाल त्यागी को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2013 में 'आईएआरआई फेलो पुरस्कार' प्रदान किया गया।

पिता का नाम	श्री मोहन लाल सिपानी
आयु	73 वर्ष
शिक्षा	बी.एससी. (कृषि)
कृषि भूमि	17 एकड़
मुख्य फसलें	गेहूं, सोयाबीन, अरहर, मक्का एवं सब्जियां

पता

गांव	:	8, हाउसिंग कॉलोनी नई आबादी
जिला	:	मंदसौर– 458001 मध्य प्रदेश
टेलिफोन	:	07422–220504, 405260
मोबाइल	:	09425105100
ई–मेल	:	mikrochem_mds@rediffmail.com

उपलब्धियां

• श्री नरेन्द्र सिंह सिपानी ने विविधीकृत कृषि में दक्षता हासिल करने के बाद पादप प्रजनन में कार्य प्रारंभ किया। श्री सिपानी ने वर्ष 1972 में पर्णीय अनुप्रयोग के लिए विशेष सूक्ष्म पोषक तत्व फार्मुलेशन निर्माण में एक अग्रणी उद्यम के रूप में माइक्रो केमिकल्स (भारत) की स्थापना की।

• श्री सिपानी ने वर्ष 1991 में सिपानी कृषि अनुसंधान फार्म की स्थापना की और विभिन्न जननद्रव्य का संकलन किया। आज सिपानी कृषि अनुसंधान फार्म के पास ब्राजील, मैक्सिको, बोलिविया, यू.एस. तथा भारत से सोयाबीन के 240 वंशक्रम, अरहर के 120 वंशक्रम, मक्का के कम तथा मध्यम परिपक्वता अवधि एवं उच्च उपजशील 120 वंशक्रम, एवं सब्जियों के 100 वंशक्रम का संकलन है। वर्तमान में सिपानी कृषि अनुसंधान फार्म द्वारा गेहूं, सोयाबीन, अरहर, मक्का, भिण्डी तथा अन्य सब्जी फसलों पर कार्य किया जा रहा है। वे सिपानी कृषि अनुसंधान फार्म के प्रबंध निदेशक और माइक्रो ऑर्गेनिक्स (भारत) के तकनीकी निदेशक हैं।

• श्री सिपानी ने श्रेष्ठ गेहूं दाना गुणवत्ता और अधिक पैदावार के मुश्किल संयोजन के साथ गेहूं की अनूठी किस्म, 'मोहन वंडर' का सफलतापूर्वक विकास कर उसकी मार्केटिंग की है। गेहूं की इस अनूठी किस्म मोहन वंडर की खेती भारत में 20 लाख हेक्टेयर से भी अधिक क्षेत्र में की जाती है।

• सिपानी कृषि अनुसंधान फार्म द्वारा 70 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की उपज क्षमता एवं अच्छी गुणवत्ता वाली तीन बौने जीन की गेहूं किस्म ''वामन'' विकसित की गई है जो कि सिंचित परिस्थितियों में खेती के लिए उपयुक्त है। वर्ष 1995–2000 के दौरान सिपानी कृषि अनुसंधान फार्म द्वारा 2 मीट्रिक टन/हेक्टेयर की उपज क्षमता के साथ 110–130 दिनों में पककर तैयार होने वाली अरहर की तीन अति अगेती परिपक्वता किस्में विकसित की गईं। वर्ष 2000 में श्री सिपानी ने गेहूं की नई किस्में, ''डब्ल्यूडी 64'', ''डब्ल्यूए 57'' तथा ''द्रोणाचार्य'' विकसित की जो कि एक अथवा दो सिंचाई के साथ खेती करने के लिए उपयुक्त हैं। बीज प्रमाणन अधिकारी के रूप में, श्री सिपानी द्वारा मध्य प्रदेश के रतलाम, उज्जैन तथा झाबुआ जिले में मैक्सीकन गेहूं किस्मों की शुरूआत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई है। श्री सिपानी को विभिन्न किस्मों को विकसित करने और किसानों के लाभ के लिए बीज उत्पादन के क्षेत्र में किए गए इनके उल्लेखनीय योगदान के लिए अनेक पुरस्कार एवं मान्यता प्रमाण–पत्र मिल चुके हैं।

श्री चन्द्र शेखर सिंह

पिता का नाम	स्व. श्री शीतला सिंह	पता		
आयु	58 वर्ष	गांव	:	सी–26/31, जगतगंज रामकटोरा रोड़
शिक्षा	एल.एल.बी	जिला	:	वाराणसी – 221 001 उत्तर प्रदेश
कृषि भूमि	5 एकड़	मोबाइल	:	09453379332
मुख्य फसल	गेहूं, धान, अरहर, मक्का, गन्ना, आलू व सब्जियां	ई–मेल	:	cssingh_89@yahoo.com

उपलब्धियां

• श्री चन्द्र शेखर सिंह, उत्तर प्रदेश के एक प्रगतिशील किसान हैं। इन्होंने कृषि में उत्पादन और उत्पादकता बढ़ाने में लगभग 25 वर्षों तक अनुसंधान कार्य किया है। श्री सिंह ने अरहर की एक नई किस्म–वसुंधरा बादशाह, गेहूं की किस्म 'बाबा विश्वनाथ (csw-467)', गेहूं की किस्म शीतला (जैविक खेती के लिए उपयुक्त), धान की किस्म खुशबू (सुगंधित एवं स्वाद में अच्छी तथा कम पानी में उपयुक्त), चिकित्सीय चावल (पेट संबंधी समस्याओं के लिए अच्छा), सगंधीय लाल चावल जिसकी खेती किसानों द्वारा करके अच्छे परिणाम हासिल किए जा रहे हैं, विकसित की हैं।

• श्री सिंह ने वर्ष 2004 में धान की एक अल्पावधि किस्म खुशबू का विकास किया जो कि 120 दिन में पककर तैयार हो जाती है और इसकी उपज क्षमता 5.0 से 5.5 टन प्रति हेक्टेयर है। इन्होंने वर्ष 2003 में अरहर की किस्म वसुंधरा बादशाह विकसित की। इस किस्म में 120 दिनों में 50 प्रतिशत पुष्पन आ जाता है, इसमें प्रति पौधा 240 तक फलियां पाई जाती हैं और इसके 100 बीजों का भार 11.2 ग्राम होता है। इसका रंग और पौधा प्रवृति गठीली है। यह किस्म लगभग 230 दिनों में पक जाती है और इसकी उपज 3.0 से 3.5 टन प्रति हेक्टेयर है।

• श्री सिंह द्वारा गेहूं की अनेक किस्में नामतः बाबा विश्वनाथ, काशी विश्वनाथ, गणेशन एवं देवनन्दन विकसित की गईं हैं। गेहूं की किस्म बाबा विश्वनाथ की उपज 6.5–7.0 टन प्रति हेक्टेयर है।

• श्री सिंह द्वारा विकसित की गई चावल किस्म में चिकित्सीय गुण हैं और यह किस्म पेट संबंधी समस्याओं में कारगर है। सामान्य चावल की तुलना में इस किस्म में जिंक, कॉपर, आयरन तथा प्रोटीन की मात्रा ज्यादा है। कम पानी की जरूरत वाली उच्च उपजशील धान की खेती वाली विधि ''बनारसी पद्धति''–2005 के तहत धान की खेती में पानी की 25 से 30 प्रतिशत तक कम खपत होती है और उपज में 25 प्रतिशत की वृद्धि होती है।

• श्री चन्द्र शेखर सिंह को अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं जिनमें वर्ष 2011 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का जगजीवन राम किसान पुरस्कार प्रमुख है।

श्री संदीप गोयल

पिता का नाम	श्री जगरूप
आयु	42 वर्ष
शिक्षा	स्नातक (बी.ए.)
कृषि भूमि	50 एकड़
मुख्य फसल	गेहूं एवं धान

पता		
गांव	:	एच.के. एग्रीकल्चर फार्म, जैतपुर
पोस्ट	:	कुंडेश्वरी
जिला	:	काशीपुर–244713, उत्तराखण्ड

उपलब्धियां

• श्री संदीप गोयल एक नवोन्मेषी किसान हैं। इन्होंने कल्टीवेटर विधि के साथ गेहूं सघनीकरण प्रणाली की विधि के तहत गेहूं के बीजों की सीधी बुवाई के लिए उथली पंक्तियों को खोलने हेतु ट्रैक्टर चालित कल्टीवेटर का उपयोग किया। यह विधि डिबलर विधि की तरह ही है लेकिन इसका लाभ यह है कि इसमें बीजों, उर्वरकों, शाकनाशी, श्रम, समय की बचत के साथ–साथ प्रति इकाई क्षेत्रफल खेती की लागत भी कम है। इस विधि का प्रयोग करने से खेती की लागत में लगभग ₹ 3,000/हेक्टेयर की कमी आई। इसके अलावा श्री गोयल ने पशुधन पालकों से प्रति लिटर 10 रुपये की दर पर गाय के ताजे मूत्र को खरीदा और चिकित्सीय प्रयोजनों हेतु मशीनों की सहायता से एक लिटर ताजे गोमूत्र से 700 मि.लि. आसवित उत्पाद तैयार किया। इस उत्पाद को खुले बाजार में प्रति लिटर ₹ 125 की दर से बेचा।

• स्थानीय जननद्रव्य में से चयन कर गेहूं की एक नई किस्म की पहचान की जिसकी उपज क्षमता 65 क्विंटल/हेक्टेयर है और यह किस्म अधिकांश रोगों के प्रति सहिष्णु है। इसका नाम अष्टा गोल्ड़ रखा तथा इसकी मान्यता प्रदान और पंजीकरण के लिए पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण (PPV & FRA) के पास भेजा गया।

• श्री गोयल ने अपने खेत में नई तकनीकों को अपनाया है जिसमें शामिल हैं– गेहूं, धान एवं गन्ना की जारी की गई नई किस्मों का अनुप्रयोग; गेहूं सघनीकरण प्रणाली (SWI); लेजर लैंड लेबलर; जीरो सीड ड्रिल, वर्मी कम्पोस्टिंग, ड्रिप सिंचाई प्रणाली, वृंदावनी पशु नस्ल; दुधारू पशुओं के लिए क्षेत्र विशिष्ट खनिज मिश्रण, पशुओं के लिए यूरिया शीरा, खनिज ब्लॉक तथा डेयरी पशुओं के लिए पूर्ण फीड ब्लॉक।

• श्री गोयल उच्च उपजशील किस्मों के बीजों तथा वृंदावनी पशु के वीर्य को किसानों को निशुल्क उपलब्ध कराते हैं। इन्होंने किसानों के खेतों में उच्च उपजशील किस्मों के प्रदर्शन और साथ ही बीज उत्पादन प्रौद्योगिकी, वर्मी कम्पोस्टिंग और स्वच्छ दूध उत्पादन पर नियमित प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए।

• श्री गोयल को कृषि में उल्लेखनीय योगदान के लिए कई अनुसंधान एवं विकास संगठनों तथा राज्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा जिला एवं राज्य स्तर पर अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्रदान किए गए हैं। श्री संदीप गोयल को कृषि में इनके उल्लेखनीय योगदान के लिए वर्ष 2012 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा ''नवोन्मेषी किसान पुरस्कार' एवं भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का जगजीवन राम नवोन्मेषी किसान पुरस्कार प्रदान किया गया।

श्री बाबूलाल दहिया

पिता का नाम	श्री कालूराम दहिया
आयु	54 वर्ष
शिक्षा	स्नातक (बी.ए.)
कृषि भूमि	7.5 एकड़
मुख्य फसलें	धान

पता		
गांव व पोस्ट	:	पिथौराबाद
जिला	:	सतना, मध्य प्रदेश
टेलीफोन	:	07673, 266231
मोबाइल	:	09981162564
ई–मेल	:	babulaldahiya@gmail.com

उपलब्धियां

- श्री दहिया पहले किसान हैं जिन्होंने सतना जिले में 70 के दशक में सबसे पहले बौनी किस्मों जैसे लरमा राजो, सुनोरा 64 और कल्याण सोना की खेती शुरू की। कृषि विभाग की मदद से एक पम्प भी लग गया जिससे सिंचाई आसान हुई।
- लरमा राजों गेहूं और आई.आर. 8, धान से शुरू होकर इनकी खेती की यात्रा डब्ल्यू.एच 147 और आईआर 36 तक पहुंची।
- श्री दहिया लोक साहित्य के साथ साथ देशी अनाजों के बीज संग्रहण की ओर भी प्रयासरत हैं और इन्होंने धान की लगभग 70 प्रजातियों को अपने खेत पर उगाकर जीवित रखा हुआ है तथा इन प्रजातियों को इच्छुक किसानों को वितरित करते हैं। धान की तमाम प्रजातियों के संरक्षण के कारण इन्हें पौध किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्लांट जीनोम सेवियर कम्युनिटी का पुरस्कार (Plant Genome Savior Community) 2010–11 में दिया गया है।
- इस उपलब्धि के बाद मुम्बई, दिल्ली आदि मे इनकी धान किस्मों की प्रदर्शनी भी लगी। लेकिन बगैर पूंजी खेती नहीं की जा सकती और वह भी 100 अलग–अलग प्रजातियों की। इसी परम्परा को आगे बढ़ाते हुए अभी 190 देशों के जैव विविधता सम्मेलन, हैदराबाद में धान की 100 प्रजातियों का प्रदर्शन किया।

सरदार गुरचरण सिंह

पिता का नाम	सरदार गुरबचन सिंह	पता
आयु	59 वर्ष	गांव व डाकघर : ब्रास
शिक्षा	स्नातक (बी.ए.)	तहसील : निसिंग
कृषि भूमि	80 एकड़	जिला : करनाल, हरियाणा
मुख्य फसलें	गेहूं, धान, चना, मटर, बरसीम, आलू, टमाटर एवं सब्जियां	मोबाइल : 09896081873 09255580001

उपलब्धियां

• सरदार गुरचरण सिंह ने करीब 35 वर्ष पहले हरियाणा में जिला करनाल के गांव ब्रास में 20 एकड़ भूमि पर कृषि करना प्रारंभ किया। इनका परिवार एक डेरा फार्म हाउस में रहता है इसलिए इन्होंने खेती को अधिकतम समय दिया। वर्तमान में इनके पास कुल 80 एकड़ जमीन है जो कि इन्होंने कृषि से मिली आय से बढ़ाई है। कृषि के साथ ही श्री सिंह 20 डेयरी पशुओं (भैंस) का पालन भी कर रहे हैं। लगभग 20 वर्ष पहले सरदार गुरचरण सिंह भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल के सम्पर्क में आए और उन्होंने केन्द्र के वैज्ञानिकों से तकनीकी मार्गदर्शन और उन्नत किस्मों के बारे में जानकारी हासिल की। आमतौर पर सरदार गुरचरण सिंह धान तथा गेहूं की खेती करते हैं। इन फसलों के अलावा, इनके द्वारा चारा प्रयोजन के लिए बरसीम, ज्वार और जई; कुछ दालों व आलू, टमाटर तथा मटर आदि की खेती भी की जा रही है। सरदार गुरचरण सिंह ने फसल/बीज उत्पादन और पशु पालन पर कुल सात प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भागीदारी की है।

• भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल के साथ जुड़कर इन्हें वर्ष 2006 में मेगा बीज परियोजना प्रारंभ करने के बाद वर्ष 2007 में एक बीज उत्पादक किसान के रूप में चुना गया। तब से ये केन्द्र के सर्वश्रेष्ठ बीज उत्पादकों में शामिल हैं और प्रतिवर्ष कई सौ क्विंटल बीज का उत्पादन कर रहे हैं। केन्द्रीय बीज परीक्षण प्रयोगशाला के साथ–साथ भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल द्वारा किए गए बीज परीक्षण में सरदार गुरचरण सिंह द्वारा उत्पादित बीज हमेशा मानदण्डों की कसौटी पर खरे उतरे हैं। आसपास के गांवों के किसानों के लिए ये बीज उत्पादन प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में एक संसाधन स्रोत हैं। अनेक गणमान्य अतिथियों ने इनके फार्म का दौरा किया और इनके बीज उत्पादन प्लॉट्स की प्रशंसा की। ईरान के कृषि विभाग के अधिकारियों तथा वैज्ञानिकों ने भी इनके फार्म का दौरा किया और इनके बीज प्लॉट्स की प्रशंसा की। इसके अलावा बीज उत्पादन के क्षेत्र में इनके द्वारा किए गए प्रयासों को दूरदर्शन पर कई बार प्रसारित किया गया। सरदार गुरचरण सिंह भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के क्षेत्रीय केन्द्र, करनाल के लिए चावल, गेहूं, चना, बरसीम और मटर के वास्तविक बीजों का उत्पादन करने में लगे हुए हैं। सरदार गुरचरण सिंह को कृषि में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के विभिन्न संस्थानों से अनेक पुरस्कार एवं सम्मान मिल चुके हैं।

श्री सतीश कुमार द्विवेदी

पिता का नाम	श्री शिव कुमार	**पता**	
आयु	51 वर्ष	गांव	: चान्दपुरा
शिक्षा	स्नातकोत्तर	पोस्ट	: सकरी चान्दपुरा
		थाना	: पियर
कृषि भूमि	20 एकड (पट्टे पर 22 एकड़)	जिला	: मुजफ्फरपुर, बिहार
मुख्य फसल	धान, गेहूं (बीज उत्पादन), मूंग, मसूर, चवला, भिण्डी व आलू	मोबाइल	: 09931245700

उपलब्धियां

- श्री सतीश कुमार द्विवेदी, बीज उत्पादन में विशेष तकनीकी का प्रयोग कर सफलता की एक नई कहानी लिख रहे हैं। स्नातकोत्तर शिक्षा प्राप्त करने के बाद भी बेरोजगारी जैसी समस्या से घिरा होने के कारण इन्होंने कृषि को व्यवसाय के रूप में अपनाकर उन्नत खेती की शुरूआत की।

- नए–नए कृषि यंत्रों को पंजाब, हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश से खरीद कर कृषि को तकनीकी रूप दिया जिसके फलस्वरूप कृषि में लागत को कम किया तथा समय की बचत की। आज श्री द्विवेदी के पास लगभग 40 प्रकार के विभिन्न कृषि यंत्र हैं जिनका उपयोग गेहूं, धान, गन्ना, आलू, राई, मूंग, मक्का, धनिया, मेथी, अजवाइन, मसूर, लहसुन, खीरा तथा मूली आदि की खेती एवं बीज उत्पादन में किया जाता है।

- श्री द्विवेदी ने वर्ष 1984 में सीड़ कम फर्टिलाइजर ड्रिल यंत्र खरीदा जिससे बीज का शत प्रतिशत अंकुरण हुआ और उपज क्षमता परम्परागत तरीके के मुकाबले दो से ढ़ाई गुना हो गई। वर्ष 1985 में मेड़ बनाने का यंत्र खरीदा जिससे मानवश्रम, समय, डीजल तथा मजदूरी की बचत होने लगी। वर्ष 1984 में ही इन्होंने मक्का थ्रेसर का सर्वप्रथम प्रयोग कर मानवश्रम की 80 प्रतिशत तक बचत, समय में 50 प्रतिशत की बचत और लागत खर्च में 60 प्रतिशत की बचत की जिसके फलस्वरूप मक्का बीज उत्पादन कर अधिक लाभ कमाया।

- वर्ष 1995 से आलू की बुवाई मशीन से करने पर उत्पादन प्रति एकड़ 45–50 क्विंटल से बढ़कर 80–120 क्विंटल प्रति एकड़ हो गया। साथ ही आलू खोदने की मशीन लेने से प्रति एकड़ 20–25 मजदूरों की आवश्यकता घटकर 8–10 रह गई और लाभ बढ़ गया। मूंग में स्प्रिंक्लर के प्रयोग से अच्छा उत्पादन मिला। वर्ष 2001 में श्री द्विवेदी ने बीज उपचार ड्रम लिया जिससे बीच उपचार कार्य आसान हो गया और फसल सुरक्षा लागत कम हुई। वर्ष 2009 में इन्होंने कम्बाईन हार्वेस्टर गेहूं फसल की कटाई के बाद के लिए भूसा की जरूरत पूरा करने के लिए स्ट्रिपर की खरीद की जिसे भाड़े पर चलाकर प्रतिदिन 6 से 8 एकड़ तक का भूसा बनाया जा सका।

- वर्ष 2011 में इनके द्वारा रेनगन का प्रयोग करने से मजदूरी की बचत के साथ–साथ पानी की बचत होने से लागत में कमी आई तथा लाभ में वृद्धि हुई। वर्ष 2012 में लेजर लेवलर खरीद कर इन्होंने अपनी तथा अन्य किसानों की जमीन समतल की जिससे जुताई खर्च में कमी आई, तथा उत्पादन क्षमता में वृद्धि होने के साथ–साथ शून्य जुताई से खेती करना आसान हुआ। श्री सतीश कुमार द्विवेदी को वर्ष 2007 में मुजफ्फरपुर जिले में किसान भूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

श्री प्रीतम सिंह

पिता का नाम	स्व. श्री हरिकेश सिंह
आयु	50 वर्ष
शिक्षा	10वीं पास
कृषि भूमि	6 एकड़ (3 एकड़ निजी एवं 3 एकड़ पट्टे पर)
मुख्य फसल	चावल, गन्ना, गेहूं, आलू, जौ, सरसों, मक्का एवं सब्जियां

पता		
गांव	:	नेकपुर
पोस्ट	:	नेकपुर
जिला	:	बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश
मोबाइल	:	09410490777

उपलब्धियां

• श्री प्रीतम सिंह, उत्तर प्रदेश के एक प्रगतिशील किसान हैं। श्री सिंह, बुलन्दशहर में सहकारी समिति बनाकर कृषि के व्यावसायीकरण को नया आयाम दे रहे हैं। वर्ष 2004 तक श्री सिंह पारम्परिक तरीके से धान, ज्वार, गन्ना, बाजरा एवं गेहूं की खेती करते थे। आकाशवाणी, नई दिल्ली तथा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा द्वारा गेहूं पाठशाला का आयोजन किया गया जिसमें श्री प्रीतम सिंह को द्वितीय पुरस्कार के रूप में शून्य जुताई मशीन दी गई।

• इन्होंने अपने गांव में एक किसान सहकारी समिति बनाकर पूसा संस्थान के सहयोग से रबी 2006–07 में गेहूं की विभिन्न प्रजातियों का लगभग 400 क्विंटल बीज पैदा करके पूसा संस्थान को वापस किया जिससे इन्हें साधारण गेहूं के उत्पादन की तुलना में लगभग 20 प्रतिशत अधिक आय प्राप्त हुई। खरीफ 2007 में इन्होंने धान की पूसा सुगंध–4, पूसा बासमती–1 प्रजातियों का बीज उत्पादन करके किसानों को साधारण धान के बाजार भाव से अधिक भाव में बेचा जिससे इन्हें पर्याप्त लाभ हुआ।

• श्री प्रीतम सिंह ने विभिन्न फसलों यथा गेहूं, धान एवं सब्जी फसलों विशेषकर, आलू एवं खीरावर्गीय फसलों में हाईटेक उत्पादन प्रौद्योगिकियों को अपनाया है। श्री प्रीतम सिंह द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की किस्मों के बीजों का उत्पादन कर उनकी बिक्री किसानों को सीधे की जा रही है।

• श्री प्रीतम सिंह 'बीज इंडिया फार्मर्स प्रोडयूसर कम्पनी' के संस्थापक सदस्य हैं। श्री सिंह किसानों को अपने खेत उत्पादों और बीजों की बिक्री करते हैं। श्री प्रीतम सिंह द्वारा समुचित फसल चक्र और रीतियों के वैज्ञानिक पैकेज को अपनाकर सघन फसल उत्पादन का कार्य सफलतापूर्वक किया जा रहा है। इनकी खेत उत्पादकता और आय के स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है।

• श्री प्रीतम सिंह साथी किसानों को उन्नत कृषि प्रौद्योगिकियां अपनाने के लिए प्रेरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। इनके खेत में बायोगैस संयंत्र एवं वर्मी कम्पोस्टिंग इकाई स्थापित है।

• श्री प्रीतम सिंह की कार्यकुशलता एव लग्न को देखते हुए उत्तर प्रदेश के कृषि विभाग ने इन्हें 'किसान मित्र' बनाया है। कृषि में उल्लेखनीय योगदान के लिए श्री प्रीतम सिंह को वर्ष 2014 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा 'आईएआरआई फेलो पुरस्कार' प्रदान किया गया। श्री प्रीतम सिंह को विभिन्न संगठनों से अनेक बार प्रगतिशील किसान पुरस्कार मिल चुके हैं।

श्री जोस मैथ्यू

पिता का नाम	श्री जॉर्ज मैथ्यू	**पता**	
आयु	47 वर्ष	गांव	: कोचुकुडीयिल
शिक्षा	12वीं पास	पोस्ट	: कलूर, कलूरक्काडु मुवट्टूपुझा
कृषि भूमि	20 एकड़	जिला	: एर्नाकुलम, केरल
मुख्य फसलें	रबर, जायफल, नारियल, आम तथा सुपारी	टेलिफोन	: 04862–267229
		मोबाइल	: 9446010630
		ई–मेल	: jossykochukudy@yahoo.co.in

उपलब्धियां

• श्री जोस मैथ्यू, केरल के एक ऐसे किसान हैं जिनके पास जायफल जैसे मसाले में आगे का रास्ता बनाने का जज्बा प्रज्ज्वलित है। श्री मैथ्यू ने जायफल की खेती को नया जीवन प्रदान कर यह प्रमाणित किया कि पर्याप्त जल स्रोत के साथ उष्ण कटिबंधीय देशों में खेती करने के लिए जायफल एक आदर्श मसाला फसल है। श्री मैथ्यू ने यह भी सिद्ध किया कि जायफल की खेती वित्तीय दृष्टि से लाभप्रद है।

• जायफल की विभिन्न किस्मों की खोज करने में एवं अनुप्रयोग करने में की गई कई वर्षों की कड़ी मेहनत के बाद श्री मैथ्यू को एक नई किस्म 'कोचुकुडी' को विकसित करने में सफलता मिली। श्री मैथ्यू ने विभिन्न किस्मों में अच्छे स्ट्रेन की पहचान करने में लगभग 29 वर्ष लगा दिए और तब जाकर एक किस्म में श्रेष्ठ गुणों को शामिल किया जिसका विपणन अब श्री मैथ्यू कोचुकुडी ब्राण्ड के तहत करते हैं। नई किस्म की अग्रता बड़ी स्पष्ट है : इसकी 70 गिरी का भार एक किलोग्राम है जबकि सामान्य किस्मों में 140 गिरी का भार एक किलोग्राम रहता है। इसी प्रकार कोचुकुडी किस्म में लगभग 350 जावित्री का भार एक किलोग्राम होता है जबकि अन्य सामान्य किस्मों में एक किलोग्राम भार में लगभग 800–1000 जावित्री शामिल होते हैं।

• श्री मैथ्यू द्वारा आठ एकड़ जमीन पर प्रति एकड़ तीन मजदूरों की सहायता से जायफल के लगभग 500 वृक्षों की खेती की जा रही है। उर्वरक का प्रयोग करते समय इन्होंने नाइट्रोजन, फॉस्फोरस तथा पोटेसियम के मिश्रण पर बहुत अधिक ध्यान देने की बजाय गाय का गोबर एवं अस्थि चूर्ण का प्रयोग कर एक अलग तरीका अपनाया। इन्होंने जून से प्रारंभ कर वर्ष में 2–3 बार बार्डोक्स मिश्रण का प्रयोग भी किया। श्री मैथ्यू ने नई किस्म के प्रवर्धन के लिए स्वयं एक जायफल नर्सरी प्रारंभ की। इनके अनुसार एक एकड़ क्षेत्र में जायफल के 60 वृक्ष समायोजित किए जा सकते हैं जिससे खेती की लागत कम रहती है और किसानों को अच्छा लाभ मिलता है। कुछ किस्मों में 25–50 वर्ष के बीच सबसे अधिक पैदावार मिलनी प्रारंभ होती है। श्री मैथ्यू ने नारियल, कॉफी अथवा सुपारी पौध–रोपण में अंतर फसल के रूप में खेती करने के लिए जायफल को एक आदर्श फसल पाया है।

(स्व.) श्री एन. सीताराम अय्यर

पिता का नाम	श्री नटेसन अय्यर	
आयु	97 वर्ष	
शिक्षा	10वीं पास	
कृषि भूमि	5 एकड़	
मुख्य फसलें	धान, दलहन और अदरक	

पता		
गांव	:	तिरूपाजनम, तिरूवयारू ब्लॉक
जिला	:	तंजावुर–613 204 तमिलनाडु
टेलिफोन	:	04362–320537
मोबाइल	:	9629733112

उपलब्धियां

• श्री एन. सीताराम अय्यर ने 15 वर्ष की आयु से कृषि प्रारंभ कर अपनी मृत्यु से एक वर्ष पूर्व आयु तक खेती की। श्री अय्यर अपनी खेती में पूरी तरह से सक्रिय रूप से शामिल थे। तंजावुर में इन्हें सभी वर्गों के लोग प्यार से तंजई गांधी कहकर पुकारते थे क्योंकि श्री अय्यर गांधीवादी सिद्धांत का पालन करते थे।

• महात्मा जैसी वेशभूषा में रहने वाले श्री अय्यर ने अपने गांव में छूआछूत का उन्मूलन किया और दलितों तथा समाज के अन्य वर्गों के लिए वर्ष 1950 में जिला कलेक्टर की उपस्थिति में सामा बंधी (एकसाथ भोजन) का प्रबंध किया।

• श्री अय्यर वर्ष 1966 से 1996 तक अदुथुरई चावल अनुसंधान केन्द्र की सलाहकार समिति के सदस्य, तथा किसान प्रशिक्षण केन्द्र, अदुथुरई के किसान चर्चा समूह के अध्यक्ष थे।

• श्री अय्यर कृषि विभाग द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों का पालन कर उनका प्रसार अपने साथी किसानों के बीच करने के लिए प्रचलित थे। इन्होंने तमिलनाडु कृषि विश्वविद्यालय के चावल अनुसंधान संस्थान, अदुथुरई को उसके प्रजनन कार्यक्रम के लिए अपनी कृषि जोत तथा किसानों द्वारा उगाई गईं करूनगुरूवई, ऊसी पोन्नी, अनिलवलसम्बा, हंगासम्बा, कुडीरईवलसम्बा तथा सीरागासम्बा किस्मों के बीज उपलब्ध कराकर सहयोग दिया।

• श्री अय्यर ने वर्ष 1966 में जैपोनिका इण्डिका किस्म एडीटी 27 का प्रवर्धन करने में व्यापक प्रसार किया जिससे एक वर्ष में 2.5 लाख एकड़ क्षेत्र को एकल फसल से द्विफसली में बदलकर डेल्टा जिले में एक इतिहास रचा गया।

• कृषि अनुसंधान केन्द्र द्वारा विकसित नई किस्मों को प्रवर्धित करने और कृषि जोत का परिरक्षण करने में किए गए इनके प्रयासों को पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण, कृषि मंत्रालय, भारत सरकार ने मान्यता प्रदान करते हुए इन्हें वर्ष 2010 से 2011 के लिए प्लांट जीनोम सेवियर प्रमाण–पत्र मरणोपरांत प्रदान किया।

श्री करकमपल्ले माधव रेड्डी

पिता का नाम	श्री के. कोलप्पा रेड्डी
आयु	57 वर्ष
शिक्षा	9वीं पास
कृषि भूमि	2.5 एकड़
मुख्य फसलें	चारा फसलें, नारियल एवं आम

पता		
गांव	:	डी. नं. 1/2, गुंडलाकटामांछी
डाकघर	:	के.जी. सथरम, मंडल बांगरूपलायम
जिला	:	चित्तूर–517416, आन्ध्र प्रदेश
टेलिफोन	:	08573–289501
मोबाइल	:	09866090081

उपलब्धियां

- अपनी एक हेक्टेयर जमीन पर श्री के. माधव रेड्डी द्वारा 85 चारा किस्मों तथा तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल एवं आन्ध्र प्रदेश से संकलित प्रजातियों की खेती की जा रही है। अपने अनुभव तथा गहन आकलन के आधार पर श्री रेड्डी ने प्रचलित कृषि परिस्थितियों का ध्यान रखते हुए खेती के लिए सर्वाधिक उपयुक्त 40 किस्मों (ग्यूनिया की 20 किस्में, नेपियर की 15 किस्में, वृक्षों की 15 किस्में) की पहचान की है।
- श्री रेड्डी न केवल अलग–अलग किस्मों की खेती करते हैं वरन् दुधारू पशुओं में इन किस्मों की स्वादिष्टता और उपज सुधार की भी जांच करते हैं। किसानों और प्रसार कार्मिकों के लिए श्री रेड्डी एक रोल मॉडल हैं। श्री रेड्डी, आन्ध्र प्रदेश तथा पड़ोसी राज्य कर्नाटक, तमिलनाडु, केरल तथा महाराष्ट्र के किसानों, अनुसंधानकर्मियों एवं निजी डेयरियों को बीजों तथा पौध सामग्री की आपूर्ति करते हैं। श्री रेड्डी द्वारा आन्ध्र प्रदेश के चित्तूर जिले में सेवा एवं मार्गदर्शन प्रदान करने से चारा फसल की खेती का क्षेत्रफल 50,000 हेक्टेयर तक पहुंच गया।
- श्री रेड्डी प्रशिक्षण कार्यक्रमों, रेडियो वार्ता, टेलिविजन–शो एवं समाचार–पत्रों में प्रकाशित अपने लेखों के माध्यम से चारा उत्पादन करने हेतु डेयरी किसानों को प्रोत्साहित करने एवं नवीन प्रौद्योगिकियों के प्रसार कार्य में संलग्न हैं। आई.के.पी. के तहत राज्य के पशु पालन विभाग ने श्री रेड्डी की पहचान एक संसाधन व्यक्ति एवं किसान सुविधक के रूप में की है।
- श्री रेड्डी को भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI), नई दिल्ली का 'प्रगतिशील किसान पुरस्कार' मिल चुका है। इसके साथ ही इन्हें राज्य किसान संघ का सर्वश्रेष्ठ किसान पुरस्कार, गांव दुग्ध सोसायटी का सर्वश्रेष्ठ किसान पुरस्कार, किसान वाणी कार्यक्रम के लिए प्रसार भारती, नई दिल्ली से प्रमाण–पत्र, तथा चारा उत्पादन के लिए जिला कलेक्टर से योग्यता प्रमाण–पत्र मिल चुका है।
- श्री रेड्डी चित्तूर जिले के आत्मा के ब्लॉक अध्यक्ष; श्री वेंकटेश्वर पशु चिकित्सा विश्वविद्यालय, तिरूपति में योजना बोर्ड के सदस्य; तथा आचार्य एन.जी. रंगा कृषि विश्वविद्यालय, हैदराबाद की आर.ई.ए.सी. बैठक के आमंत्रित सदस्य हैं।

पिता का नाम	श्री ब्रहम सिंह	
आयु	65 वर्ष	
शिक्षा	10वीं पास	
कृषि भूमि	20 एकड़	
मुख्य फसल	मटर, धान, गेहूं, चना, मसूर, आलू एवं मूंग	

पता

गांव : रसूलपुर
पोस्ट : रसूलपुर
जिला : गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
मोबाइल : 09997409892

उपलब्धियां

- श्री मलूक सिंह, उत्तर प्रदेश के एक जाने पहचाने बीज उत्पादक हैं। इन्होंने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में मटर की अर्केल किस्म का बीज उत्पादन प्रारंभ किया। बाद में इन्होंने ऑन फार्म बीज उत्पादन, बीज प्रसंस्करण और बीजों का विपणन कर अपनी खेती को विविधता प्रदान की।
- वर्तमान में श्री मलूक सिंह न केवल अपने खेत पर बल्कि अनुबंध खेती के माध्यम से भी मटर, गेहूं, धान, आलू, मूंग तथा अरहर आदि की उच्च उपजशील किस्मों का बीज उत्पादन कर रहे हैं। आज इन्हें मटर की अर्केल किस्म तथा अन्य उन्नत किस्मों का एक प्रतिष्ठित बीज उत्पादक माना जाता है।
- श्री मलूक सिंह पूरे भारत वर्ष में मटर के बीजों की आपूर्ति करते हैं। इसके साथ ही श्री सिंह अपने जिले में तथा आसपास के जिलों में किसानों के बीच मटर, गेहूं, धान, चना, मसूर एवं सब्जियों की उच्च उपजशील किस्मों को बढ़ावा देने का प्रयास करते हैं।
- अब इन्होंने अपने गांव में एक आधुनिक बीज प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित किया है। इसके साथ ही इन्होंने पालक, गेहूं, मसूर, मूंग, धान तथा लोबिया के बीजों का प्रसंस्करण करना भी प्रारंभ किया है और उसकी मार्केटिंग देश के विभिन्न भागों में सीधे तौर पर कर रहे हैं। श्री मलूक सिंह द्वारा ''राष्ट्रीय किसान संगठन'' के माध्यम से विभिन्न प्रसार गतिविधियां चलाई जा रही हैं।
- इनके बीज प्रसंस्करण संयत्र पर लगभग 60 व्यक्तियों को साल भर रोजगार मिला हुआ है।
- गांव तथा आस पास के क्षेत्र में गुणवत्ता के बीजों की आपूर्ति के लिए किसानों के बीच श्री मलूक सिंह काफी लोकप्रिय है। इनके द्वारा मटर के अर्केल किस्म के बीजों की अपूर्ती राजेस्थान, मध्यप्रदेश, उत्तराखण्ड, महाराष्ट्र तक की जाती है
- कृषि में उल्लेखनीय योगदान के लिए श्री मलूक सिंह को विभिन्न मंचों पर अनेक राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार मिल चुके हैं।
- कृषि में उल्लेखनीय योगदान के लिए श्री मलूक सिंह को वर्ष 2013 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा 'आईएआरआई फेलो पुरस्कार' प्रदान किया गया।

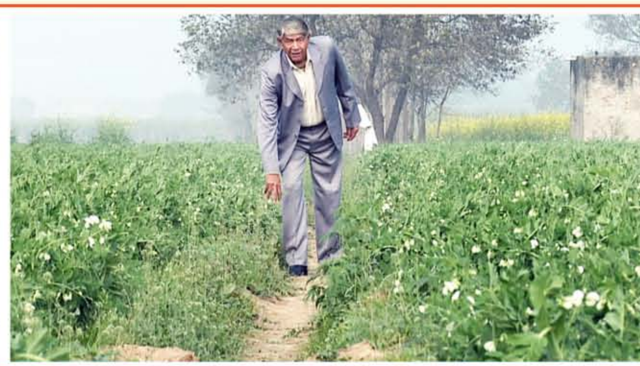

श्री नरबीर सिंह

पिता का नाम	श्री कंवरपाल	**पता**
आयु	38 वर्ष	गांव : बदरपुर सैद पोस्ट : बदरपुर सैद जिला : फरीदाबाद, हरियाणा मोबाइल : 09999894528
शिक्षा	हायर सेकेण्डरी	
कृषि भूमि	7 एकड़	
मुख्य फसल	गेहूं, धान एवं सब्जियां	

उपलब्धियां

- श्री नरबीर सिंह, गांव बदरपुर सैयद के एक प्रगतिशील किसान हैं और ये पिछले दस वर्षों से भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के साथ विभिन्न परियोजनाओं से जुड़े रहे हैं। इन्होंने वैज्ञानिक विधि के साथ पाम्परिक खेती का मिश्रण कर सफलतापूर्वक अपने लक्ष्य हासिल किए। इन्होंने खेती की उन्नत तकनीकों को सीखकर उनका इस्तेमाल अपने खेत में गेहूं व धान की पैदावार बढ़ाने में किया।
- श्री सिंह अपने साथी किसानों को तुलनात्मक रूप से सस्ते दामों पर गुणवत्ता बीज बेचते हैं। इससे इन्हें सामाजिक सेवा करने के साथ–साथ अच्छी आमदनी भी हो जाती है।
- श्री सिंह स्वयं अपने बीजों को बाजार में बेचते हैं और अन्य किसानों को गुणवत्ता के बीजों का प्रयोग कर अपनी फसलों की पैदावार बढ़ाने के तरीकों एवं विधियों के बारे में सलाह देते हैं।
- श्री सिंह अपने कृषि कार्य से पूरी तरह संतुष्ट हैं और इनमें कृषि कार्यों को लेकर एक उत्साह है। पूसा संस्थान से तकनीकों के गुर हासिल कर श्री सिंह मूल्य वर्धन उत्पादन तकनीकों के कार्य में शामिल हैं और साथ ही अन्य किसानों को मार्गदर्शन प्रदान कर रहे हैं।
- श्री नरबीर सिंह किसानों के सशक्तीकरण के लिए आधुनिक कृषि रीतियों को अपनाने हेतु एक पंजीकृत समूह के संस्थापक सदस्य हैं। आजकल इनके द्वारा देसी तकनीकों को अपनाकर गुणवत्ता धान की खेती की जा रही है जिसमें रसायनों का बहुत कम प्रयोग किया जा रहा है। इनके द्वारा के.आर.बी.एल. कम्पनी को धान का निर्यात किया जा रहा है।
- इसके अलावा श्री नरबीर सिंह ने बीज उत्पादन, कटाई उपरांत प्रबंधन तथा जैव कीटनाशक उत्पादन आदि पर अपने कौशल को बढ़ाने के लिए विभिन्न प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भागीदारी की है। इन्होंने राष्ट्रीय बीज निगम से अनुबन्ध कर करेले के संकर बीज उत्पादन, गाजर के बीज उत्पादन तथा टमाटर के बीज उत्पादन द्वारा अपनी आय में वृद्धि की है।
- विपण मं अपनी समझ–बूझ का इस्तेमाल करते हुए उचित समय पर धान की फसल को बेच कर इन्होंने 30 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर अधिक लाभ कमाया।

श्री कुलदीप सिंह राव

पिता का नाम	श्री शियो सिंह	**पता**	
आयु	33 वर्ष	गांव	: बदरपुर सैद
शिक्षा	हायर सेकेण्डरी	पोस्ट	: बदरपुर सैद
		जिला	: फरीदाबाद, हरियाणा
कृषि भूमि	22 एकड़	मोबाइल	: 9582616615
मुख्य फसल	गेहूं, धान एवं सब्जियां	ई–मेल	: kuldeep25481@gmail.com

उपलब्धियां

• श्री कुलदीप सिंह राव पिछले 15 वर्षों से कृषि कार्यों से जुड़े हुए हैं। इन्होंने वैज्ञानिक विधियों के साथ पारम्परिक कृषि का सफल तालमेल बनाया है। श्री राव वर्ष 2005 से भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली से जुड़े हैं जहां इन्होंने कृषि की उन्नत तकनीकों के गुर सीखे और उन्हें अपने खेत में अपनकार गेहूं तथा धान के उत्पादन में वृद्धि की।

• श्री राव भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की किस्मों का बीज उत्पादन करके उसकी बिक्री अन्य किसानों को कर रहे हैं। किसान भाई इनसे उचित मूल्य पर गुणवत्ता बीज हासिल कर रहे हैं।

• ये स्वयं अपने बीजों की बिक्री करते हैं और किसानों को गुणवत्ता बीजों का उपयोग करके अपनी फसल की पैदावार में वृद्धि के तरीके बताते हैं।

• श्री राव किसानों के सशक्तीकरण के लिए आधुनिक कृषि रीतियों को अपनाने हेतु एक पंजीकृत समूह के संस्थापक सदस्य हैं। श्री राव ने अपने खेत में देसी तकनीकों का इस्तेमाल कर गुणवत्ता धान की खेती की है।

• श्री राव रसायनों का बहुत कम उपयोग किया है। इनके द्वारा विकसित चौकेना से धान में किसी कीटनाशक का छिड़काव किए बिना बकानी रोग की रोकथाम करने में मदद मिली है।

• सब्जी की अगेती खेती करके (जैसे– टमाटर, मिर्च, बैंगन, तोरी, घीया, फूलगोभी आदि) स्थानीय एवम् दिल्ली की आजादपुर मंडी में सप्लाई करके लाभ अर्जित कर रहे हैं।

• श्री राव ने बेमौसमी सब्जियों की पौध उगाने के लिए अपने खत पर एक जालघर का निर्माण किया हुआ है जिसमें कीटों के संक्रमण रहित पौध समय से पूर्व उगाकर मुख्य खेत में लगाकर लाभ अर्जित कर रहे हैं।

• इन्होंने अपनी कृषि का अधिकतर यान्त्रिकीकरण किया हुआ है, इनके पास कृषि यन्त्र जैसे ट्रैक्टर, लेजर लेवलर, पडलिंग मशीन, चारा मशीन, ढुलाई के लिए ट्राली आदि सभी मौजुद है जिनकों ये कस्टम हायरिंग पर भी प्रयोग करते है।

• श्री राव अपने खेत में वर्मी कम्पोस्ट इकाई स्थापित करके तथा सब्जी फसलों उपयोग से निवेश लागत बचा रहे हैं। इन्होंने पूसा संस्थान के तकनीकी मार्गदर्शन में सब्जियों का बीज उत्पादन किया और इसे स्थानीय बाजार में बेचकर आय वृद्धि की।

श्री मनमोहन सिंह धूत

		पता	
पिता का नाम	स्व. श्री चंपालाल धूत	गांव	: 29, मल्हार गंज, कन्नौद
आयु	63 वर्ष	जिला	: देवास, मध्य प्रदेश
शिक्षा	बी.एससी., एल.एल.बी.	मोबाइल	: 9300750339
कृषि भूमि	लगभग 600 एकड़ (1000 एकड़ संयुक्त)		
मुख्य फसलें	गेहूं बीज प्रजनक, गन्ना, मूंग, कपास, टमाटर, अनार व मिर्च		

उपलब्धियां

• अपने कौशल, स्वाध्याय और व्यावहारिक अनुभवों के कारण वैज्ञानिकों से कहीं बढ़–चढ़कर ज्ञान रखने वाले और जिज्ञासु होने के नाते खेती में नए–नए प्रयोग करते रहने वाले अध्येता कृषक श्री मनमोहन सिंह धूत, जिला देवास, मध्य प्रदेश से सम्बंध रखते हैं।

• खेती में नए–नए तरीकों की तलाश में श्री मनमोहन सिंह धूत शोध संस्थानों के चक्कर लगाते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के इंदौर स्थित क्षेत्रीय केन्द्र पर पहुंचे और वहीं से उनकी कृषि यात्रा में नया मोड़ आया। श्री धूत की लग्न और उत्साह को देखते हुए क्षेत्रीय केन्द्र, इंदौर ने सहभागिता आधार पर 'धूत कृषि फार्म' में बीजोत्पादन करना प्रारंभ किया। बीजोत्पादन के लिए दक्षता और प्रक्रिया की बारीकियों को सीखने में संस्थान के वैज्ञानिकों ने इनकी मदद की। क्षेत्रीय केन्द्र, इंदौर ने इनके फार्म के कुछ हिस्से को अपनाया, शेष हिस्से में श्री धूत ने स्वतंत्र रूप से उन्हीं मानकों को अपनाकर बीज उत्पादन करना प्रारंभ कर दिया और प्रति वर्ष लगभग 5,000 क्विंटल बीज उगाया। धीरे–धीरे इन्होंने गेहूं की अगेती, पछेती और समय पर बुवाई वाली किस्मों तथा बारानी, एक सिंचाई, दो सिंचाई, तीन सिंचाई व चार सिंचाई आदि परिस्थितियों तथा रोगरोधिता पर प्रयोग शुरू किया और बीज उत्पादन प्रारंभ किया। इसके साथ ही गेहूं उत्पादन की विभिन्न विधियों जैसे कि एक्वाड्रिल, हरी खाद, कम्पोस्ट आदि प्रौद्योगिकियों पर भी प्रयोग प्रारंभ किए। श्री धूत की प्रसिद्धि बढ़ने लगी और आसपास के क्षेत्रों के किसान इनके फार्म का दौरा करने आने लगे।

• श्री मनमोहन सिंह धूत अपने फार्म में केवल गेहूं ही नहीं बल्कि सोयाबीन, कपास, मक्का, चना, मूंग, ज्वार व हल्दी की खेती भी करते हैं। इन्होंने 50 एकड़ क्षेत्र में अनार का बाग लगाया है।

• श्री धूत बड़े पैमाने पर वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन करते हैं। इनके पास 500 पशुओं की बड़ी गोशाला भी है जिसमें सभी गायें स्थानीय नस्ल की हैं। इन्होंने गोबर व गोमूत्र का उपयोग वर्मी कम्पोस्ट एवं गोबर गैस बनाने के लिए किया। श्री धूत, खेती में कम्पोस्ट, जैविक खाद, गोमूत्र, नीम व करंज आदि को अपनाने के हिमायती हैं। श्री धूत, रसायनों का इस्तेमाल करने की बजाय हाथों/खुरपी की मदद से खरपतवार नियंत्रण करवाते हैं, चाहे इसके लिए कितने भी श्रमिक लगाने पड़ें। इतने बड़े फार्म की देखरेख के लिए कुल 90 श्रमिक नियमित रूप से मासिक वेतन पर कार्य करते हैं।

श्री मुकेश यादव

पिता का नाम	श्री राम सरन	**पता**
आयु	39 वर्ष	गांव : मंझावली
शिक्षा	स्नातक	पोस्ट : मंझावली जिला : फरीदाबाद, हरियाणा
कृषि भूमि	20 एकड़ निजी व 250 एकड़ पट्टे पर	मोबाइल : 9350234045
मुख्य फसल	गेहूं, धान, मूंग, पपीता, हल्दी, पोपलर, केला	ई–मेल : raomukesh0483@gamail.com

उपलब्धियां

• श्री मुकेश यादव ने वर्ष 2003 में गेहूं की उन्नत प्रजातियां (एचडी 2851, एचडी 2912 एवं डब्ल्यूआर 544) तथा धान की प्रजातियां (पूसा बासमती–1, पूसा बासमती–1121 एवं पूसा 2511) का फसलचक्र अपनाकर अच्छा उत्पादन हासिल किया जिससे इनकी आय 25,000 रूपये से बढ़कर 48,000 रूपये हो गई। साथ ही इन्होंने धान एवं गेहूं का बीज उत्पादन कर अपनी आय को रूपये 48,000 प्रति एकड़ से बढ़ाकर रूपये 84,000 प्रति एकड़ तक कर लिया। इनके द्वारा किए गए बीज उत्पादन से उत्पन्न बीजों को फरीदाबाद के 135 एवं पलवल के 165 किसानों ने अपने खेतों में अपनाया।

• श्री यादव ने गेहूं–मूग–धान–गन्ना फसलचक्र के साथ वर्मीकम्पोस्ट एवं ट्राइकोडर्मा का अनुप्रयोग कर पानी की 20 से 40 प्रतिशत तक बचत की, खरपतवारनाशक रसायनों के इस्तेमाल को 60 प्रतिशत से घटाकर 20 प्रतिशत तक किया जिससे इनकी आय में 15 से 25 प्रतिशत तक की वृद्धि हुई।

• श्री यादव ने धान में एसआरआई तकनीक से बीज, खाद्य, रसायनों एवं समय की बचत की जिससे खेती की लागत रूपये 4200 प्रति हेक्टेयर कम हुई। उन्नत कृषि तकनीकों के अंतर्गत इन्होंने लेजर लेवलर से भूमि को समतल करने, शून्य जुताई से पानी की बचत करने के साथ–साथ रूपये 5400 प्रति हेक्टेयर की बचत की, गहरी जुताई (>16 इंच) एवं सूक्ष्म सिंचाई तकनीकों से फलों, फूलों व सब्जी उत्पादन में रूपये 4200 प्रति हेक्टेयर की बचत अर्जित की। इसके साथ ही जैव उर्वरकों, वर्मीकम्पोस्ट, ट्राइकोडर्मा एवं राइजोबियम का अपनी खेती में प्रयोग करके खेती की लागत में रूपये 16,800 तक की बचत की।

• इन्होंने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की नवीनतम प्रजातियों को किसान क्लबों के माध्यम से किसानों तक पहुंचाया और साथ ही नवीनतम तकनीकों का प्रसार भी किया। इन्होंने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के साथ भागीदारी करते हुए तकनीकों के विश्लेषण, नई तकनीकों के विकास, बीज उत्पादन एवं उद्यमशीलता विकास में अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।

• कृषि में इनके द्वारा किए गए उल्लेखनीय कार्य के लिए श्री यादव को अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं जिनमें चौधरी चरण सिंह कृषि विश्वविद्यालय का 'सराहना पुरस्कार'; कृषि विभाग, फरीदाबाद का 'नवोन्मेषी किसान पुरस्कार'; हरियाणा के मुख्यमंत्री द्वारा 'सर्वोत्तम कृषि कार्य पुरस्कार–2014'; शेरे कश्मीर कृषि विश्वविद्यालय, जम्मू का 'नवोन्मेषी किसान पुरस्कार' 2015' प्रमुख हैं। श्री मुकेश यादव लगातार पिछले 10 सालों से कृषि मेला में भाग लेते रहे हैं और इन्होंने तकनीकों के प्रसार पर व्याख्यान भी दिए हैं।

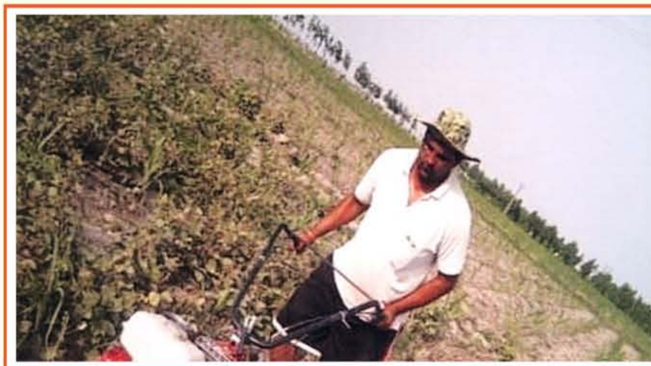

श्री भागमल सिंह

पिता का नाम	श्री भगवान सिंह
आयु	50 वर्ष
शिक्षा	10वीं पास
कृषि भूमि	2 एकड़
मुख्य फसल	धान (बीज), शिमलामिर्च

पता

गांव : भूरीगढ़ी
जिला : गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश
मोबाइल : 09310366512

उपलब्धियां

• श्री भागमल सिंह ग्राम भूरीगढ़ी जिला गजियाबाद, उत्तर प्रदेश के निवासी हैं। श्री सिंह धान की नवीनतम प्रजाति पी.आर.एच. 10, पी.बी. 1, पूसा 1121, पूसा सुगंध 2, पूसा सुगंध 3, पूसा सुगंध 5 इत्यादि लगाकर उच्च उत्पादन क्षमता के साथ–साथ उच्च गुणवत्ता उत्पादन करते हुए प्रगति कर रहे हैं। श्री भागमल सिंह ने 0.4 हेक्टर क्षेत्रफल में हाइब्रिड धान पीआरएच 10 का बीज उत्पादन करके 60 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के उत्पादन के साथ लाभ कमाया। श्री भागमल सिंह द्वारा उत्पन्न किया गया संकर बीज एक लाख बारह हजार रुपये का बिका जिसमें से लागत खर्च निकालकर इन्हें पूरा ₹ 95,000 का शुद्ध लाभ मिला।

• चार बीघा खेत में लगाये गये मिर्च की फसल से श्री भागमल सिंह को ₹ 2,50,000/– की आय हुई जिसका लागत खर्च निकालने के बाद इन्हें 2 लाख रूपये का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ। इस प्रकार इन्हें केवल खरीफ की फसल में ही लगभग 2 एकड़ क्षेत्र से ₹ 2,95,000/– का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ।

• इनकी सफलता को देखकर गांव के अन्य किसान भी इन्हीं की तर्ज पर खेती करने के लिए श्री भागमल सिंह से सलाह लेते हैं। क्षेत्र में नकदी फसलें उगाने की चाहत किसानों में जाग्रत होने लगी है। आज श्री भागमल सिंह अन्य किसानों के लिए प्रेरणा के स्रोत बने हुए हैं। आज श्री भागमल सिंह एक अच्छे सब्जी उत्पादक के साथ–साथ एक अच्छा बीज उत्पादक भी बनने की ओर अग्रसर हैं।

श्री श्रीरामामूर्ति चुंदरी

		पता		
पिता का नाम	श्री चेंचय्या चुंदरी			
आयु	52 वर्ष	पोस्ट	:	चीरवनुप्पालापडु, अम्मनबरोलु
शिक्षा	12वीं पास (इन्टरमीडिएट)	जिला	:	प्रकाशम – 523 180 आन्ध्र प्रदेश
कृषि भूमि	27 एकड़	मोबाइल	:	9490085020
मुख्य फसलें	धान, चना, अरहर, अरण्डी तथा तम्बाकू	ई–मेल	:	chundurisreeramamurthy@gmail.com

उपलब्धियां

• श्री श्रीरामामूर्ति चुंदरी ने भारतीय सेना से सेवानिवृत्ति के उपरान्त खेती करना प्रारंभ किया। इनके खेत पर किए गए आचार्य एन.जी.रंगा कृषि विश्वविद्यालय के ऑन–फार्म परीक्षण के परिणामस्वरूप वैज्ञानिकों द्वारा चने की जेजी 11, जेएकेआई 9218 (देसी) तथा आईसीसीई 95333 एवं केएके 2 (काबुली) किस्मों की सिफारिश की गई।

• मिट्टी में जैविक पदार्थों की मात्रा को बढ़ाने के लिए इन्होंने गोबर की खाद, का इस्तेमाल किया, हरी खाद वाली फसलें उगाईं, नीम की निंबोली के घोल तथा पंचगव्य का उपयोग किया। इन्होंने शुष्क जड़ सड़न के जैविक प्रबंधन में गोबर की खाद के साथ ट्राइकोडर्मा विरिडी (3 किग्रा./एकड़) का मृदा में अनुप्रयोग प्रभावी रुप से किया है।

• हेलिकोवर्पा आर्मीजेरा के प्रबंधन में 20:4 की दर से चना के साथ धनिये की अंतर फसल लेना प्रभावी पाया। श्री चुंदरी मृदा व जल संरक्षण सिद्धांतों का पालन करते हुए खेती करते हैं और नमी संरक्षण के लिए फसल की पंक्तियों के बीच क्यारी खांचा तैयार करने की तकनीक अपनाते हैं। इसके साथ ही श्री चुंदरी पलवार के रूप में फसल के छिलके का उपयोग करते हैं तथा जल संचयन के प्रयोजन हेतु वर्षा जल का संरक्षण करते हुए खेत तालाब बनाते हैं।

• श्री चुंदरी ने मक्का (स्वीट कॉर्न) तथा रबी अरहर के साथ अंतर फसल के रूप में चना जैसी लाभप्रद फसलें अपनाई हैं जिसके परिणामस्वरूप चना, तम्बाकू तथा खरीफ अरण्डी आदि की अकेली फसल लेने वाली रीतियों की तुलना में 1:2.8 के अनुपात पर प्रति इकाई क्षेत्रफल लाभ बढ़ा है। सितम्बर के महीने में अगेती रबी फसल के रूप में अरहर तथा अरण्डी फसल की बुवाई करने से टिकाऊ लाभ मिला। श्री चुंदरी एकीकृत कीट प्रबंधन पर विभिन्न फसलों में ऑन–फार्म प्रदर्शन के आयोजन और प्रौद्योगिकी हस्तांतरण जागरूकता के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र के विकास के मिशन के साथ प्रारंभ किए गए नाबार्ड किसान क्लब कार्यक्रम के अंतर्गत श्री वेंकटेश्वर किसान क्लब (विकास स्वैच्छिक वाहिनी क्लब) के मुख्य समन्वयक के रूप में कार्य कर रहे हैं।

• श्री चुंदरी को अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं जिनमें ASPEE फाउंडेशन का वर्ष 2006 का एल.एम. पटेल किसान पुरस्कार; स्वामीनाथन रिसर्च फाउंडेशन, चेन्नई का जमशेदजी टाटा नेशनल विर्चुयल एकेडमी फेलोशिप तथा आचार्य एन.जी. रंगा किसान संस्थान, बंगलुरू का सर्वश्रेष्ठ किसान पुरस्कार शामिल है।

श्री विलास अनंतराव ठाकुर

पिता का नाम	श्री अनंतराव लक्ष्मण ठाकुर
आयु	53 वर्ष
शिक्षा	स्नातक (बी.कॉम)
कृषि भूमि	55 एकड़
मुख्य फसलें	आम, काजू एवं नारियल

पता

अनंत पैलेस म.नं. 935, गवडादेववाडी
पोस्ट : मठ
तालुका : वेन्गुर्ला
जिला : सिधुदुर्ग – 416 516
महाराष्ट्र
टेलिफोन : 02366 264243
मोबाइल : 9422436681
ई–मेल : qvpindia@yahoo.com

उपलब्धियां

• श्री विलास अनंतराव ठाकुर, महाराष्ट्र राज्य के एक छोटे से गांव मठ (तालुका वेन्गुर्ला, जिला सिन्धुदुर्ग) के एक प्रगतिशील किसान हैं जिन्होंने सभी आधुनिक प्रौद्योगिकियों का प्रयोग करते हुए अपनी बंजर भूमि पर काजू की खेती की और काजू उत्पादकता में ऊंचाईयां हासिल कीं। बी.कॉम. डिग्री हासिल करने के उपरान्त इन्होंने अपने कृषि के पैतृक व्यवसाय में कदम रखा। इनकी कृषि भूमि आंशिक उपजाऊ और पानी को कम धारण करने वाली क्षमता की थी। इन्होंने आधुनिक प्रौद्योगिकियों का उपयोग करके उच्च उपजशील किस्मों के रूप में वेन्गुर्ला–4 तथा वेन्गुर्ला–7 का चयन किया।

• इन्होंने एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन अपनाया और प्रत्येक वृक्ष को एनपीके की दो अलग–अलग खुराक पहली जून के महीने में तथा दूसरी अगस्त में दी। इन्होंने प्रति हेक्टेयर 4 टन की दर से घूरे की खाद का अनुप्रयोग आधारीय खुराक के रूप में किया। इन्होंने अपने वृक्षों की तीन बार सिंचाई करने में उपलब्ध जल का इस्तेमाल बड़े सोच–विचार कर किया जैसे कि बेहतर फल स्थापन के लिए जनवरी के प्रथम सप्ताह में, फलों को गिरने से रोकने के लिए जनवरी के दूसरे सप्ताह में और फल तथा गिरी का आकार बढ़ाने के लिए जनवरी के तीसरे सप्ताह में। श्री ठाकुर ने समय–समय पर की गई हल्की कटाई–छंटाई कर नवोन्मेषी तकनीकों के माध्यम से वृक्षों की बेहतर आकृति को बनाए रखा। इन्होंने सितम्बर तथा अक्तूबर में सूक्ष्म पोषक तत्वों का छिड़काव किया और सावधानीपूर्वक फसल सुरक्षा उपायों को अपनाया। श्री ठाकुर बाकी काजू उत्पादकों की तुलना में एक महीने पूर्व ही फसल की कटाई करने में सफल रहे और इन्होंने प्रति हेक्टेयर 3.5 टन बीज गिरी की उत्पादकता हासिल की।

• इन्होंने आम की खेती भी की और मुम्बई ए.पी.एम.सी. के बाजार में अपने ट्रेडमार्क 'सिन्धुरत्न' अल्फांसो आम फलों का व्यापार किया। इन्होंने बागवानी के साथ तालमेल स्थापित करते हुए डेयरी उद्यम भी स्थापित किया। श्री ठाकुर ने आम तथा काजू पौधों में उगी फालतू घास का इस्तेमाल भैंस तथा गायों के चारे के रूप में किया और डेयरी पशुओं के गोबर को जैविक उर्वरक के रूप में पौधों में डाला।

• श्री ठाकुर को एल.एम. पटेल पुरस्कार मिल चुका है। इसके साथ ही इन्हें वर्ष 2010 में महाराष्ट्र सरकार का ''उद्यान पंडित'' पुरस्कार भी मिल चुका है।

श्री केतन भाई जस भाई पटेल

पिता का नाम	श्री जस भाई खोड़ा भाई पटेल
आयु	41 वर्ष
शिक्षा	स्नातक, बी.एससी. (जीवविज्ञान), प्रथम वर्ष
कृषि भूमि	15 एकड़
मुख्य फसलें	केला, आलू एवं गेहूं

पता

डाक : बोरिया

तालुका : पेटलाड

जिला : आणंद – 388130, गुजरात

मोबाइल : 09825458529

ई–मेल : patelketan529@yahoo.com

उपलब्धियां

• श्री केतन भाई जस भाई पटेल द्वारा गाय का मल–मूत्र, छाछ, गुड़, दाल का आटा, बरगद के पेड़ के नीचे की मिट्टी, वन वृद्धि पाउडर को शामिल कर एकीकृत जैव पोषक तत्व प्रबंधन जैसा एक नवीन अन्वेषण किया गया जो कि छोटे व सीमान्त किसानों के लिए मददगार है और इसके प्रयोग से खेती की लागत में कमी आने के साथ–साथ पैदावार भी बढ़ी है। एकीकृत जैव पोषक तत्व प्रबंधन से मृदा की उर्वरता में सुधार लाने के साथ ही मृदा व जल का संरक्षण बढ़ा। इस नवीन अन्वेषण से औसतन 30 प्रतिशत तक रासायनिक फर्टिलाइजरों का उपयोग कम हुआ।

• श्री पटेल ने केले के तने से निकलने वाले रेशे की आपूर्ति नवसारी कृषि विश्वविद्यालय, नवसारी को की जहां इसका इस्तेमाल गुणवत्ता वाले कागज, विशेष कपड़े, कैंडी तथा अन्य वस्तुओं को बनाने में किया गया। रेशा उत्पादन से 42,000/– रुपये प्रति हेक्टेयर है। श्री पटेल ने मदर डेयरी तथा एन.डी.डी.बी. के माध्यम से अरब देशों (दोहा व दुबई) को केला का निर्यात किया और अच्छा लाभ कमाया। इससे अन्य केला उत्पादकों को भी केला निर्यात करने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा और वे अधिक लाभ कमा सकेंगे।

• गुजरात में पहली बार ग्रीष्मकाल में केला उत्पादन (ऑफ सीजन उत्पादन) की शुरूआत श्री पटेल ने की और अधिकतम लाभ कमाया। इससे केला उत्पादकों को अपनी आमदनी बढ़ाने में भरपूर मदद मिलेगी। अंतर–राष्ट्रीय बाजार के मानकों को पूरा नहीं करने वाले शेष केला उत्पादन के वैफर्स बनाये जाते हैं। वैफर निर्माण से श्री पटेल 9,000/– रुपये प्रति हेक्टेयर का लाभ अर्जित कर रहे हैं।

• आजीविका में सुधार के लिए नई तकनीकों के प्रभाव को महसूस किया। इन्होंने गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री को "एकीकृत जैव पोषक तत्व प्रबंधन का उपयोग करके गुजरात में किसानों को अनुमानित लाभ" का सुझाव दिया। इस तकनीक का उपयोग गुजरात में 80 लाख हेक्टेयर क्षेत्र में 14 फसलों पर किए जाने से किसानों को 11,287 करोड़ रुपये की अतिरिक्त आमदनी हासिल करने में मदद मिलेगी और उनके आमदनी तथा जीवन स्तर में आमूल–चूल सुधार आएगा।

• नाबार्ड द्वारा प्रशिक्षण दिए जाने के फलस्वरूप लगभग 400 किसानों द्वारा एकीकृत जैव पोषक तत्व प्रबंधन तकनीक को अपनाया गया है। श्री पटेल ने प्रक्षेत्र भ्रमण व किसान शिविर, कृषि महोत्सव व कृषि प्रदर्शनी एवं मेलों में भाग लिया। श्री पटेल द्वारा आत्मा के एक सदस्य के रूप में कार्य किया गया। इसके साथ ही श्री पटेल, आणंद कृषि विश्वविद्यालय की अनुसंधान परिषद एवं स्थानीय प्रबंधन समिति के सदस्य तथा प्रसार शिक्षा संस्थान, आणंद की स्थानीय प्रबंधन समिति के सदस्य भी रहे हैं। श्री पटेल को अनेक पुरस्कार व सम्मान मिल चुके हैं जिसमें गुजरात सरकार का प्रतिष्ठित पुरस्कार "सरदार पटेल कृषि संशोधन पुरस्कार, 2009 भी शामिल हैं।

श्री भावनम जयारामी रेड्डी

पिता का नाम	श्री भावनम तिरूपति रेड्डी	पता		
आयु	56 वर्ष	गांव	:	75, तयालुर, पेडाकुरापडु मंडल
शिक्षा	10वीं पास	जिला	:	गुंटूर – 522436, तेलंगाना
कृषि भूमि	10 एकड़	मोबाइल	:	09948768683
मुख्य फसलें	कपास, मिर्च एवं दलहन (अरहर, उड़द व चना), चावल	ई–मेल	:	bjr.75tyalluru@gmail.com

उपलब्धियां

• श्री भावनम जयारामी रेड्डी, तेलंगाना राज्य के एक प्रगतिशील किसान हैं। इन्होंने संकर कपास की खेती प्रारंभ की और साथी किसानों के बीच कपास में चूसक कीटों के लिए तना अनुप्रयोग को प्रचलित किया। इन्होंने फसलों एवं फसलचक्र प्रणालियों में एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन एवं एकीकृत कीट प्रबंधन के बारे में किसान समुदाय के बीच जागरूकता का सृजन किया। श्री रेड्डी ने सूखे के समय चावल–परती (fellow) स्थिति में शून्य जुताई मक्का को अपनाने का मार्ग दिखाया।

• श्री रेड्डी संसाधनों व निवेश की बचत करने और निवेश पुनर्चक्रण (recycling) में उल्लेखनीय कार्य कर रहे हैं। किसान समुदाय के लाभ के लिए श्री रेड्डी भारतीय कपास निगम (CCI) के सहयोग से एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन एवं एकीकृत कीट प्रबंधन को बढ़ावा दे रहे हैं। इन्होंने धान में जल की बचत करने वाली प्रौद्योगिकियों को अपनाकर सूक्ष्म सिंचाई तथा मिट्टी की जांच के आधार पर उर्वरक प्रबंधन प्रारंभ किया है। श्री रेड्डी द्वारा चावल परती मक्का स्थिति में मृदा का स्वास्थ्य सुधारने के लिए हरी खाद फसल उगाई जा रही है। इन्होंने एस.आर.आई. तकनीक को अपनाया और किसान समुदाय के बीच इसे बढ़ावा दिया।

• वर्ष 1974 में संकर कपास की खेती करने वाले श्री रेड्डी प्रथम किसान थे जिन्होंने 10 क्विंटल प्रति एकड़ की उच्च उपज हासिल की थी। इन्होंने बीपीटी 5204 मिनीकिट की खेती कर 30 बैग प्रति एकड़ की उपज हासिल की। श्री रेड्डी ने बीपीटी 5204, एमटीयू 2067 एवं बीपीटी 4358 का आधारीय बीजोत्पादन कर किसानों को वितरित किया।

• इन्होंने क्षेत्रीय कृषि अनुसंधान केन्द्र, लाम तथा कृषि विभाग द्वारा आयोजित विभिन्न फसलों में नवीन प्रौद्योगिकियों से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया तथा अन्य किसानों में जागरूकता का सृजन किया। इन्होंने विभिन्न फसलों में मिनीकिट किस्मों की उपयुक्तता की जांच की।

• श्री रेड्डी ने जारी नवीन किस्मों का खेती में उपयोग कर मण्डल एवं जिला स्तर पर उच्चतर उपज हासिल की। इन्होंने उड़द, अरहर तथा चना का आधारीय बीजोत्पादन कर अन्य किसानों को उसकी आपूर्ति की। इन्होंने अनुसंधान केन्द्रों का दौरा कर तथा साथ ही वैज्ञानिक समुदाय के साथ आपसी बातचीत कर अपनी तकनीकी जानकारी बढ़ाई। श्री रेड्डी को कृषि में इनके नवोन्मेषी कार्यों के लिए अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं।

मोहम्मद अशरफ शेख

पिता का नाम	स्व. मोहम्मद जमान शेख
आयु	41 वर्ष
शिक्षा	हायर सेकेण्डरी (10+2)
कृषि भूमि	3.75 एकड़
मुख्य फसलें	फल, सब्जियां एवं खेत फसलें

पता		
गांव व	:	मुश्काबाद, गुलूरा
जिला	:	कुपवाड़ा, जम्मू व कश्मीर
मोबाइल	:	9596179388 09906669953

उपलब्धियां

- मोहम्मद अशरफ शेख की कृषि भूमि पर वे फलोद्यान के रूप में सेब, नाशपाती, अखरोट; अन्तर फसल सब्जी के रूप में फलियां, टमाटर, मटर, मिर्च, मूली, खीरा, प्याज व लहसुन आदि; मक्का तथा दालों की खेती करते हैं। इनके पास एक गाय भी है जोकि लगभग 20 किग्रा. दूध देती है।
- हर वर्ष मोहम्मद शेख को सब्जियों की खेती में भारी नुकसान हो जाता था और कई बार तो पूरी की पूरी फसल ही बरबाद हो जाती थी और इन्हें दूसरी बार पौद रोपाई करनी पड़ती थी। सब्जियों की खेती विशेषकर प्रारंभिक बढ़वार सीजन में कटवार्म, कैटरपिल्लर जैसे नाशीजीवों से संक्रमित हो जाती थी जिससे सब्जियों की पौद को भारी नुकसान पहुंचता था और फसल बरबाद हो जाती थी। इस मामले में सफलता तब हासिल की गई जब सब्जी बगीचे की चारदीवारी के आसपास मेड़ों पर सैलिक्स की पत्तियों के ढेर लगाये गए। मेड़ों पर सैलिक्स की पत्तियों के ढ़ेर को गो धूलि बेला अर्थात शाम के समय रखा गया और नाशीजीव रात के समय ढेर की ओर बढ़े तथा उसके नीचे छिप गए। प्रातः कालीन घंटों में ढ़ेर को कीटों के साथ उठाकर नष्ट कर दिया जाता है। इससे कीटनाशकों के उपयोग में कमी आई और साथ ही फसल को विषैले अपशिष्ट प्रभावों से बचाया जा सका। अतः यह नवोन्मेषी विधि किफायती, सस्ती तथा पर्यावरण के अनुकूल सिद्ध हुई। इसे लाना ले जाना आसान होता है और इसमें किसी प्रकार की विशेष दक्षता की जरूरत नहीं होती। साथ ही यह विधि कीटों द्वारा किए जाने वाले नुकसान की रोकथाम में प्रभावी सिद्ध हुई है।
- कृषि विज्ञान केन्द्र और शेर ए कश्मीर कृषि विश्वविद्यालय के प्रशिक्षण में भाग लेने के बाद भी शेख ने उन्नत किस्मों के साथ–साथ वैज्ञानिक खेती की अंगीकृत किया जिससे इन्होंने अपनी आमदनी में ना केवल वृद्धि की बल्कि एक नवोन्मेषी कृषक के रूप में अपनी साख भी बना ली है।
- स्थानीय स्तर पर आयोजित कृषि मेलों और प्रदर्शनिओं में श्री शेख को सम्मानित किया जा चुका है।

श्री हुक्म चन्द पाटीदार

पिता का नाम	श्री परमानन्द पाटीदार	**पता**
आयु	57 वर्ष	गांव : मनपुरा
शिक्षा	सीनियर सेकेण्डरी (12वीं)	डाकघर : लावासल वाया असनावर
कृषि भूमि	40 एकड़	जिला : झालावाड़, राजस्थान
कृषि क्षेत्र	25 एकड़	मोबाइल : 09461951154 ई–मेल : acharya1207@gmail.com
मुख्य फसलें	मक्का, सोयाबीन, गेहूं, चना, जौ, उड़द, मूंगफली, ज्वार, मूंग, अरहर, सब्जियां, धनिया, संतरा, मिर्च, लहसुन, हल्दी, आं. वला व बाजरा	

उपलब्धियां

• श्री हुक्म चन्द पाटीदार वर्ष 2004 से जैविक खेती कर रहे हैं। इन्होंने एक बायोगैस संयंत्र स्थापित किया है जिससे पर्याप्त मात्रा में ईंधन मिल जाता है और बायोगैस संयंत्र के घोल (स्लरी) का उपयोग खेतों में जैविक खाद के तौर पर किया जाता है। वर्मीकम्पोस्ट की एक इकाई को कार्यशील बनाकर और इससे प्रति चक्र 8 टन वर्मी कम्पोस्ट पैदा किया जाता है। खेत पर प्रति वर्ष 30 टन वर्मी कम्पोस्ट पैदा किया जाता है और उसका इस्तेमाल जैविक फसल उत्पादन के लिए किया जाता है।

• खेत पर ही नीम, धतूरा, अंकरा, हरी मिर्च और लहसुन घोल से अनेक फार्म्यूलेशन तैयार किये जाते हैं और इनका उपयोग कीटों/नाशीजीवों की रोकथाम के लिए किया गया। तम्बाकू कैटर पिल्लर की रोकथाम के लिए पानी में तम्बाकू (200 ग्राम), लहसुन (500 ग्राम) तथा मिर्च (500 ग्राम) मिलाकर तैयार किये गए क्वाथ का प्रयोग सफलतापूर्वक किया जा रहा है। क्षेत्र के अन्य किसान भी इस तकनीक का इस्तेमाल कर रहे हैं। मिर्च में फफूंद की रोकथाम के लिए पनीरजल का छिड़काव लाभप्रद पाया गया।

• राजस्थान के विभिन्न भागों से किसान इनके खेत का दौरा करते हैं। बागवानी एवं वानिकी महाविद्यालय, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, झालावाड़ कैम्पस के छात्रों ने इनके खेत पर आर.ए.डब्ल्यू.ई. कार्यक्रम के तहत जैविक खेती के गुर सीखे। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिक एवं अधिकारी नियमित अंतराल पर इनके खेत का दौरा करते हैं।

• इनके खेत पर जल प्रबंधन की व्यवस्था खुले कुंओं को आपस में जोड़कर की गई है तथा खुले कुंओं के पुनर्भरण (रिचार्ज) को अपनाया जाता है जिससे इनके खेत पर अब पानी की कोई समस्या नहीं है।

• ये स्प्रिंक्लर एवं ड्रिप (फव्वारा ओर टपक) सिंचाई प्रणाली का उपयोग करके लगभग 40–60 प्रतिशत तक पानी की बचत करते हैं। श्री पाटीदार अपने खेत में जैविक फल (संतरा, पपीता, अनार, अमरूद, चीकू तथा लेमन) और सब्जियां उगाते हैं। ये अपने उत्पाद को दिल्ली, उदयपुर, भीलवाड़ा, इन्दौर, कोटा, जयपुर, कोलकाता तथा मुम्बई के बाजारों में बेचते हैं। जैविक धनिया और लहसुन को बड़ी मात्रा में बेचकर बाजार मूल्य से 20–30 प्रतिशत अधिक प्रीमियम अर्जित किया जाता है। बढ़ी हुई जैविक सामग्री से इनकी खेत की मृदा में सुधार हुआ है।

• इन्होंने खेत स्तर पर ही अपने उत्पादों में मूल्य वर्धन करने के लिए दर्जाकरण (ग्रेडिंग) की एक प्रसंस्करण इकाई और पिसाई मशीन (धनिया, हल्दी व गेहूं आदि) स्थापित की है। इनके खेत पर 120 मधुमक्खी बक्सों से जैविक शहद का उत्पादन भी किया जाता है। इनके गांव में सौ एकड़ से भी अधिक क्षेत्रफल जैविक खेती के अन्तर्गत है जिसके कारण इनका गांव मनपुरा राजस्थान में जैविक खेती के लिए प्रसिद्ध है।

• श्री पाटीदार को जिला स्तर पर अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं और इन्होंने दिनांक 24 जून, 2012 को टीवी शो–सत्यमेव जयते में भी भाग लिया है। श्री पाटीदार अक्षय जैविक कृषि संस्थान, झालावाड़ के अध्यक्ष हैं जो कि जिले में 97 किसानों के बीच जैविक खेती की गतिविधियां चलाता है।

श्री प्रीतम सिंह

पिता का नाम	श्री जसवन्त सिंह
आयु	48 वर्ष
शिक्षा	8वीं पास
कृषि भूमि	
मुख्य फसल	गेहूं व धान

पता

गांव : उरलाना खुर्द
पोस्ट : उरलाना कलां
तहसील : पानीपत
जिला : पानीपत–132103, हरियाणा
मोबाइल : 09416735898, 0822835898
ई–मेल : pritamhanjra@gamail.com

उपलब्धियां

• श्री प्रीतम सिंह पानीपत जिले के एक नवोन्मेषी कृषक हैं। आमतौर पर कम्बाईन से गेहूं की कटाई करने के उपरान्त रीपर द्वारा भूसा बनाने के बाद भी 20 से 25 प्रतिशत तक गेहूं के अवशेष खेत में रह जाते हैं जो कि खेत में धान की रोपाई करते समय तैर कर समस्या पैदा करते हैं। इस वजह से किसान उन्हें जला देते हैं जिससे पर्यावरण को तो नुकसान पहुंचता ही है साथ ही भूमि पर भी इसका दुष्प्रभाव पड़ता है। इसके समाधान के लिए श्री प्रीतम सिंह ने इन अवशेषों में ही धान की सीधी बुवाई करके अच्छी पैदावार प्राप्त करने में सफलता प्राप्त की। इन्होंने अपने कुछ खेतों में लगातार पिछले कुछ वर्षों में धान की शून्य जुताई विधि को अपनाकर मृदा स्वास्थ्य में सुधार किया है। जिस खेत की आखिरी जुताई 2010 में धान की रोपाई करते समय की गई थी और उसके बाद नवम्बर, 2010 में गेहूं की बुवाई में शून्य जुताई का प्रयोग किया गया तथा गेहूं की पैदावार 5200 किलो/एकड़ प्राप्त की गई।

• श्री सिंह ने दोबारा उसी खेत में जुताई किए बिना शून्य जुताई विधि से 16 जून 2011 को चावल की किस्म पूसा 1121 को अपनाकर धान की सीधी बीजाई करके 6 नवम्बर, 2011 को कटाई कर 2095 किलो प्रति एकड़ की पैदावार हासिल की। इसी पद्वति को निरन्तर जारी रखते हुए इन्होंने 17 अप्रैल 2014 को गेहूं की 2967 किस्म से इसी खेत में सबसे अधिक पैदावार 2920 किलो प्राप्त की तथा चावल की किस्म 1121 से 2265 किलो प्रति एकड़ पैदावार प्राप्त की।

• धान की कटाई उपरान्त अवशेष प्रबंधन, नमी संरक्षण, समय से पहले उग आए खरपतवारों का प्रबंधन आदि से भी अच्छे परिणाम प्राप्त किए। शून्य जुताई पद्धति में गेहूं की बीजाई में आमतौर पर पहले से उगे हुए खरपतवार काफी अनियंत्रित हो जाते हैं। इसके लिए कई बार पहले से ही ग्लायिफोसॉल का छिड़काव करना पड़ता था। इसके लिए श्री सिंह ने एक पद्धति विकसित की।

• श्री प्रीतम सिंह ने अपने कुछ खेतों में जिनमें धान की पुआल अधिक मात्रा में थी और जहां अधिक मात्रा में खरपतवार पहले से ही उग आए थे, में गेहूं की शून्य जुताई विधि से 5–6 सेमी. तक जुताई करके उसके बाद 2–3 सेमी. तक रोटावेटर चलाया। इस प्रकार गेहूं की लाइनों को प्रभावित किए बिना खरपतवार भी नष्ट हो गए और धान की पुआल टूट कर मिट्टी के ऊपर बिछ गई जिससे गेहूं की फसल को पर्याप्त हवा व प्रकाश मिलने से गेहूं की पैदावार में उल्लेखनीय वृद्धि हुई। इस प्रकार बोई गई फसल अन्य फसलों की तुलना में एक सप्ताह अधिक समय लेती है।

• श्री प्रीतम सिंह को अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं जिसमें पूसा संस्थान का नवोन्मेषी कृषक पुरस्कार भी शामिल है।

श्रीमती कान्ता दैष्टा

पति का नाम	श्री रमेश दैष्टा
आयु	58 वर्ष
शिक्षा	10वीं पास
कृषि भूमि	7 एकड़
मुख्य फसलें	सेबी, आड़ू, आलूबुखारा, नेक्टारिन, अनार, अंगूर व सब्जियां

पता		
गांव	:	सामला
तहसील	:	रोहरू
जिला	:	शिमला, हिमाचल प्रदेश
टेलिफोन	:	1781–201658
मोबाइल	:	9816582175

उपलब्धियां

• जिला शिमला की तहसील रोहरू में गांव सामला की महिला किसान श्रीमती कान्ता दैष्टा इस बात में विश्वास करती हैं कि वे सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय मिलने वाली सकारात्मक ऊर्जा और जैविक खेती को अपनाकर स्वस्थ फसल, जीवंत पशुधन एवं पूरी तरह से मानसिक शांति को सुनिश्चित कर सकती हैं।

• इन्होंने छः वर्ष पहले जैविक खेती की ओर अपने कदम बढ़ाएं जिससे इन्हें अच्छा लाभ हासिल हुआ। इसके साथ ही जैविक खेती को अपनाने और उसके उत्पादों का स्वयं भी उपभोग करने से इनका स्वास्थ्य अच्छा बना रहा, इनमें सकारात्मक सोच विकसित हुई और इनके परिवार एवं आसपास के माहौल में दैवीय खुशी मिली।

• सेब, शिमला जिले की प्रमुख नकदी फसलों में से एक है और श्रीमती कांता दैष्टा भी इसकी खेती करती हैं लेकिन जलवायु परिवर्तन और रासायनिक उर्वरकों व कीटनाशकों के अंधाधुंध प्रयोग के कारण सेब की फसल में खराब गुणवत्ता के कारण आकर्षक लाभ नहीं मिल पा रहा था। इसके परिणामस्वरूप, श्रीमती कान्ता ने जैविक खेती की ओर रूझान किया और गोमूत्र, जड़ी–बूटी, वर्मीकम्पोस्ट एवं जैव–कीटनाशकों का उपयोग करके जैविक खेती को अपनाया। सेब की खेती के साथ–साथ श्रीमती कान्ता दैष्टा ने आड़ू, आलूबुखारा, नेक्टारिन, अनार, अंगूर तथा सब्जियों की खेती भी प्रारंभ की।

• अपने आसपास के क्षेत्र में श्रीमती कान्ता दैष्टा किसान समुदाय के बीच एक उदाहरण बनीं। जैविक रूप से उत्पन्न की गईं फसलों से श्रीमती कान्ता अच्छा लाभ कमा रही हैं। अब श्रीमती कान्ता शिमला जिले में जैविक खेती की एक प्रगतिशील किसान बन गईं हैं। इस क्षेत्र में जैविक खेती की तकनीक का व्यापक विस्तार करने में इनका प्रमुख योगदान रहा है और जैविक खेती को पहले से कहीं अधिक अपनाया जा रहा है।

(स्व.) श्री दीपक विट्ठलराव शिन्दे

पिता का नाम	विट्ठलराव शिन्दे
आयु	55 वर्ष
शिक्षा	स्नातक (बी.एससी. कृषि)
कृषि भूमि	
मुख्य फसलें	अनाज, दलहन, तिलहन, बागवानी फसलें (अनार, अंगूर, काजू व आम)

पता		
गांव	:	निमखेड बाजार
तालुका	:	अंजनगांव सुरजी
जिला	:	अमरावती, महाराष्ट्र
वेबसाइट	:	www.organicfarmsindia.co.in

उपलब्धियां

- श्री दीपक विट्ठलराव शिन्दे कृषि स्नातक के साथ–साथ महाराष्ट्र राज्य के जैविक खेती करने वाले एक प्रतिष्ठित किसान हैं। इनके द्वारा जैविक अनाज, दलहनी एवं तिलहनी फसलों के साथ–साथ अनार, अंगूर, काजू तथा आम जैसी बागवानी फसलों की खेती की जा रही है।
- इन्होंने इकोकर्ट (Ecocert) द्वारा प्रमाणित 1000 जैविक खेती से जुड़े किसानों को शामिल कर 10,000 एकड़ भूमि पर जैविक फार्म स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साथ ही इन्होंने एक जैविक प्रसंस्करण केन्द्र भी स्थापित किया है। श्री शिन्दे नियमित रूप से प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाते हैं और अन्य किसानों का मार्गदर्शन करते हैं।
- इनके द्वारा जैविक संतरा, अनार, अंगूर, काजू एवं आम फलों एवं कपास, तिलहन, दलहन तथा अनाज का उत्पादन किया जा रहा है। डॉ. पंजाबराव देशमुख कृषि विद्यापीठ, अकोला तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली से मिले मार्गदर्शन से इन्होंने सन् 2007 में नीमखेड़ बाजार, तालुका अंजनगांव सुरजी, जिला अमरावती में जैविक कृषि प्रसंस्करण केन्द्र की स्थापना की है।
- नीमखेड़ बाजार में जैविक फार्म गृह विद्यालय के माध्यम से श्री शिन्दे जैविक कृषि प्रमाणन के लिए किसानों को प्रशिक्षण प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं तथा आन्ध्र प्रदेश के वारंगल जिले के 50 किसानों को प्रशिक्षण प्रदान कर चुके हैं।
- जैविक उत्पादन, प्रसंस्करण, प्रमाणन एवं विपणन के क्षेत्र में श्री शिन्दे अनेक संस्थानों के लिए एक संसाधन व्यक्ति के रूप में कार्य कर रहे हैं। भारत तथा विदेशों (जर्मनी, श्रीलंका, नीदरलैण्ड, यूनाइटिड किंग्डम, फ्रांस, इटली और संयुक्त राज्य अमेरिका) के अनेक आगन्तुकों ने इनके जैविक खेत का दौरा किया है।
- श्री शिन्दे प्रमाणित जैविक सोयाबीन का निर्यात कर रहे हैं और किसानों की खुशहाली के लिए और अधिक जैविक प्रमाणित उत्पादों का निर्यात करने का प्रयास कर रहे हैं। इन्होंने यूनाइटिड किंग्डम, फ्रांस, जर्मनी, पोलैण्ड तथा संयुक्त राज्य अमेरिका सहित अनेक देशों का दौरा किया है और जैविक कृषि पर अनेक कार्यक्रमों में भाग लिया है।
- इनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों को मान्यता प्रदान करते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI), नई दिल्ली द्वारा इन्हें कृषि विज्ञान मेला–2008 के अवसर पर प्रगतिशील किसान पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री शिन्दे को जनवरी, 2005 में ग्रामीण समृद्धि के लिए जमशेदजी टाटा विर्चुअल एकेडमी फेलोशिप पुरस्कार मिल चुका है।

श्री कल्लू घोरसे

पिता का नाम	श्री गेन्दयाजी घोरसे
आयु	41 वर्ष
शिक्षा	अनपढ़
कृषि भूमि	1 एकड़
मुख्य फसलें	टमाटर, लोबिया, करेला

पता

गांव : मिलनपुर
डाकघर : बेतुल बाजार,
जिला : बेतुल – 462 004, मध्य प्रदेश
मोबाइल : 08889705796
ई–मेल : kvkbetul@rediffmail.com

उपलब्धियां

• श्री कल्लू घोरसे मध्य प्रदेश में बेतुल जिले के गांव मिलनपुर के एक अनपढ़ सीमान्त किसान हैं। श्री घोरसे ने सब्जियों के पौधों को सहारा देने के लिए रॉलिंग (घुमावदार) तथा स्ट्रेचिंग यंत्र विकसित किया है। इन्होंने टमाटर और अन्य खीरा वर्गीय बेल के लिए लोहे के तार की रॉलिंग व स्ट्रेचिंग के साथ कम लागत वाली, आसान, पर्यावरणीय अनुकूल सहारा देने वाली डंडियों (स्टैकिंग रॉड्स) का विकास किया। लोहे के तार की खींच तथा घूमने के लिए लोहे के पहिये और सहारे के लिए डंडियां अत्यधिक नवोन्मेषी है, इसकी लागत कम है, इसको आसानी से चलाया जा सकता है और इससे मजदूरी की बचत की जा सकती है। यह पर्यावरण के अनुकूल है और टमाटर व खीरावर्गीय सब्जियों के लिए बहुत उपयोगी है। इस यंत्र की कुल कीमत मात्र ₹ 14,000/एकड़ है और यह 10–15 वर्षों के लिए एक ही बार किया जाने वाला निवेश है। एक एकड़ क्षेत्रफल का स्टैकिंग कार्य एक ही दिन में पांच मजदूरों की सहायता से किया जा सकता है जबकि इसी कार्य के लिए पारम्परिक स्टैकिंग करने में कम से कम 20 मजदूरों की जरूरत पड़ेगी।

ग्रीष्म मौसम का आर्थिक विश्लेषण

• श्री घोरसे ने एक एकड़ जमीन से 2,69,000/– रुपये की आय अर्जित की तथा एक फसल अवधि के दौरान गर्मियों (मार्च–जून) में 1:4.57 के सी:बी अनुपात के साथ खर्चा केवल 64,437/– रुपये था।

फसलवार आय का विवरण इस प्रकार है:–

- टमाटर (मुख्य फसल) – ₹ 2,30,000/–
- टमाटर में अंतर–फसल के रूप में लोबिया – ₹ 24,000/–
- टमाटर में अंतर–फसल के रूप में करेला – ₹ 15,000/–
- एक एकड़ जमीन से कुल आय – ₹ 2,69,000/–
- एक एकड़ जमीन में कुल खर्चा – ₹ 64,437/–
- एक एकड़ जमीन से शुद्ध लाभ – ₹ 2,04,563/–

		पता	
पिता का नाम	श्री धनीराम विश्वकर्मा	गांव	: मेख
आयु	47 वर्ष	ब्लॉक	: गोटेगांव
शिक्षा	11वीं पास	जिला	: नरसिंहपुर, मध्य प्रदेश
कृषि भूमि	8 एकड़	मोबाइल	: 09300724167
मुख्य फसलें	गेहूं, चना, सोयाबीन एवं गन्ना	ई–मेल	: jasf_india@rediffmail.com

उपलब्धियां

• श्री रोशन लाल विश्वकर्मा ने एक हस्त चालित गन्ने की कली काटने वाली मशीन विकसित की है जो कि अर्ध चंद्र की आकृति वाली है तथा जिसमें स्प्रिंग के साथ लोहे के हैंडल में तेज धार वाला चाकू लगा हुआ है। हैंडल को दबाने से चॉपर द्वारा गन्ने की कली को अलग किया जाता है। इस चॉपर को गन्ने की मोटाई के अनुसार समायोजित किया जा सकता है। इस नवोन्मेषी गन्ना कली चॉपर को चलाना आसान है और इसे आसानी से एक जगह से दूसरी जगह लाया ले जाया जा सकता है। इस कली चॉपर की मदद से प्रति घंटा 300–500 कली को अलग किया जा सकता है। इसमें 90 प्रतिशत कम बीज लगता है और गन्ने की सेटिंग के लिए बुवाई की पारम्परिक विधि में 125 क्विंटल की तुलना में 13 क्विंटल कली भार की जरूरत होती है। कलियों को अलग करने के बाद बचे हुए गन्ने (112 क्विंटल, लागत रुपये 33,600 प्रति हेक्टेयर) का उपयोग गुड़ व चीनी बनाने में किया जा सकता है। पारम्परिक विधि से की गई रोपण प्रणाली (30 प्रतिशत) के मुकाबले इसमें गन्ना कली की अंकुरण प्रतिशतता कहीं ज्यादा (40 प्रतिशत) होती है। इसकी सफलता से प्रेरित होकर अनेक गन्ना उत्पादकों ने इसमें अपनी रूचि प्रकट की है और इस यंत्र की मांग काफी बढ़ी है। ₹ 1200 प्रति यंत्र की लागत वाले इन 1500 यंत्रों को किसानों को बेचने में सफल रहे।

इस किसान नवोन्मेष के लाभों से तथा साथ ही अन्य किसानों और प्रसार कार्मिकों को मदद पहुंचाने के उद्देश्य से श्री विश्वकर्मा ने दस से भी अधिक राज्यों को कुल 1143 गन्ना कली चॉपर बेचे हैं।

संसाधनों/आदानों की बचत करने के संबंध में इनका योगदान इस प्रकार है:–

- एक हेक्टेयर क्षेत्र में बुवाई करने के लिए गन्ने का 10 प्रतिशत बीज पर्याप्त होता है तथा शेष 90 प्रतिशत भाग का इस्तेमाल गुड़ अथवा चीनी बनाने में किया जा सकता है।
- कम बीज सामग्री होने से बीज गुणवत्ता बनाए रखना आसान होता है और बीजजनित रोगों व कीटों से बचाव करना संभव हो पाता है जिससे उत्पादकता में 30 प्रतिशत तक वृद्धि लाई जा सकती है।
- गन्ना कली चॉपर के उपयोग से बीज की मात्रा (4–5 क्विंटल भार प्रति हेक्टेयर) कम हो जाती है अतः बीजों को एक स्थान से दूसरे स्थान तक लाना ले जाना आसान हो जाता है।

सरदार बीरेन्द्र सिंह सिद्धू

		पता
आयु	46 वर्ष	डॉ. केहर सिंह मार्ग, श्री मुक्तसर साहिब, पंजाब – 152 026 मोबाइल : 09876500051
शिक्षा	एम.एससी. पंजाब विश्वविद्यालय, पटियाला	
कृषि भूमि	200 एकड़	
मुख्य फसलें	कपास, धान, गेहूं एवं सब्जिया, किन्नू, अंगूर, माल्टां	

उपलब्धियां

- सरदार बीरेन्द्र सिंह सिद्धू द्वारा किन्नू की काट.छांट (प्रुनिंग) और छंटाई (ग्रेडिंग) के लिए एक पहियेदार मशीन विकसित कर परिवहन की लागत में बचत की गई। कीन्नू की छंटाई करने के लिए इस मशीन को चलाकर खेत तक लाया जा सकता है तथा इसे पंजाब में उपलब्ध न्यूनतम हार्सपावर शक्ति वाले किसी भी ट्रैक्टर पर चलाया जा सकता है। न्यूनतम मानव शक्ति के साथ इस मशीन को आसानी से चलाया जा सकता है। इस मशीन की क्षमता एक घंटे में एक टन कीन्नू की सफाई एवं छंटाई करने की है। इस मशीन को विकसित करने की लागत लगभग रुपये 3 लाख है जो कि छोटे एवं सीमान्त किसानों के लिए वहनीय है।
- ये अपनी कृषि में उन्नत किस्मों, फसल सुरक्षा, संसाधन बचत और कटाई उपरान्त देखरेख में सभी वैज्ञानिक विधियों को अपनाकर एक रोल मॉडल के रूप में उभरे हैं।
- इन्होंने अपने खेत पर पशु अपशिष्ट का पुनर्चक्र करके जमीन की उपजाऊ क्षमता और उसकी संरचना को फसलों के और अनुकूल बनाया हुआ है।
- अबोहर में आयोजित पंजाब स्तरीय सिट्रस प्रतियोगिता–2011 में श्री सिद्धू ने तीन पुरस्कार जीते। इन्हें अंगूर फल के लिए दो प्रथम पुरस्कार और माल्टा के लिए द्वितीय पुरस्कार मिला।
- इनके पास मुर्राह भैंस, मारवाड़ी घोडे तथा तिब्बती मास्टिफ्स कुत्ते (उत्तर भारत पशु प्रदर्शनी में विजेता) पर्याप्त संख्या में हैं। इनके 200 एकड़ के खेत में कपास, सिट्रस, धान, गेहूं तथा सब्जियों की खेती की जाती है।
- श्री सिद्धू, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के किसान क्लब एवं सिट्रस काउन्सिल ऑफ पंजाब के सदस्य हैं।

श्री शिव नारायण पटेल

पिता का नाम	स्व. श्री गंगाराम पटेल	**पता**		
आयु	83 वर्ष	गांव	:	कोठरी
		पोस्ट	:	कोठरी
शिक्षा	5वीं पास	तहसील	:	आष्टा
कृषि भूमि	88 एकड़	जिला	:	सीहोर–466114, मध्य प्रदेश
		टेलिफोन	:	07560–254222
मुख्य फसलें	सोयाबीन, गेहूं, चना, गन्ना, मक्का, मसूर तथा लहसुन	मोबाइल	:	9229425534
		ई–मेल	:	shailendrapatel@rediffmail.com

उपलब्धियां

• श्री शिवनारायण पटेल एक ऐसे प्रगतिशील किसान हैं जो हमेशा नवीनतम प्रौद्योगिकी को अपनाने के लिए तैयार रहते हैं। इन्होंने कम वर्षा की स्थिति तथा ट्रैक्टर द्वारा चालित बीज ड्रिल मशीन में "पावड़ी" को जोड़कर अधिकता में जल निकासी होने की स्थिति में नमी संरक्षण के लिए सोयाबीन की खेती में देसी तकनीक विकसित की है। बीज ड्रिल के बुवाई पाइपों के फासलों के बीच इन्होंने 10–12 इंच के छोटे कल्टीवेटर लगाये हैं जिनसे चौड़ी क्यारी तथा खांचा बनाने में मदद मिलती है।

• श्री पटेल ने मृदा स्वास्थ्य में सुधार के लिए समेकित पादप पोषक प्रणाली (आईपीएनएस) तकनीकें अपनाईं और खेत की खाद, पुआल, रॉक फॉस्फेट तथा कच्चा सल्फर से पलीता (हीव्ज) तैयार किया। इन्होंने इस खाद का अनुप्रयोग मानसून आने से पहले किया और उत्पादकता में अभूतपूर्व बढ़ोतरी हासिल की। श्री पटेल ने रसायन का प्रयोग किए बिना गुड़ तैयार किया और बाजार में अच्छा मूल्य पाया।

• श्री पटेल अपने उत्पादों को पड़ोसी किसानों के साथ मिलजुल कर खरीदे गये ट्रैक्टर से भोपाल के बड़े बाजार में ले जाते हैं और वापसी के समय ट्रैक्टर का इस्तेमाल भोपाल के समीप स्थित डेयरी से सस्ते दामों पर पशु अपशिष्ट लाकर घूरे की खाद बनाते हैं। उर्वरक हासिल होने के कारण, श्री पटेल अपनी अनुत्पादित जमीन को उपजाऊ जमीन में बदलने में सफल रहे।

• श्री पटेल गन्ने की उन्नत किस्मों की खेती के साथ–साथ गेहूं, मक्का, चना, मसूर, सोयाबीन की खेती में भी अच्छी उत्पादकता हासिल कर रहे है। लहसुन की खेती में भी इन्होंने पहल की है।

• श्री पटेल को ASPEE फाउंडेशन, मुम्बई से मृदा स्वास्थ्य में सुधार के लिए वर्ष 2009 में विशेष पुरस्कार मिल चुका है तथा अखिल भारतीय क्षेत्रीय गन्ना प्रतियोगिता में स्वर्ण पदक के साथ पुरस्कार एवं वर्ष 2002 में आई.आई.एस.एस. से पुरस्कार इनकी उपलब्धियों में से एक है।

श्री सोमनाथ रेड्डी पुरमा

पिता का नाम	श्री चन्द्रा रेड्डी पुरमा	**पता**
आयु	59 वर्ष	डाकघर : कोडला (बी)
शिक्षा	10वीं	तालुका : सेडम जिला : गुलबर्गा, कर्नाटक
कृषि भूमि	14 एकड़	मोबाइल : 09449783368
मुख्य फसलें	अरहर, चना, मूंग, उड़द, ज्वार, बाजरा, कंगनी मिलेट	08971639850

उपलब्धियां

• श्री सोमनाथ रेड्डी पुरमा द्वारा कर्नाटक में गुलबर्गा जिले के अपने गांव में मृदा व जल संरक्षण उपायों को अपनाया गया है। इस जिले में औसत वार्षिक वर्षा 720 मिमी. है जो अनिश्चित एवं असमान वितरण वाली है जिसका प्रभाव काफी हद तक बारानी फसलों पर पड़ता है और इससे कई बार सूखा जैसी स्थिति पैदा हो जाती है। इस स्थिति से बचने के लिए श्री पुरमा ने खरीफ के दौरान 5 मीटर x 4 मीटर आकार की कम्पार्टमेन्ट मेड़बन्दी (बन्डिंग) कर वर्षा जल संचयन को अपनाया है। इससे वर्षा जल को इकट्ठा करने तथा साथ ही मिट्टी के कटाव को रोकने में मदद मिली है जिससे मिट्टी की ऊपरी सतह में उपजाऊपन बढ़ा है। कम्पार्टमेन्ट मेडबन्दी करने से फसल की अधिक पैदावार मिली है। औसतन प्रति एकड़ पैदावार में लगभग 30 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। श्री पुरमा ने एक संशोधित हस्त चालित खरपतवार निकालने की मशीन (हैंड वीडर) भी विकसित की है। इस मशीन से बुवाई के 15–20 दिन पश्चात् निराई–गुड़ाई करने में मदद मिलती है तथा इससे उच्चतर पैदावार हासिल करने के लिए खरपतवारों का नियंत्रण करने से फसल को शुरूआती लाभ मिलता है तथा 800 से 1000/– रुपये तक की बचत होती है। इस मशीन को महिला मजदूरों द्वारा भी चलाया जा सकता है और इसमें किसी प्रकार की परेशानी नहीं होती।

• श्री पुरमा द्वारा वर्मीकम्पोस्ट प्रौद्योगिकी, बायो–डाइजेस्टर, ट्राइकोडर्मा, एनपीवीए, एनएसकेई तथा अनिवार्य बीज उपचार जैसी विभिन्न जैविक कृषि रीतियों को अपनाया गया है। फसल अपशिष्ट की रिसाइक्लिंग के लिए इन्होंने वर्मीकम्पोस्ट तकनीक को अपनाना शुरू किया और प्रति वर्ष 50 टन वर्मीकम्पोस्ट पैदा किया। इससे मृदा के उपजाऊपन और उसमें नमी की मात्रा बनाये रखने की क्षमता में इजाफा हुआ।

• बायो–डाइजेस्टर एक जैविक तरल खाद व जैव नाशकजीवनाशी है जिसका निष्कर्षण नीम, कैसिया (अमलतास) तथा अन्य वन्य फसल प्रजातियों से किया गया है। इन पौधों की पत्तियां एकत्रित कर उन्हें 21 दिनों तक जल में किण्वन के लिए रखा गया। इस निष्कर्षण अथवा सत् का प्रयोग पर्णीय अनुप्रयोग के लिए किया जाता है जो अतिरिक्त पोषक तत्व व जैव कीटनाशी के रूप में कार्य करता है। ट्राइकोडर्मा का व्यापक गुणनीकरण लकड़ी के बुरादे (5 किग्रा.), चावल की भूसी (5 किग्रा.) का उपयोग करके किया गया। इसे उबालकर नुकसानदेह रोगाणुओं को मारने के लिए इसका प्रयोग किया गया। एनपीवी में भीगे हुए चना बीजों के माध्यम से हेलि. कोवर्पा लार्वा को बढ़ाने के लिए एचएनपीवी के मातृ संवर्धन को आहार दिया गया। मरे हुए 200 लार्वा को इकट्ठा करके उन्हें कुचला गया और उनके सत् का प्रयोग दलहन में फली छिद्रक की रोकथाम के लिए छिड़काव के तौर पर किया गया। श्री पुरमा को कृषि में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए कई पुरस्कार मिल चुके हैं।

श्री मनोहर पटेल

पिता का नाम	श्री बापू लाल पटेल
आयु	44 वर्ष
शिक्षा	10वीं पास
कृषि भूमि	350 एकड़
मुख्य फसल	गेहूं, सोयाबीन व चना

पता		
गांव	:	म.न. 3, जटखेड़ी
पोस्ट	:	मिसरोड़, भाभा कॉलेज के समीप, होशंगाबाद रोड
जिला	:	भोपाल–462 026, मध्य प्रदेश
मोबाइल	:	09425672381, 9575777770
ई–मेल	:	akshu757@gmail.com

उपलब्धियां

- श्री मनोहर पटेल काफी लंबे समय से कृषि कार्य में इन्होंने जैविक उत्पादों का प्रयोग करके न केवल सूक्ष्म जीवों के स्ट्रेन (प्रभेद) को बचाए रखा वरन् मृदा की उर्रवता (बनावट) में सुधार किया तथा साथ ही रसायनों के प्रयोग में भी कमी की। जैविक उत्पादों में जीवाणुओं के शक्तिशाली स्ट्रेन होते हैं जो कि अनुप्रयोग के बाद मिट्‌टी में 12 से 20 गुणा तक बढ़ते हैं।
- श्री मनोहर पटेल का यह मानना है कि सोयाबीन की फसल में इसका उपयोग करके ये उर्वरक की खपत को कम करने तथा लागत को 50 प्रतिशत तक कम करने और उत्पादन में 15–20 प्रतिशत तक वृद्धि करने में सफल होंगे।
- सोयाबीन, चने और गेहूं में जैविक उर्वरक नामतः राइजोबियम और एजेक्टोबेक्टर का अनुप्रयोग करके इन्होंने रासायनिक खादों से निर्भरता का लगभग एक चौथाई घटा लिया है।
- सोयाबीन की खेती करते समय इनके खेत में जल भराव की एक गंभीर समस्या थी। खेत में वर्षा जल इकट्‌ठा होने के कारण फफूंदी प्रकोप होने का खतरा बना रहता था। खेत की स्थलाकृति का विश्लेषण करने के उपरान्त इन्होंने खेत से पानी बाहर निकालने के लिए कूंड बना दिए। अब इस तरीके से जलभराव की समस्या का समाधान करने में मदद मिली है और इन्हें पिछले वर्ष के फसल उत्पादन की तुलना में लगभग 40 प्रतिशत अधिक लाभ हासिल हुआ है। ये गेहूं तथा चने के उत्पादन में भी उन्नत तकनीक अपना कर लाभ कमा रहे हें ओर साथ में अन्य लोगों को भी रोजगार के अवसर उपलब्ध करा रहे हैं।
- श्री मनोहर पटेल को ASPEE मलाड, मुम्बई द्वारा प्रशंसा पुरस्कार एवं राष्ट्रीय रसायन एवं उर्वरक लि. से पुरस्कार मिल चुका है।

श्री हरि एस. नाइक कुराडे

पिता का नाम	श्री सुबरई नाइक कुराडे	**पता**	
आयु	78 वर्ष	गांव	: सन्वोरकोट्टो, कुनकोलिमसालकेट – 403 703, गोवा
शिक्षा	10वीं		
कृषि भूमि	90 एकड़	टेलिफोन	: 0832–2865941
मुख्य फसलें	धान, नारियल, सुपारी, काजू, कोकम, तेलताड़, रबर, यूकेलिप्टस, टर्मिनाली अपानीकुलेट, टर्मिनाली एटोमिन्टोसा, अनानास, कटहल, आम, काली मिर्च व हल्दी जैसे मसाले	मोबाइल ई–मेल	: 9604750398 : siddkur@gmail.com

उपलब्धियां

• श्री हरि एस. नाइक कुराडे टिकाऊ कृषि के उद्देश्य को ध्यान में रखकर पर्यावरण के अनुकूल आधुनिक कृषि गतिविधियों को अपनाने वाले किसान हैं। इनके खेत में प्राकृतिक झरनों और बोरवेल से पानी की आपूर्ति की जाती है। इन्होंने अपने खेत में भूमिगत पाइप लाइन बिछा रखी है जिससे खेत के प्रत्येक कोने में पानी की आपूर्ति की जाती है। इस प्रणाली से पानी का नुकसान कम हुआ है तथा मजदूरी की लागत में भी कमी आई है। श्री कुराडे अपने खेत में कान्टूर पौध रोपण, कान्टूर ट्रेन्चिंग, टेबल टॉप्स तथा बेंच सीढ़ीदार जैसे मृदा एवं जल संरक्षण रीतियों को अपनाते हैं। प्यूरीरिया फेजियोलिड जैसी कवर फसलों की रोपाई करने से श्री कुराडे अपनी गैर कृषि भूमि के हिस्से को रबर तथा काजू के लाभप्रद पौध रोपण में बदलने में सफल हो सके।

• इनके खेत में कोकम के 2500 पौधों से भी अधिक का पौध रोपण किया गया है। इसके साथ ही इनके पास रबर की शीट के निर्माण के लिए मशीनरी के साथ गोवा का सबसे बड़ा पौध रोपण खेत भी है। श्री कुराड़े पचौली तथा बिक्सा जैसी नई फसलों की रोपाई करते हैं।

• श्री कुराड़े ने कृषि जानकारी के लिए केरल, कर्नाटक, महाराष्ट्र तथा आन्ध्र प्रदेश में अनेक अध्ययन दौरों में भी भाग लिया है। पर्यावरण के मुद्दों पर लोगों तथा छात्रों को शिक्षित करने के प्राथमिक एजेन्डा वाले सेमिनार, प्रशिक्षण एवं कार्यशालाओं में भी श्री कुराड़े ने अपनी भागीदारी की है। रबर, तेलताड़, काजू तथा मिश्रित खेती जैसे विषयों पर ऑल इंडिया रेडियो एवं दूरदर्शन पर इनके द्वारा प्रस्तुत अनेक वार्ताओं की किसान समुदाय द्वारा खूब प्रशंसा की गई है। श्री कुराड़े वन महोत्सव, सेमिनार, कार्यशाला, रेडियो वार्ता, टेलिविजन प्रस्तुति, सार्वजनिक बैठकों के आयोजन और पर्यावरण सुरक्षा के लिए लोगों को संगठित करके जीवन भर पर्यावरण सुरक्षा और प्रकृति की हरियाली को बनाये रखने के लिए कार्य कर रहे हैं।

• श्री कुराड़े को उनकी सेवा के लिए सरकार तथा अन्य संगठनों द्वारा विभिन्न अवसरों पर अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं। श्री कुराड़े, गोवा कोंकण रबर ग्रोअर सोसायटी तथा गोवा किसान एसोसिएशन जैसे किसान समूहों से भी जुड़े हुए हैं। गोवा सरकार ने श्री कुराड़े को तेलताड़ विकास कार्यक्रम के तहत सरकार द्वारा गठित परियोजना निगरानी समिति में किसान प्रतिनिधि के रूप में नामित किया है। श्री कुराड़े को अखिल भारतीय स्तर पर रोपण फसलों के लिए वर्ष का ASPEE एल.एम. पटेल किसान पुरस्कार–2000 मिल चुका है।

श्री एच. सदानन्द

		पता
पिता का नाम	श्री हनुमंथारायप्पा	
आयु	55 वर्ष	गांव : तपसीहल्ली
शिक्षा	10वीं पास	पोस्ट : अन्थाराहल्ली तालुका : डोड्डाबल्लापुर, बंगलुरू ग्रामीण जिला, कर्नाटक
कृषि भूमि	2 एकड़ (सिंचित), 0.5 एकड़ (बारानी भूमि)	टेलिफोन : 080–7659151
मुख्य फसलें	सब्जियां (शिमला मिर्च, आलू, टमाटर, मूली, बंदगोभी, पत्तीदार सब्जियां), सुपारी, नारियल, गुलाब, रागी, चीकू, नींबू और ड्रमस्टिक (सहजन)	मोबाइल : 9342022146

उपलब्धियां

- श्री एच. सदानन्द ने समेकित कृषि प्रणाली युक्ति के तहत पशु पालन एवं जैविक खेती के साथ कृषि एवं बागवानी फसलों के समेकन के साथ अपनी छोटी कृषि जोत से पिछले तीन वर्षों में लगातार 5 से 6 लाख रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया।

- श्री सदानन्द ने अपने पुराने स्कूटर को छिड़काव एवं फर्टिगेशन कार्यों के लिए ऊर्जा चालित (पॉवर) स्प्रेयर में बदल दिया। श्री सदानन्द वर्षा जल के संचयन (हार्वेस्टिंग), भण्डारण एवं मछली व कमल के फूलों की खेती के लिए तालाब का उपयोग करने का कार्य कर रहे हैं। इन्होंने सुरक्षा के लिए प्रयुक्त कुत्तों के सफल प्रजनन द्वारा प्राप्त पिल्लों को बेचकर अतिरिक्त आमदनी हासिल की। इन्होंने सब्जियों को कुहासा एवं ड्रिप सिंचाई विधि से पॉलीहाउस में उगाया, इनकी व्यावसायिक बिक्री के लिए पौध तैयार की तथा खरपतवारों और अन्य अपशिष्ट को वर्मीकम्पोस्ट में परिवर्तित किया। श्री सदानन्द ने 10 x 10 फीट के तालाब में एजोला को उगाया और उसका इस्तेमाल दुधारू पशुओं के लिए आहार के रूप में किया जिससे दूध उत्पादन में 10–15 प्रतिशत तक की बढ़ोतरी हुई। इसके अलावा इन्होंने गुलाब के खुले खेत में एक अंतर–फसल के रूप में लहसुन व प्याज की खेती करके प्रतिवर्ष 8,000 से 10,000/– रुपये तक की अतिरिक्त आमदनी अर्जित की। श्री सदानन्द ने अपने फार्म द्वार पर तथा स्थानीय बाजार में फूलों की डिलीवरी करने के लिए अपनी विपणन (मार्केटिंग) व्यवस्था बनाई ताकि बिचौलियों का कमीशन बचाया जा सके।

- श्री सदानन्द ने खेती में नवीन तकनीकों को अपनाया जैसे गुलाब की खुली परिस्थितियों में खेती, सम्पूर्ण फार्म में ड्रिप सिंचाई, कुहासा एवं ड्रिप के साथ पॉलीहाउस में सब्जियों की खेती, सुरक्षा के लिए प्रयुक्त पालतु कुत्तों के सफल प्रजनन द्वारा प्राप्त पिल्लों को बेचकर, व्यावसायिक बिक्री के लिए सब्जी नर्सरी, सुपारी के बगीचे में अहाता कुक्कुट पालन (पॉल्ट्री), मधुमक्खी–पालन, एवं भेड़ पालन, एजोला की खेती और गाय एवं पॉल्ट्री पक्षियों के लिए एजोला का उपयोग करना, जल संचयन तालाबों में मछली पालन तथा वर्मीकम्पोस्टिंग आदि को अपनाया है।

सरदार गुरदयाल सिंह

पिता का नाम	सरदार नन्द सिंह
आयु	50 वर्ष
शिक्षा	मैट्रिक (10वीं)
कृषि भूमि	15 एकड़
मुख्य फसलें	हल्दी, गेहूं, उड़द, मूंग, धान व तिलहन

पता		
गांव	:	सल्लोपुर
डाकघर	:	चक शरीफ
ब्लॉक	:	कहनुवान
जिला	:	गुरदासपुर, पंजाब
टेलिफोन	:	01872–258932
मोबाइल	:	09463226244
ई–मेल	:	greengoldspices@yahoo.com

उपलब्धियां

• सरदार गुरदयाल सिंह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नई पहल करने के लिए तैयार रहते हैं। इन्होंने वर्ष 2002 से मधुमक्खी पालन, डेयरी पालन, फसल उत्पादन आदि पर कृषि विज्ञान केन्द्र, गुरदासपुर में आयोजित कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया है। कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा प्रदर्शित नवीनतम तकनीकों को अपने खेत तथा साथी किसानों के खेतों पर अपनाने में गहरी रूचि दिखाई। इन्होंने वर्ष 2003 में मधुमक्खी पालन प्रारंभ किया और शहद की बिक्री से रुपये 10,000/– का लाभ कमाया। इसके साथ ही इन्होंने वर्मी कम्पोस्ट की इकाई स्थापित की और तैयार वर्मीकम्पोस्ट का उपयोग इनके अपने खेत पर किया जा रहा है।

• वर्ष 2003–04 में सरदार गुरदयाल सिंह को गेहूं की शून्य जुताई वाली बुवाई का प्रदर्शन दिखाया गया और इस तकनीक के परिणामों और इससे मिलने वाले आर्थिक लाभ से श्री सिंह इतने प्रभावित हुए कि इन्होंने आने वाले सीजन में अपने खेत पर कृषि कार्यों के लिए एक नई शून्य जुताई मशीन खरीद ली। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा प्रोत्साहित करने पर इन्होंने अपने सारे गेहूं की बुवाई शून्य जुताई तकनीक के माध्यम से की और अपनी इस मशीन का इस्तेमाल किराये के (कस्टम हायरिंग) आधार पर भी किया। वर्ष 2004–05 इनके द्वारा ड्रिल को उपयोग किए जाने का पहला वर्ष था जिसमें इन्होंने 350/– रुपये प्रति एकड़ की दर से 125 एकड़ में गेहूं बोया और केवल एक ही सीजन में मशीन की पूरी कीमत वसूल कर ली। इसके अलावा, इन्होंने अपने फार्म पर निम्नलिखित नवीनतम विकसित मशीनों का उपयोग किया और अच्छे परिणाम हासिल किए।

- पडलिंग के लिए पल्वेराइजिंग (पेशक) रोलर (20–25 प्रतिशत जल की बचत)
- विभिन्न फसलों में गुड़ाई के लिए हाथ से चलने वाला पहियेदार कुदाल
- हाथ से चालित बहु फसल प्लांटर (हस्तचालित बहु फसल बोने की मशीन)
- लेजर लेवलर
- पॉवर वीडर (शक्ति चालित खरपतवार निकालने की मशीन)
- भूमिगत पाइपलाइन प्रणाली

• वर्ष 2005 में अन्य किसानों के साथ मिलकर श्री सिंह ने हल्दी के प्रसंस्करण एवं बिक्री के लिए ग्रीन गोल्ड फार्मर इन्टेरेस्ट ग्रुप का गठन किया। कृषि विज्ञान केन्द्र, गुरदासपुर की पहल पर वर्ष 2007 में इन्होंने राष्ट्रीय बागवानी मिशन से मिली वित्तीय सहायता से एक मैकेनिकल हल्दी प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित किया। इन्होंने वर्ष 2007–08 के दौरान 1,175 क्विंटल हल्दी, 210 क्विंटल प्रसंस्कृत हल्दी और 118 क्विंटल बीज की बिक्री करके 6.90 लाख रुपये का शुद्ध लाभ कमाया।

श्री माधवानन्द जोशी

पिता का नाम	श्री कुलोमणि जोशी
आयु	80 वर्ष
शिक्षा	5वीं पास
कृषि भूमि	2.5 एकड़
मुख्य फसलें	गेहूं, मसूर, जौ, दलहन, सब्जियां (मौसमी और बेमौसमी), फल, चाय, चारा एवं पुष्प
सम्बद्ध गतिविधियां	मात्स्यिकी, मधुमक्खी पालन व पशु पालन

पता		
गांव	:	सल्ला रॅतेला
डाकघर	:	शीतलाखेत
जिला	:	अल्मोड़ा, उत्तराखण्ड
मोबाइल	:	09012215549
ई–मेल	:	madhwanandjoshi@rediffmail.com

उपलब्धियां

• श्री माधवानन्द जोशी ने मात्स्यिकी एवं अंगोरा खरगोशों के पालन एवं उच्च मूल्य वाली सब्जियों से संघटकों की व्यापक क्षमता सहित विविधीकृत पर्वतीय खेती के साथ वन, पर्वतीय ढलान तथा जल संसाधनों का सफलतापूर्वक एकीकरण किया। इन्होंने शीत घास एवं वन्य पौधों की एक नर्सरी विकसित की और प्रतिवर्ष लगभग 25,000 पौधे तैयार किये। इन्होंने उच्च गुणवत्ता वाले फलदार वृक्षों का एक फलोद्यान भी विकसित किया। श्री जोशी ने पारम्परिक किस्मों का परिरक्षण किया, उनकी खेती की और इन किस्मों को पर्वतीय किसानों में वितरित किया। इन्होंने पारम्परिक किस्मों विशेषकर अरबी, लौकीवर्गीय सब्जियां, हल्दी, अदरक तथा मूली जैसी सब्जियों के बीजों का सावधानीपूर्वक रखरखाव किया और उनका पोषण किया।

• श्री जोशी ने बागवानी पौधों के साथ वन्य प्रजातियों तथा हल्दी व अदरक जैसी छाया पसंद करने वाली फसलों को उगाकर सफलतापूर्वक एकीकृत कृषि प्रणाली का विकास किया। इन्होंने संकर किस्म की नेपियर चारा घास और चाय की झाड़ियों का रोपण कर समेकन द्वारा सीढ़ीनुमा खेती में सुधार किया। इसके साथ ही इनके द्वारा विकसित जल संसाधनों का उपयोग मात्स्यिकी, सब्जियों व उच्च मूल्य वाली फसलों की खेती तथा पशुधन की जरूरतों को पूरा करने के लिए किया गया। श्री जोशी ने 5 जल टैंकों से लगभग 1.0 क्विंटल मछली उत्पादन किया। इन टैंकों का उपयोग सिंचाई के लिए भी किया गया। श्री जोशी ने 15 अंगोरा खरगोशों का एक फार्म विकसित किया जिससे इन्हें लगभग 5 किग्रा. ऊन प्राप्त हुई। इन्होंने पशुओं द्वारा उत्पन्न कूड़े–करकट और फार्म अपशिष्ट का इस्तेमाल वर्मी कम्पोस्टिंग के लिए किया। इसके अलावा, खाद बनाने के लिए स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री का उपयोग भी अधिकता में किया।

• श्री जोशी को अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं जिनमें सामुदायिक नेतृत्व, कृषि विविधीकरण एवं संरक्षण के लिए विवेकानन्द पर्वतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) से चौधरी चरण सिंह शताब्दी मान्यता पुरस्कार; भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली से समेकित खेती के लिए प्रगतिशील किसान पुरस्कार; गोविन्द वल्लभ पंत कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर (उत्तराखण्ड) से पर्वतीय खेती के रूपांतरण के लिए प्रगतिशील किसान पुरस्कार; तथा जीबीपीआईएचईडी (पर्यावरण एवं वन मंत्रालय), कोसी–कटारमल, अल्मोड़ा (उत्तराखण्ड) से पर्यावरण मित्र कृषक पुरस्कार शामिल हैं।

श्री शहाजी सम्भाजीराव गोरे

पिता का नाम	श्री सम्भाजी अम्बाजीराव गोरे
आयु	70 वर्ष
शिक्षा	स्नातकोत्तर एम.एससी. कृषि (सस्यविज्ञान)
कृषि भूमि	40 एकड़
मुख्य फसलें	गन्ना, सोयाबीन, ज्वार, गेहूं व चना

पता		
गांव	:	गोरेवाड़ी
डाकघर	:	बुकनवाड़ी
जिला	:	उस्मानाबाद – 413 509 महाराष्ट्र
मोबाइल	:	9423073499

उपलब्धियां

- श्री शाहजी सम्भाजीराव गोरे मिश्रित खेती जैसी कृषि विधियों और फसल चक्र का पालन करते हैं; उन्नत किस्मों, हरी खाद, कम्पोस्ट व गोबर गैस का घोल और पलवार का उपयोग करते हैं।
- रोग व कीटों की रोकथाम के लिए श्री गोरे गोमूत्र, नीम का पाउडर, दाश परनी अर्क का उपयोग करते हैं और कीटों के शत्रु पक्षियों को पालते हैं।
- श्री गोरे ट्रैक्टर चालित गन्ना रोपाई यंत्र का उपयोग भी करते हैं जिससे इन्हें मजदूरी की लागत में 50 प्रतिशत तक की बचत होती है और साथ ही ये अंतर संवर्धन ऑपरेशन के लिए पॉवर टिल्लर का उपयोग भी करते हैं।
- इनके द्वारा शुद्ध किस्मों के बीज एवं गन्ने की उन्नत किस्म (Co 671) के बीजों की बिक्री के साथ–साथ फलों को भी ग्रेडिंग के पश्चात् बॉक्स में पैकिंग कर बेचा गया।
- श्री गोरे ने सोयाबीन, गेहूं, चना व तूर के उत्पादन से 40 से 50 हजार रुपये प्रति हेक्टेयर; गन्ना उत्पादन से 2.5 लाख रुपये प्रति हेक्टेयर; बागवानी से रुपये 1.5 लाख प्रति हेक्टेयर का लाभ अर्जित किया।
- श्री गोरे भूमि को समतल करने, मेडबन्दी करने, खस घास की मेड बनाने, मेडों पर *ग्लायीरिसिडिया,* सुबाबूल, टीक का रोपण करने (हवा से बचने के लिए) जैसी विधियां अपनाते हैं। जल प्रबंधन के लिए श्री गोरे अलग–अलग उपाय अपनाते हैं जैसे कि ढ़लान पर बुवाई, मिश्रित खेती, ड्रिप (टपक) सिंचाई, पंक्तियों में सिंचाई, उप सतही सिंचाई, स्प्रिंक्लर सिंचाई, कुआ रिचार्जिंग, नाले पर बांध बनाकर, जल रिसाव के लिए बांध के साथ–साथ सीमेंट से बना बैण्ड 2' x 3' गहरा गडढ़ा, आदि।
- जल संरक्षण इन विधियों को अपनाकर इनके खेत के जल स्तर में तथा 30 टयूबवैलों की जल धारण क्षमता में सुधार हुआ है। जैसा कि इनका क्षेत्र पानी की कमी वाला है, अतः ये कृषि वानिकी के तहत हल्की मिट्टी प्लॉट शेल्टर की विधि को अपनाते हैं।

श्री तंकेश्वर गोगोई

		पता
पिता का नाम	स्व. श्री फुकन राम गोगोई	गांव : लुकहुरा, खनियाडागोन
आयु	72 वर्ष	डाकघर : काजीरंगा
शिक्षा	एच.एस.सी.	जिला : गोलाघाट, असम
कृषि भूमि	18.75 एकड़	मोबाइल : 07678779779
मुख्य फसलें	चावल, उड़द, सरसों, सब्जियां, केला, नारियल, असम लेमन एवं बांस	
सम्बद्ध उद्यम	सूअर पालन इकाई	

उपलब्धियां

- श्री तंकेश्वर गोगोई मुख्यतः धान एवं सरसों की खेती करते हैं। धान की खेती के लिए, श्री गोगोई बैल की सहायता से पहले दो बार जुताई कर तथा बाद में पॉवर टिल्लर की मदद से जुताई कर जमीन को तैयार करते हैं। इस प्रक्रिया द्वारा धान का जड़ भाग अच्छी तरह से विकसित करने में मदद मिल सकती है। श्री गोगोई उच्च उपजशील किस्मों, संकर किस्मों के बीजों और कुछ स्थानीय धान किस्मों का उपयोग खेती के लिए करते हैं। इनके द्वारा उपयोग की जाने वाली स्थानीय किस्म पानी की अधिकता, तापमान, कीटों एवं रोगों की सहिष्णु है। कीटों और रोगों की रोकथाम तथा खाद्य के परिरक्षण के लिए श्री गोगोई अन्य स्थानीय उपायों को भी अपनाते हैं। श्री गोगोई ने नवीन तकनीकों का इस्तेमाल कर अपने खेतों में मशीनीकरण को अपनाया है जिससे ये कम मेहनत के साथ अपना कृषि उत्पादन बढ़ाने में सफल हुए हैं। श्री गोगोई पशु अपशिष्ट यथा गोपशुओं, बकरी तथा सूअर का गोबर एवं वर्मीकम्पोस्ट का उपयोग अपने खेतों में जैविक उर्वरक के तौर पर करते हैं। इस प्रकार उगाये गए इनके उत्पाद अत्यधिक स्वास्थ्यवर्धक और रसायनों से मुक्त होते हैं। अपने प्रयोग के बाद बचने वाले उत्पादन को ये स्थानीय मिल तथा भारतीय खाद्य निगम के माध्यम से बेच देते हैं। जहां तक संभव होता है, श्री गोगोई पूरे वर्ष मौसमी फसलें उगाते हैं।
- चूंकि इनका मूल निवास स्थान एक पर्यटन स्थल है, इसलिए श्री गोगोई अपने यहां अनेक पर्यटकों को ठहराते हैं और उन्हें मौसमी सब्जियों तथा बागवानी उत्पादों की आपूर्ति करते हैं। श्री गोगोई को चावल, सरसों, उड़द, बागवानी फसलों तथा सब्जियों से मिलने वाला प्रति एकड़ लाभ क्रमशः 15,000/– रुपये, 7,500/– रुपये, 19,800/– रुपये, 27,000/– रुपये एवं 15,000/– रुपये है।
- श्री गोगोई मृदा का स्वास्थ्य बनाए रखने के प्रति भी जागरूक हैं। ये मिट्टी में अलग–अलग विधियों के माध्यम से जैविक सामग्री की आपूर्ति करते हैं। इनके भूमि क्षेत्र में कुछ तालाब भी हैं जहां ये जलकुंभी एवं एजोला उगाते हैं। उड़द की खेती कर बाद में जमीन को खाली छोड़ देने से ये मृदा के स्वास्थ्य को बनाए रखने में सफल हुए हैं।
- श्री गोगोई ने न केवल स्वयं को सहीं ढंग से स्थापित किया है वरन् ये भावी पीढ़ी को भी खेती के लिए नियमित रूप से प्रोत्साहित करते हैं। श्री गोगोई खेत प्रबंधन समिति की मदद से किसानों के बीच जागरूकता कार्यक्रमों एवं खेत प्रदर्शनों का आयोजन करते हैं।

श्री मेकला लक्ष्मी नारायण

पिता का नाम	श्री वैंकय्या	पता	
आयु	66 वर्ष	गांव	: डी. नं. 04–15–69 / 1A तीसरी लेन, पोस्टल कॉलोनी, अमरावती रोड़ गुंटूर, आन्ध्र प्रदेश 522 002
शिक्षा	स्नातक (बी.ए.)		
कृषि भूमि	10 एकड़		
मुख्य फसलें	कपास, दलहन, मिर्च, मसाले एवं धान	टेलिफोन	: 091–863.2229615
		मोबाइल	: 09393931232

उपलब्धियां

• श्री मेकला लक्ष्मी नारायण, आन्ध्र प्रदेश राज्य के एक सफल कृषि उद्यमी हैं। श्री नारायण बारानी भूमि में फसलों की खेती में आधुनिक तकनीकों का इस्तेमाल करते हैं। श्री नारायण सामान्तया कपास, दलहन, मिर्च, मसालों और चावल की खेती करते हैं। ये निर्यात के लिए कीटनाशक अपशिष्ट मुक्त मिर्च उत्पादन में आईटीसी–आईएलटीडी संभाग, गुंटूर के साथ बतौर समन्वयक सक्रिय हैं। इन्होंने मिर्च के प्रसंस्करण के लिए बुनियादी सुविधा और मिर्च को सुखाने के लिए सोलर पॉलीहाउस की सुविधा विकसित की है। श्री नारायण वर्ष 1972 से ही बरानी भूमि वाली फसलों यथा कपास, मिर्च, दलहन, हल्दी और साथ ही चावल की खेती के कार्य में लगे हुए हैं। अनेक संगठनों से जुड़े होने और साथ ही अपना आधुनिक फार्म हाउस, शुष्कन यार्ड्स, पॉलीहाउस होने के कारण श्री नारायण अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों, बैठकों, सेमिनार, विदेशी प्रतिनिधियों के साथ बैठकों, सरकारी कार्यक्रमों में भाग लेते हैं तथा साथ ही लेखों के प्रकाशनों, व टेलिविजन तथा रेडियों पर प्रसारित होने वाले कार्यक्रमों में भी इनकी भागीदारी बनी रहती है। श्री नारायण ने एक कम लागत वाला मिर्च बीज बुवाई उपकरण विकसित किया है जिसमें 10,000 पौद उत्पन्न करने के लिए केवल 100 ग्राम संकर बीज की आवश्यकता होती है जो कि एक एकड़ के मुख्य खेत में पौध–रोपण के लिए पर्याप्त होती है क्योंकि इसमें अंकुरण प्रतिशत बहुत ज्यादा (90 प्रतिशत) पाई जाती है। इस उपकरण का उपयोग करके न केवल बीज अंकुरण प्रतिशत को बढ़ाया जा सकता है बल्कि पारम्परिक विधि की तुलना में रुपये 600–800 प्रति एकड़ की दर से 20 ग्राम बीज भी बचाया जा सकता है। अण्डा देने के लिए फली छिद्रक के कीटों को आकर्षित करने के लिए श्री नारायण द्वारा जाल फसल के रूप में मिर्च के खेतों में 25 पौधे प्रति हेक्टेयर की दर से अरण्डी और गेंदा को उगाया जा रहा है। जाल अथवा ट्रैप फसल पर पलने वाले अण्डा समूह तथा छोटे झुंड में रहने वाले कैटरपिल्लर्स को इकट्ठा कर नष्ट किया जा सकता है। फसल को नुकसान पहुंचाने वाले कीटों को पक्षी पकड़ लेते हैं जिससे मुख्य फसल पर प्राथमिक टीकाकरण में कमी आती है। श्री नारायण द्वारा कीटनाशकों के रूप में पौधे के संजात जैसे कि नीम आधारित उत्पाद, तम्बाकू अपशिष्ट का अर्क, करंजी के बीज, लहसुन का अर्क आदि के कुछ फार्मूलेशन का उपयोग किया जा रहा है जो कि कई प्रमुख कीटों पर प्रभावी पाए गए हैं। इन्होंने निबोली को पीसकर सर्फ के साथ, तम्बाकु और चीनी हरी मिर्च, कैरोसिन और लहसुन, गौमुत्र, गुड़ आदि के जैविक कीट नाशकों को सफलता से बनाया और प्रयोग किया है।

श्री मोहिन्दर सिंह

पिता का नाम	श्री मनी राम
आयु	46 वर्ष
शिक्षा	10वीं (मैट्रिक)
कृषि भूमि	20 एकड़
मुख्य फसलें	खेत फसलें, सब्जियां व बागवानी फसलें, कृषि वानिकी

पता

गांव व : रसीना
पोस्ट : रसीना
जिला : कैथल, हरियाणा
सम्पर्क : 09416452883 (मोबाइल)
ई–मेल : mahinderrasina@gmail.com

उपलब्धियां

- श्री मोहिन्दर सिंह ने लेजर लेवलिंग, खेत में भूमिगत पाइपलाइन, ड्रिप सिंचाई, चावल की यांत्रिक रोपाई और "हैप्पी सीडर" से गेहूं की बुवाई कर कृषि में यांत्रिकीकरण को अपनाया। इन्होंने धान एवं गेहूं में शून्य जुताई तथा धान की सीधी बीजाई को भी अपनाया।
- गन्ने की खेती के लिए श्री सिंह ने गड्ढ़ा रोपण, खाई रोपण तथा क्यारी रोपण जैसी विभिन्न रोपण प्रणालियों का इस्तेमाल किया। मृदा की उर्वरता बनाए रखने के लिए इन्होंने ढ़ैंचा एवं मूंग का उपयोग करके हरी खाद के उपयोग को अपनाया, रोग नियंत्रण के लिए गन्ने में ट्राइकोडर्मा तथा मूंग व गेहूं की फसल में जैव–उर्वरकों का प्रयोग किया।
- इसके साथ ही इन्होंने धान में बीज उपचार और गन्ने में छिद्रक तथा पायरिला की रोकथाम के लिए "ट्राइको कार्ड्स" का प्रयोग किया। इन्होंने अपने खेत में एक वर्मी कम्पोस्ट इकाई स्थापित की है। श्री सिंह अपने खेत की चारदीवारी पर वर्षभर फलों एवं सब्जियों के किचन गार्डन पौधे उगाते हैं।
- श्री सिंह ने वर्मी कम्पोस्टिंग में बायोगैस घोल का उपयोग, गेहूं तथा धान में छिड़काव के रूप में वर्मीवाश का उपयोग, जैसिड तथा पत्ती भक्षकों के विरूद्ध सब्जियों में प्रयोग के लिए नीम आधारित कीटनाशक तैयार करना, उभरी क्यारियों पर चना फसल उगाना और नाइट्रोजन, फॉस्फोरस एवं पोटेसियम वाले अपशिष्ट का उपयोग करके उच्च गुणवत्ता वाला कम्पोस्ट तैयार करना जैसी नवोन्मेषी प्रौद्योगिकियां अपनाईं। श्री सिंह अपने खेत के उत्पादों की बिक्री के लिए इन्टरनेट का इस्तेमाल करते हैं।
- श्री सिंह ने खुम्ब (मशरूम) उत्पादन प्रौद्योगिकी, मधुमक्खी पालन, नर्सरी तैयार करना, डेयरी पालन एवं फसल उत्पादन के विभिन्न पहलू, पशु विज्ञान, कृषि वानिकी तथा कृषि आधारित सहायी व्यवसायों में अनेक प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया।
- इन्हें अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं जिनमें वर्ष 2010 में आर.आर.एस., उचानी में ऑस्ट्रेलियन काउन्सिल फॉर इंटरनेशनल एग्रीकल्चरल रिसर्च के अंतर्गत यांत्रिक तरीके से रोपण कर धान की खेती के लिए मान्यता प्रमाण–पत्र भी शामिल है। श्री सिंह ने वर्ष 2007–2012 के दौरान कृषि विज्ञान केन्द्र, कैथल द्वारा आयोजित फसल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान हासिल किया।
- श्री सिंह वर्ष 2011 में नाबार्ड द्वारा ब्लॉक स्तर पर गठित प्रगतिशील किसान क्लब के संस्थापक सचिव रह चुके हैं।

श्री राजाराम विट्ठल चौधरी

पिता का नाम	श्री विट्ठल सजानगी चौधरी	**पता**	
आयु	58 वर्ष	गांव	: शिरोल (बीके)
शिक्षा	एस.एस.सी. (10वीं)	तालुका	: जुन्नर
कृषि भूमि	3 एकड़	जिला	: पुणे – 410 511 महाराष्ट्र
मुख्य फसलें	गन्ना, अरण्डी, गुलदाउदी, शरीफा	मोबाइल	: 9860594934

उपलब्धियां

• श्री राजाराम विट्ठल चौधरी का जन्म महाराष्ट्र की जुन्नर तहसील के एक छोटे से गांव में हुआ। इनके पास अपनी बंजर भूमि पर एक कुंआ है। इनको मिली सफलता में इनके द्वारा बनाई गई अच्छी योजना और प्रबंधन तथा बुनियादी सुविधाओं की स्थापना करना शामिल है। इन्होंने पारम्परिक खेती से अलग हटकर वर्षभर अपने खेत में उपयुक्त पैटर्न अपनाने का निर्णय लिया। ये एम.पी.के.वी., राहुरी विद्यापीठ से अरण्डी, भिण्डी, सोयाबीन, गेहूं के बीज तथा गुलाब के पौधे लाए।

• श्री चौधरी ने पुष्प उत्पादन के क्षेत्र में विशेषज्ञों तथा अनुभवी किसानों का साहित्य पढ़ा और उनसे सलाह ली। इन्होंने विपणन के महत्व को समझते हुए अपने गुलाबों तथा एस्टर के फूलों को मुम्बई भेजने के लिए कड़ी मेहनत की जहां इन्हें पांच सितारा होटलों में गुणवत्ता वाले अण्डों के लिए मांग के बारे में पता चला। तब इन्होंने ''इमु खेती (Emu Farming)'' प्रारंभ की।

• एम.पी.के.वी., राहुरी के वैज्ञानिकों ने इनके खेत का दौरा किया और इन्हें सोयाबीन की खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. देशमुख की सलाह पर श्री चौधरी ने सोयाबीन की खेती करना प्रारंभ किया और पुणे जिले में इनका सोयाबीन उत्पादन सर्वश्रेष्ठ था। इन्होंने सोयाबीन उत्पादन के लिए वैज्ञानिक विधियों का पूर्णतया अंगीकरण किया।

• श्री चौधरी, मुम्बई तथा पुणे के बाजारों में सब्जियों की आपूर्ति कर रहे हैं। इसके साथ ही ये निर्यात गुणवत्ता के लिए नारियल, शरीफा तथा गेहूं की खेती करते हैं।

• श्री चौधरी को छोटी कृषि जोत में कृषि में उल्लेखनीय योगदान के लिए सर्वश्रेष्ठ किसान के लिए जिला, राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं।

श्री राजवीर सिंह

पिता का नाम	स्व. श्री जय पाल सिंह
आयु	55 वर्ष
शिक्षा	स्नातक (बी.ए. ऑनर्स)
कृषि भूमि	15 एकड़
मुख्य फसलें	फलोद्यान : आम व लीची; हल्दी, गेहूं, गन्ना, धान

पता

गांव : ए–216, यमुनापुरम, बुलंदशहर, उत्तर प्रदेश

टेलिफोन : 05732–326871

मोबाइल : 09358529359

उपलब्धियां

• श्री राजवीर सिंह आम की खेती के एक प्रगतिशील किसान हैं जो कि मुख्य फसल के रूप में आम की दशहरी तथा चौसा किस्में और लीची उगाते हैं। ये नवीनतम फलोद्यान रीतियों को अपनाकर प्रति वर्ष रुपये 6 लाख की आय अर्जित करते हैं और अब अन्य किसानों को भी प्रेरित करते हैं।

• श्री सिंह सघन रोपण विधि के आम फलोद्यान में अंतर फसल के रूप में हल्दी की खेती करते हैं और साथ ही गेहूं, गन्ना और धान का वैज्ञानिक तरीके से बीजोत्पादन करते हैं।

• श्री सिंह वर्ष 1989 में राज्य कृषि उत्पादन एवं विपणन परिषद, उत्तर प्रदेश के सदस्य रहें हैं। इसके अलावा श्री सिंह कृषि विज्ञान केन्द्र की वैज्ञानिक सलाहकार समिति के सदस्य; जिला स्तरीय सिंचाई सलाहकार समिति, बुलन्दशहर के सदस्य; सरदार बल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (एस.वी.पी.यू.ए. एंड टी.), मेरठ की वैज्ञानिक अनुसंधान सलाहकार समिति के सदस्य तथा जिला अग्रणी बैंक (पंजाब नेशनल बैंक), बुलन्दशहर में प्रगतिशील किसान हैं।

• श्री राजवीर सिंह को केन्द्रीय अर्ध–उष्णकटिबंधीय बागवानी संस्थान, लखनऊ की संस्थान प्रबंधन समिति में गैर–सरकारी सदस्य नामित किया गया है। श्री राजवीर सिंह वर्ष 2011 में विविधीकृत कृषि के लिए एन.जी. रंगा किसान पुरस्कार हेतु भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की निर्णायक समिति में भी सदस्य रह चुके हैं। इसके अलावा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद (ICAR); भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI); कृषि वैज्ञानिक चयन मण्डल (ASRB), नई दिल्ली एवं प्रोफेसर एम.एस. स्वामीनाथन द्वारा श्री राजवीर सिंह की सराहना भी की गई है।

• इन्हें वर्ष 2009 में सरदार बल्लभभाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (एस.वी.पी.यू.ए. एंड टी.), मेरठ द्वारा एवं वर्ष 2010 में उदयपुर में राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केन्द्र सेमिनार में प्रगतिशील किसान पुरस्कार मिल चुके हैं। वर्ष 2011 में इन्हें हाईटेक हार्टीकल्चर सोसायटी, मेरठ नवोन्मेषी किसान पुरस्कार प्रदान किया गया। श्री राजवीर सिंह ने दिनांक 21 जून, 2012 को नई दिल्ली में कृषि दर्शन पर सीधी प्रसाारित की गई प्रगतिशील किसान परिचर्चा में भी भाग लिया।

श्री कृष्ण मुरारी सिंह

पिता का नाम	स्व. श्री कारू सिंह
आयु	63 वर्ष
शिक्षा	स्नातक (बी.ए. ऑनर्स)
कृषि भूमि	34 एकड़
मुख्य फसलें	धान (बीज उत्पादन), दलहन, सब्जियां एवं मात्स्यिकी

पता

गांव : बर्मा
डाकघर : कैथमा वाया सिरारी
जिला : शेखपुरा – 811 107, बिहार
मोबाइल : 9955563465, 8651485295
ई–मेल : kmskisan@gmail.com

उपलब्धियां

- श्री कृष्ण मुरारी सिंह 'किसान' एक प्रगतिशील किसान एवं कृषि पत्रकार हैं। इन्होंने अपने मूल्यवान लेखन एवं कार्यकलापों से किसानों के बीच विज्ञान एवं कृषि की जानकारी को लोकप्रिय बनाया है।
- विभिन्न प्रमुख प्रकाशनों में इनके 500 से भी ज्यादा स्वः लिखित लेख प्रकाशित हो चुके हैं जो कि किसी भी किसान द्वारा लिखे गए प्रकाशनों का एक रिकॉर्ड है।
- वैज्ञानिकों द्वारा भी इनके खेत और इनकी कृषि विशेषताओं के बारे में लिखा गया है। श्री सिंह कुल 89 बार रेडियो तथा टेलिविजन पर वार्ता एवं साक्षात्कार प्रस्तुत कर चुके हैं। इनके लेख भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली के प्रकाशनों यथा खेती, फल–फूल और कृषि चयनिका में प्रकाशित हो चुके हैं।
- इनके लेख ग्रामीण विकास मंत्रालय की कुरूक्षेत्र पत्रिका में भी प्रकाशित हो चुके हैं। तीन अनुसंधान पेपरों सहित अनेक विश्वविद्यालय पत्रिकाओं में श्री सिंह के लेख प्रकाशित हो चुके हैं। दैनिक समाचार–पत्र नामतः हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स, दैनिक जागरण, आर्यावर्त, दि टाइम्स ऑफ इंडिया और दि हिन्दू में भी इनके लेख प्रकाशित हो चुके हैं।
- श्री कृष्ण मुरारी सिंह एक नवोन्मेषी किसान, लेखक, कवि और कृषि पत्रकार हैं। इन्होंने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद द्वारा प्रकाशित वर्षा आश्रित टिकाऊ खेती, लोक कहावतों में भारतीय कृषि, तथा परिवार शीर्षक से पुस्तकें भी लिखीं हैं।
- इसके अलावा इन्होंने प्राकृतिक पशु चिकित्सा शास्त्र समेत विज्ञान, वन पर्यावरण, किसान चालीसा, परम्परागत पशु चिकित्सा आदि पुस्तकें भी लिखीं हैं। इन्हें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद पुरस्कार और वर्ष 1999 में लिम्का बुक ऑफ रिकॉर्ड पुरस्कार मिल चुका है।

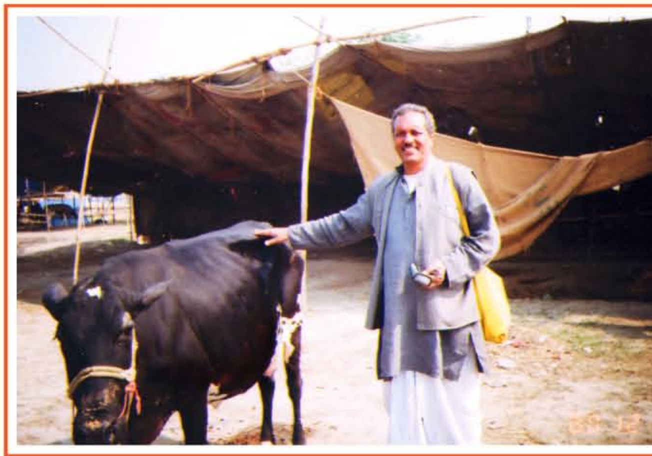

पिता का नाम	सरदार जगरूप सिंह
आयु	44 वर्ष
शिक्षा	स्नातक (बी.ए.)
कृषि भूमि	42 एकड़
मुख्य फसल	सब्जियां, फल, वन पौधे आदि

पता		
गांव	:	तुगवली
पोस्ट	:	तुगवली
जिला	:	भटिण्डा–151101, पंजाब
मोबाइल	:	09814749406
ई–मेल	:	mannmakhifarm@gmail.com

उपलब्धियां

• श्री गुरचरण सिंह मान ऐसे समय में जब कि अनेक किसान कृषि का विकल्प तलाश रहे हैं, भारत में अपने समकालीन किसानों के लिए एक उदाहरण एवं प्रेरणा के स्रोत हैं। इन्होंने कृषि तथा सहायी व्यवसाय में अभूतपूर्व सफलता हासिल की है। इन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, भटिण्डा से मार्गदर्शन प्राप्त किया और डेयरी पालन पर व्यावसायिक प्रशिक्षण हासिल कर संकर नस्ल की पांच गायों के साथ डेयरी पालन उद्यम प्रारंभ किया। इससे इन्हें रोजाना आमदनी होने लगी। साथ–साथ इन्होंने गोबर गैस संयंत्र भी स्थापित किया। श्री मान ने मधुमक्खी पालन पर प्रशिक्षण प्राप्त कर राज्य के कृषि विभाग, भटिण्डा से रियायती दरों पर मधुमक्खी के 20 बॉक्स के साथ एक लघु मधुमक्खी पालन इकाई प्रारंभ की। इनके पास मधुमक्खी के 2500 से भी अधिक बॉक्स के साथ शहद प्रसंस्करण इकाई, शहद पैकेजिंग इकाई और बॉक्स निर्माण इकाई है।

• श्री मान की उपलब्धियों से बड़ी संख्या में युवा किसान एवं कृषिरत महिलाएं प्रेरित हैं और बहुत से लोग श्री मान के मार्गदर्शन में इस व्यवसाय से अपनी आजीविका कमा रहे हैं। श्री मान ने ''एगमार्क'' प्रमाणन हासिल किया है और शहद की आपूर्ति के लिए डाबर इंडिया लिमिटेड, कश्मीर ऐपीयारी तथा स्थानीय एवं दूरवर्ती बाजारों से समझौते किए हैं। इसके साथ ही इन्होंने 1.5 एकड़ क्षेत्र में मछली पालन व्यवसाय प्रारंभ कर उसे धीरे–धीरे 10 एकड़ क्षेत्र में फैला लिया है जिसमें मछली की रोहू, कटला (कॉमन कार्प) तथा अमेरिकन कॉर्प प्रजातियों का पालन किया जाता है। खेत से निकाले गए अतिरिक्त पानी का इस्तेमाल मत्स्य पालन के लिए किया जाता है। श्री मान गांवों तथा निकटवर्ती शहरों में मछलियों की बिक्री करके एक वर्ष में ₹ 40,000/– की आय अर्जित कर रहे हैं। इनकी सफलता को देखकर लगभग दस साथी किसानों और उनके संबंधियों ने भी इस व्यवसाय को अपनाया है। श्री मान ने कृषि वानिकी के अंतर्गत अपनी 2.5 एकड़ जमीन पर प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने में योगदान दिया जिसमें इनके द्वारा 10,000 से भी अधिक पौधों का रख–रखाव किया जा रहा है। श्री मान ग्रीनहाउस सहित संरक्षित संरचना के तहत सब्जियों की खेती करके अच्छा लाभ कमा रहे हैं। श्री मान अपने खेत के लिए जरूरी फलों व सब्जियों की नर्सरी तैयार कर रहे हैं और इनकी योजना गुणवत्ता फलों एवं वन्य पौधों की नर्सरी का व्यावसायीकरण करने की है। इन्होंने बीजों की बिक्री के लिए पंजाब कृषि विभाग से लाइसेंस प्राप्त कर लिया है। शहद, सब्जियों के बीजों व सजावटी पौधों, तथा मधुमक्खी पालन के उपकरणों की बिक्री के लिए ''मान एग्रो सेन्टर'' के नाम से इन्होंने भटिण्डा और मनसा में दो बिक्री पटल स्थापित किए हैं। श्री गुरचरण सिंह मान को अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं जिनमें पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा विविधीकृत कृषि में नवोन्मेषी किसान के लिए प्रवासी भारतीय पुरस्कार, कृषि में विविधीकरण के लिए मुख्य मंत्री पुरस्कार तथा विविधीकृत कृषि के लिए एन.जी. रंगा पुरस्कार प्रमुख हैं।

सरदार सुरजीत सिंह संधू

पिता का नाम	सरदार शंगारा सिंह संधू
आयु	61 वर्ष
शिक्षा	स्नातक (बी.एससी. (मेडीकल), एम.ए. (अंग्रेजी)
कृषि भूमि	80 एकड़
मुख्य फसल	किन्नू, सब्जियां, आलू, गेहूं व सूरजमुखी

पता		
गांव	:	आर्यनवाला
पोस्ट	:	सैदोवाला
जिला	:	कपूरथला, पंजाब
मोबाइल	:	01822–232801, 09855230598
ई–मेल	:	sandhutravels85@yahoo.in

उपलब्धियां

• श्री सुरजीत सिंह संधू पंजाब राज्य के एक प्रगतिशील किसान हैं जिन्हें कृषि में 35 वर्षों का अनुभव है। इन्होंने पंजाब एग्रो पेप्सी कम्पनी लि. के साथ सहयोग कर शीत मक्का की खेती प्रारंभ की और उसके बाद सब्जियां उगाना शुरू किया। सब्जियों की खेती करते हुए श्री संधू द्वारा अनेक नवोन्मेषी कार्य किए गए हैं जैसे कि उठी हुई क्यारी और गहरी क्लाइसलाइन (cliseline) में खेती करना। इन्होंने अपने खेत में कुशल मजदूरों की मदद से 1700–1800 बॉस्केट बनाकर शहतूत के 200 पौधे लगाए हैं।

• इन्होंने अपने 25 एकड़ के किन्नू फलोद्यान में तथा सब्जियों के 4 एकड़ क्षेत्र में ड्रिप सिंचाई प्रणाली अपनाई है। इन्होंने सन् 1978 से बायोगैस संयंत्र लगाकर पुआल को नहीं जलाकर पर्यावरण की सुरक्षा की है। सुपर फॉस्फेट + यूरिया मिलाकर सुपर डाइजेस्ट कम्पोस्ट तैयार करके घूरे की खाद का उपयोग किया। इसी प्रकार लेजर लेवलिंग द्वारा जमीन को समतल बनाया गया। मार्च तथा जुलाई के महीने में ग्रीष्म एवं खरीफ मूंग की बुवाई कर फलोद्यान में अंतर फसल चक्र को अपनाया गया। ड्रिप सिंचाई के साथ फर्टिगेशन–अनेक पोषक तत्वों का अनुप्रयोग करके पोषक तत्वों की 70 प्रतिशत तक बचत की गई। खेत की मेड अथवा चारदीवारी पर बॉस्केट के लिए सफेदा के 500 तथा शहतूत के 200 वृक्ष लगाकर कृषि वानिकी अपनाई गई। फलों व सब्जियों का विपणन स्वयं करना इनकी कृषि में सफलता का मूल कारण रहा। सर्दियों में इन्होंने कम ऊंचाई वाली सुरंग प्रौद्योगिकी का उपयोग करके टमाटर तथा मिर्च की खेती की। इनके अहाता कुक्कुट पालन में 30 पक्षी तथा अहाता भेड–बकरी पालन में 20 पशु हैं। इनके द्वारा मिर्च, टमाटर तथा सूरजमुखी का बीज उत्पादन किया जा रहा है।

• श्री संधू कृषि विज्ञान केन्द्र, कपूरथला (पंजाब कृषि विश्वविद्यालय) के परामर्श मण्डल के सदस्य; कपूरथला राष्ट्रीय बागवानी मिशन के सदस्य; कपूरथला मार्केट कमेटी के पूर्व अध्यक्ष; कपूरथला जिला उत्पादन कमेटी के सदस्य; पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, एल.डी.एच. की प्रसार परिषद के सदस्य; फल एवं सब्जी निर्यात के राज्य सदस्य हैं। इन्होंने वर्ष 1997 में इस्रायल में आयोजित एग्रो टेक मेला में पंजाब राज्य के प्रतिनिधिमण्डल का प्रतिनिधित्व किया। इसके अलावा अपने कृषि प्रेम के कारण इन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका, कनाड़ा, हालैण्ड, आस्ट्रेलिया सहित 30 से भी अधिक देशों का दौरा किया है।

• श्री सुरजीत सिंह संधू को अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं जिनमें पंजाब एग्रो पेप्सी लि. द्वारा वर्ष 1999 का सर्वश्रेष्ठ मिर्च उत्पादक पुरस्कार; वर्ष 1996 में टमाटर के लिए वर्ष का उत्पादक पुरस्कार प्रमुख हैं। श्री सुरजीत सिंह संधू को पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना में आयोजित किसान मेला–2012 के अवसर पर बागवानी का मुख्यमंत्री पुरस्कार प्रदान किया गया।

श्री मनिन्दर मिस्त्री

		पता	
पिता का नाम	स्व. श्री पंचानन मिस्त्री		
आयु	72 वर्ष	गांव	: देशबंधु
शिक्षा	5वीं पास	जिला	: दिगलीपुर नार्थ एवं मिडल अंडमान – 744 202 अंडमान व निकोबार द्वीप समूह
कृषि भूमि	38 एकड़		
मुख्य फसलें	रोपण फसलें (नारियल, सुपारी, खनफल (अल्टाफल), लौंग, काली मिर्च, दालचीनी), बागवानी फसलें (सेब, नाशपाती, अंगूर), धान, सब्जियां, दलहन एवं अदरक		

उपलब्धियां

• अंडमान व निकोबार द्वीप समूह के श्री मनिन्दर मिस्त्री मैदानी भूमि में विभिन्न प्रकार की कृषि, पौध रोपण, बागवानी फसलों तथा मात्स्यिकी उत्पादन के लिए प्रसिद्ध हैं। इन्होंने अपने खेत में पीले, लाल तथा सफेद नाम वाली 'किंग'' नारियल किस्मों का रोपण किया है। कुल 500 पौधे प्रतिमाह औसतन 1200 फल उत्पादन देते हैं।

• सुपारी की तीन किस्मों यथा मोंगला, कालीकट तथा समृद्धि का पौध रोपण किया तथा सुपारी के 1000 वृक्षों से प्रति वर्ष 2500 किग्रा. सुपारी उत्पादन हासिल करते हैं। इन्होंने खुमफल/अल्टा फल का पौध रोपण भी किया है। इसे इसकी समानता, आकार, स्वाद और अंगूर की भांति पोषण मान के कारण अंडमान अंगूर भी कहा जाता है। यह फल केवल अंडमान व निकोबार द्वीप समूह में उपलब्ध है तथा इसकी निधानी आयु ज्यादा है, इसे कमरे के सामान्य तापमान में 15 दिनों तक भंडारित किया जा सकता है। श्री मिस्त्री ने तीन वर्ष पूर्व इस फल की खेती प्रारंभ की और पाया कि इसमें उच्च मान हैं और इसकी स्थानीय बाजार में काफी मांग है। खुमफल के बीजों की आपूर्ति अनुसंधान प्रयोजन के लिए सी.ए.आर.आई. को की गई। पोषक तत्व संयोजन विश्लेषण से पता चला कि यह फल एंटी ऑक्सीडेन्ट सक्रियता तथा आयरन से भरपूर है। अंडमान अंगूर द्वारा अच्छा निर्यात मूल्य हासिल किया जा सकता है और अत्यधिक पसंद किए जाने एवं भण्डारण जीवनकाल दीर्घ होने के कारण इसकी आपूर्ति देश के विभिन्न भागों तथा विदेशों में भी की जा सकती है।

• श्री मिस्त्री पिछले 4–5 वर्षों से लौंग, काली मिर्च तथा दालचीनी का पौध रोपण कर रहे हैं और इन्होंने सेब, नाशपाती तथा अंगूर की खेती करना भी प्रारंभ कर दिया है।

• श्री मिस्त्री धान (सुपर मिनिकेट, त्रिगुणा, जीरा चावल, बासमती), सब्जियों (भिण्डी, फली, घिया, चिचिंडा, कद्दू, तोरई, बैंगन, खीरा तथा हरी पत्तीदार सब्जियां), दलहन एवं अदरक की खेती करते हैं। मात्स्यिकी के क्षेत्र में श्री मिस्त्री द्वारा रोहू, कटला, मृगाल, सिल्वर कार्प, ग्रास कार्प, कॉमन कार्प, पण्टियस तथा पैंगासियस प्रजातियों को बहु संवर्धन प्रणाली के तहत पाला जा रहा है। इन्होंने विभिन्न एकीकृत कृषि रीतियों को अपनाया है यथा बत्तख व मछली पालन; कुक्कुट पालन व मछली पालन – धान व मछली पालन; तथा सब्जी व मछली पालन।

श्री भगवान दास

पिता का नाम	श्री कुन्दन लाल	**पता**	
आयु	80 वर्ष	गांव	: राखरा
शिक्षा	स्नातकोत्तर (एम.एससी.) एलएलबी	पोस्ट	: राखरा
		जिला	: पटियाला, पंजाब
कृषि भूमि	15 एकड़	टेलीफोन	: 0175–2364200
मुख्य फसल	चावल व गेहूं	मोबाइल	: 09815236307
		ई–मेल	: youngfarmer@rediffmail.com

उपलब्धियां

• पंजाब में बासमती चावल की खेती का क्षेत्रफल बढ़ाने में श्री भगवान दास का योगदान सराहनीय है। इन्होंने बासमती की विकसित की गई नई उच्च उपजशील किस्मों को लोकप्रिय बनाने में कड़ी मेहनत और व्यापक कार्य किया है। इन्होंने बड़ी संख्या में किसानों को धान की पारम्परिक खेती के स्थान पर बासमती चावल की पानी की बचत करने वाली किस्मों की खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया है। यह श्री भगवान दास जी के प्रयासों का ही परिणाम है जिसमें इन्होंने अपने लेखन, प्रकाशन एवं प्रसार कार्यों के माध्यम से गांव में छोटे किसानों तक प्रौद्योगिकियों के बारे में जागरूकता पैदा की इसीलिए आज पंजाब के धान उगाए जाने वाले कुल 8.62 लाख हेक्टेयर क्षेत्रफल के 80 प्रतिशत से भी अधिक क्षेत्रफल में पूसा बासमती 1509 एवं पूसा बासमती 1121 की किस्मों की खेती की जा रही है। श्री भगवान दास ने रतुआ से ग्रसित गेहूं की पुरानी पीबीडब्ल्यू 343 किस्म के स्थान पर गेहूं की रोगमुक्त उच्च उपजशील किस्म एचडी 2967 के प्रसार में उल्लेखनीय कार्य किया है जिसके परिणामस्वरूप राज्य में 51 क्विंटल प्रति हेक्टेयर के रिकॉर्ड स्तर तक उत्पादकता में वृद्धि हुई है। रतुआ प्रतिरोधी इस किस्म की खेती पंजाब के धान उगाए जाने वाले कुल क्षेत्रफल के 75 प्रतिशत से भी अधिक क्षेत्र में की जाती है।

• श्री भगवान दास द्वारा गेहूं की उच्च उपजशील किस्म एचडी 3086 के प्रसार में भी उल्लेखनीय भूमिका निभाई जा रही है जिससे किस्मीय विविधीकरण हासिल करने में मदद मिल रही है। श्री भगवान दास ने 10,000 से भी अधिक किसानों को यंग फार्मर एसोसिएशन के रूप में संगठित करके प्रशिक्षण दिया है और भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित गेहूं और बासमती चावल की किस्मों के आधारीय बीजों को उन्हें प्रदान किया है। इससे गेहूं–चावल फसलचक्र की उत्पादकता बढ़ी है। श्री भगवान दास ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित विभिन्न फलदार एवं शाकीय किस्मों के बारे में किसानों को जागरूक करके राज्य में आम एवं सब्जी की खेती को लोकप्रिय बनाने में मदद की है।

• इन्होंने कई बार बैंकर, वरिष्ठ अधिकारियों तथा कृषि वैज्ञानिकों आदि के साथ एक टीम लीडर के रूप में दक्षिण–पूर्व एशिया एवं सुदूर एशिया का दौरा किया है। इनके द्वारा एशिया एवं पैसिफिक के लिए संयुक्त राष्ट्र आर्थिक एवं सामाजिक आयोग, बैंकॉक में परामर्शक के रूप में कार्य किया गया। इन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका की लिंकेन लैंड पॉलिसी के तहत चीन गणराज्य में आयोजित ग्रामीण विकास एवं भूमि सुधार तथा कराधान वित्त आदि में पाठ्यक्रम में भाग लिया।

• श्री भगवान दास को वर्ष 2012 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान फेलो (अध्येता) पुरस्कार से सम्मानित किया गया। जुलाई, 2014 में कृषि अनुसंधान एवं विकास में उत्कृष्ट पत्रकारिता के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का चौधरी चरण सिंह पुरस्कार प्रदान किया गया।

श्री परमा राम चौधरी

पिता का नाम	श्री ज्ञानू राम	**पता**
आयु	61 वर्ष	गांव : छत्तर
शिक्षा	10वीं	डाकघर : जुगाहन
कृषि भूमि	5 एकड़	तहसील : सुन्दरनगर,
मुख्य फसलें	धान, मक्का, गेहूं, सब्जियां (रबी : मटर व आलू, खरीफ : फ्रेंचबीन व टमाटर), तिलहन व दलहन	जिला : मण्डी –175 002 हिमाचल प्रदेश मोबाइल : 0985756261

उपलब्धियां

- श्री परमा राम चौधरी हिमाचल प्रदेश में मण्डी जिले के एक प्रगतिशील व नवोन्मेषी किसान हैं। ये गेहूं व धान के प्रमाणित बीजों के उत्पादन में लगे हुए हैं। श्री चौधरी रबी मौसम में गेहूं, तिलहन, दलहन, मटर व आलू जैसी सब्जियों की खेती करते हैं जबकि खरीफ में मक्का, धान, तिलहन, दलहन और फ्रेंचबीन व टमाटर जैसी सब्जियों की खेती करते हैं।
- श्री चौधरी एक छोटी डेयरी इकाई भी चलाते हैं जिसमें कुल 5 भैंस हैं। श्री चौधरी राष्ट्रीय राजमार्ग पर स्थित होटलों को पनीर जैसे प्रसंस्कृत उत्पाद बेचते हैं। पशुओं के गोबर, तथा फसल व रसोई से निकलने वाले अपशिष्ट का उपयोग वर्मीकम्पोस्ट इकाई में किया जाता है और तैयार वर्मीकम्पोस्ट का इस्तेमाल जैविक खेती के लिए किया जाता है।
- श्री चौधरी द्वारा अतिरिक्त आमदनी के लिए एक कुटीर आटा मिल भी चलाई जाती है तथा आटा मिल से निकलने वाले अपशिष्ट का उपयोग पशु चारा के रूप में किया जाता है।
- श्री चौधरी ने एक रेशम पालन इकाई भी स्थापित की है और इससे प्रति वर्ष लगभग 125 किग्रा. ताजा कोकून्स का उत्पादन कर 25,000 से 30,000 रुपये की आमदनी हासिल की जाती है। यह विधि 2500 पौधों वाले शहतूत के उद्यान में अंतर–फसलचक्र के रूप में अपनाई गई है। सर्दियों के दौरान रेशम पालन कमरे का उपयोग सफेद बटन मशरूम की खेती (लगभग 400 किग्रा. मशरूम) के लिए किया जाता है और अपशिष्ट कम्पोस्ट का इस्तेमाल घर में बहु–स्तरीय फसल उगाने के लिए किया जाता है। नवीन कृषि अन्वेषणों में एक खराब स्कूटर के इंजन से लागत प्रभावी बहु उद्देश्यीय टिल्लर व पडलर, एक बुश कटर से संशोधित बहु फसल हार्वेस्टर और मक्का शेलर प्रमुख हैं। श्री चौधरी क्षेत्र में अन्य किसानों की प्रेरणा के स्रोत हैं और अपने सस्ते नवीन अन्वेषणों और सीमांत कृषिजोत के लिए मॉडलों के विकास द्वारा इन्होंने अन्य किसानों के सामने सफलता का एक उदाहरण प्रस्तुत किया है। साथ ही आजीविका सुरक्षा के लिए समेकित कृषि प्रणाली मॉडल के माध्यम से सीमित संसाधनों के उन्नत एवं प्रभावी उपयोग के उदाहरण भी प्रस्तुत किए हैं। श्री चौधरी को नवीन फार्म रीतियों को अपनाने के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

श्री राजेन्द्र सिंह रावल

पिता का नाम	स्व. श्री भंवर सिंह
आयु	49 वर्ष
शिक्षा	10वीं
कृषि भूमि	40 एकड़
मुख्य फसलें	गेहूं, धान, गन्ना, मूंग, प्याज, बैंगन, भिण्डी, फूलगोभी, सरसों, मशरूम

पता		
गांव	:	छाजपुर खुर्द
डाकघर	:	छाजपुर कलां
तहसील	:	बपोली
जिला	:	पानीपत –132 104 हरियाणा
मोबाइल	:	09671200074 9416268296

उपलब्धियां

• श्री राजेन्द्र सिंह रावल ने गेहूं की खेती में शून्य जुताई की रीति को अपनाया। श्री रावल, हरी खाद, लेजर लेवलिंग, अपशिष्ट प्रबंधन, धान की सीधी बीजाई, भूमिगत जल प्रबंधन, वर्मी–कम्पोस्टिंग तथा फसल विविधीकरण जैसे नवोन्मेषी और संसाधन संरक्षण तकनीकों को अपनाने में सदैव अग्रणी रहे हैं।

• श्री रावल का कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि विभाग, बागवानी विभाग, इफको, कृभको, राष्ट्रीय फर्टिलाइजर लि., भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों आदि के साथ लगातार सम्पर्क बना रहा। इन्होंने विभिन्न एजेन्सियों द्वारा अपने खेत पर बड़ी संख्या में प्रसार गतिविधियां आयोजित करवा कर प्रमुख नवोन्मेषी तकनीकों के आकलन, परिष्करण तथा प्रसार में उल्लेखनीय भूमिका निभाई है।

• श्री रावल ने दूरदर्शन तथा ऑल इंडिया रेडियों द्वारा आयोजित किए गए अनेक टीवी एवं रेडियों कार्यक्रमों में भाग लिया है। इनकी उपलब्धियों पर दिल्ली दूरदर्शन के ज्ञान दर्शन और कृषि दर्शन कार्यक्रम में कई डाक्यूमेन्ट्री फिल्में तैयार की गईं और उनका प्रसारण किया गया।

• श्री रावल ने सम्बद्ध उद्यमों में भी सफलता हासिल की और मशरूम की खेती में सर्वश्रेष्ठ कुल बिक्री (टर्नओवर) दर (मशरूम की पैदावार/कम्पोस्ट का भार) का पुरस्कार हासिल किया।

• इन्होंने डेयरी पालन को फसल विविधीकरण के साथ अपनाया है। कृषि में विज्ञान के उपयोग को बढ़ाने में इनके द्वारा किए गए प्रयासों को ध्यान में रखकर इन्हें कृषि के विभिन्न संस्थाओं द्वारा कृषि में आधुनिक तकनीकों को अपनाने के लिए कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है।

श्री हंसराज

पिता का नाम	स्व. श्री बाबू राम
आयु	58 वर्ष
शिक्षा	10वीं
कृषि भूमि	3 एकड़
मुख्य फसलें	मशरूम, ब्रोकोली, गेंदा, गुलदाउदी, आलू, धान, गेहूं, नव निर्मित मछली तालाब

पता		
गांव	:	कोरूटाना कलां
तहसील	:	आर.एस. पुरा
जिला	:	जम्मू, (जम्मू व कश्मीर)
मोबाइल	:	09205451125
टेलिफोन	:	01923–205570

उपलब्धियां

• श्री हंस राज के परिवार द्वारा अपने खेत में पारम्परिक विधि से धान, गेहूं और दलहन की खेती की जाती थी। 20 वर्षों तक सेना एवं राष्ट्र की सेवा के बाद श्री हंस राज ने कृषि विज्ञान केन्द्र, जम्मू के मार्गदर्शन में मशरूम का उत्पादन प्रारंभ किया। इन्होंने वर्षभर मशरूम का उत्पादन किया और अच्छी सफलता पाई। श्री हंस राज ने सभी मशरूम उत्पादकों को एक साथ लाने की पहल की और मशरूम को विपणन के लिए एक साथ ले जाने के लिए इन्होंने परिवहन की एक योजना बनाई जिसमें इनके समूह के दो या तीन सदस्य पूरी मशरूम मात्रा को जम्मू के बाजार तक ले जा सके। इनके क्षेत्र के किसानों के पास छोटी कृषिजोत हैं और उनकी आमदनी कम है, इसलिए इस नई पहल से किसानों को मदद मिली।

• श्री हंस राज द्वारा समेकित कृषि तकनीकें और इष्टतम संसाधन उपयोगिता को अपनाया गया है। इन्होंने उद्यमों तथा इष्टतम सं. साधन उपयोगिता को योगवाही तरीके से एकीकृत कर स्वयं को राज्य में आर्थिक तंगी से गुजर रहे किसानों के बीच एक रोल मॉडल के रूप में स्थापित किया है। इन्होंने मशरूम उत्पादन के साथ–साथ पुष्प उत्पादन (गेंदा, गुलदाउदी), बागवानी (ब्रोकोली, बेबीकार्न जैसी देसी सब्जियां) तथा मात्स्यिकी का समेकन किया है। इसके साथ ही श्री हंस राज ने जैविक अपशिष्ट को वर्मी–कम्पोस्ट के रूप में प्रभावी रिसाइक्लिंग द्वारा अपनी एक एकड़ जमीन को जैविक खेती में परिवर्तित किया। इन्होंने अपने फसल उत्पादों को एक किग्रा. की पैकिंग कर उसमें मूल्य वर्धन किया है और उसकी आपूर्ति लोगों के घर–घर जाकर की है जिससे इन्हें अतिरिक्त आमदनी प्राप्त हुई है। कृषि विज्ञान केन्द्र, जम्मू द्वारा इनके प्रयासों की सराहना की गई है और श्री हंस राज को अन्य किसानों के लिए एक रोल मॉडल माना है। इनका अनुकरण राज्य भर के किसान कर रहे हैं और विभिन्न प्रशिक्षणों में भी इनका सदुपयोग एक विशेषज्ञ के रूप में किया जा रहा है।

• श्री हंस राज की पहचान जम्मू तथा साथ ही निकटवर्ती क्षेत्रों जैसे कि उधमपुर और कठुआ में नवोन्मेशी किसान के रूप में है। वे अपने क्षेत्र तथा निकटवर्ती क्षेत्रों के साथी किसानों तक मशरूम उत्पादन की प्रौद्योगिकी का क्षैतिज विस्तार करने में एक अग्रणी भूमिका अदा कर रहे हैं। प्रसार एजेन्सियों द्वारा श्री हंस राज को कई प्रशिक्षण कार्यक्रमों, किसान–वैज्ञानिक पारस्परिक चर्चा तथा सेमिनारों में एक विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया जा रहा है। वर्तमान में श्री हंस राज मशरूम व सब्जी उत्पादक एसोसिएशन, कोरूटाना, जम्मू के अध्यक्ष, अखिल भारतीय मशरूम उत्पादक एसोसिएशन के सदस्य एवं कृषि विज्ञान केन्द्र, जम्मू की वैज्ञानिक परामर्श समिति के सदस्य हैं। वर्षभर मशरूम का उत्पादन करने के लिए श्री हंस राज को सर्वश्रेष्ठ मशरूम उत्पादक पुरस्कार प्रदान किया गया है।

श्री छत्रपाल पटेरिया

पिता का नाम	स्व. श्री काशीराम पटेरिया
आयु	55 वर्ष
शिक्षा	हायर सेकेण्डरी
कृषि भूमि	20 एकड़
मुख्य फसलें	धान, गेहूं, उड़द, मटर, चना, तिल, मूंग. फली, सरसों, बाजरा, बरसीम, लोबिया, जई, सुब बूल, नीम, बांस, सिरस, देसी बबूल, टीक एवं बहेड़ा

पता		
गांव व डाकघर	:	सनोरा
ब्लॉक व जिला	:	दतिया, मध्य प्रदेश
मोबाइल	:	09584923548, 08878484196
ई–मेल	:	datiakvk@rediffmail.com

उपलब्धियां

- मध्य प्रदेश में जिला दतिया के गांव सनोरा के श्री छत्रपाल पटेरिया द्वारा बहु फसलचक्र, खेत फसलों, सब्जियों, मसालों, पशुधन, वर्मीकम्पोस्ट, कृषि वानिकी, मात्स्यिकी तथा बायोगैस आदि विभिन्न उद्यमों का संयोजन कर अधिकतम आमदनी और रोजगार पैदा किया गया। परिवार की ईंधन की जरूरतों को पूरा करने और जंगल की लकड़ी तथा पम्प सेट में डीजल की बचत करने के लिए बायोगैस संयंत्र लगाया गया। संयंत्र में उत्पन्न बायोगैस घोल का इस्तेमाल फसलों में खाद के रूप में किया गया और इसका कुछ हिस्सा मछली तालाब में प्रयोग में लाया गया। खरीफ के मौसम में बैंगन, मिर्च, लोबिया, मक्का, उड़द, अदरक, हल्दी और आलू की खेती की गई जबकि रबी के मौसम में टमाटर, धनिया, जीरा, अजवायन, आलू, बरसीम और जई की फसल उगाई गई। श्री पटेरिया ने रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर हरी खाद, वर्मीकम्पोस्ट, गोबर की खाद और जैव उर्वरकों का उपयोग किया। इन्होंने कभी भी सिंथेटिक कीटनाशकों का इस्तेमाल नहीं किया। इन्होंने एनकेएसई आधारित जैव कीटनाशकों के साथ गोमूत्र का प्रयोग कर विभिन्न फसलों में कीटों तथा रोगों की रोकथाम की। इसके साथ ही इनके द्वारा जैविक तरीके से मसाला फसलों की खेती की जाती है।
- इनके फार्म पर वर्मीकम्पोस्ट इकाई है। श्री पटेरिया ने कृषि एवं सम्बद्ध विभागों के अधिकारियों के साथ बेहतर सम्पर्क बना रखा है और ये जिले में एक लोकप्रिय व्यक्ति हैं। इन्होंने धनिया, मेथी, अदरक व हल्दी जैसी मसाला फसलों का जैविक उत्पादन किया। श्री पटेरिया धान की खेती में अपनी नवोन्मेषी युक्तियों के लिए जाने जाते हैं। इन्होंने समुचित जल एवं खरपतवार प्रबंधन रीतियों को अपनाते हुए अपने एक हेक्टेयर कृषि क्षेत्र में चावल सघनीकरण तकनीक (श्री विधि) को सफलतापूर्वक अपनाया और अधिक पैदावार हासिल की। इन्होंने न केवल रिकॉर्ड पैदावार हासिल की वरन् फसल के व्यापक फासले को अपनाते हुए चावल के खेत को चावल गार्डन में भी रूपांतरित किया। श्री छत्रपाल पटेरिया द्वारा खेत स्तर पर कई तकनीकों में संशोधन किया गया। इनके द्वारा जल संचयन को अपनाया गया और पानी की बचत के लिए सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली का उपयोग किया गया।

श्री कुणाल गहलोत

पिता का नाम	राजपाल सिंह
आयु	37 वर्ष
शिक्षा	12 वीं
कृषि भूमि	25 एकड
मुख्य फसलें	गेहूं, धान, मशरूम, शाकीय बीज उत्पादन एवं पुष्पोत्पादन

पता

गांव : म.नं. 176, तिगीपुर, दिल्ली– 110 036

मोबाइल : 9910075999

ई–मेल : kunalgahlot@gmail.com

उपलब्धियां

• श्री कुणाल गहलोत ने कृषि में विविधीकरण के माध्यम से अपनी कृषि आय में बढ़ोतरी की है। इन्होंने कम लागत ओर अधिक मूल्य वाले कृषि उद्यमों जैसे बेमौसमी सब्जी उत्पादन, फसल अपशिष्टों का उचित उपयोग, मशरूम उत्पादन, वर्मी कम्पोस्ट तकनीक का प्रयोग, समेकित पोषक तत्व प्रबंधन, उन्नत कृषि यंत्रों का प्रयोग, अंतर–फसलचक्र प्रणाली आदि को अपनाकर सन् 2003 में कुल 5 लाख रूपये की कृषि आय को वर्ष 2014 में बढ़ाकर 40 लाख रूपये प्रतिवर्ष तक करने में सफलता पाई है।

• इन्होंने वर्ष 2003 में मशरूम उत्पादन के प्रशिक्षण के साथ ही 0.5 एकड़ में सफेद बटन मशरूम की सफल कृषि से शुरूआत की। आज इनका मशरूम खेती क्षेत्रफल 1.5 एकड़ तक हो गया है जिससे श्री गहलोत लगभग 7.5 लाख रूपये प्रति एकड़ का शुद्ध लाभ कमा लेते हैं। गोभी की सीधी बीजाई, एवं ब्रोकोली, लेट्यूस, ब्रुसल स्प्राउट, लाल मूली, रंगीन गोभी जैसी विदेशी सब्जियां और इनमें अंतर–फसल के रूप में टमाटर, खीरा, धनिया, प्याज, पीली गाजर आदि की पांच एकड़ की खेती से श्री गहलोत कुल चार माह के समय में 3.6 से 4.0 लाख रूपये की शुद्ध आय प्राप्त कर रहे हैं। इसके साथ ही धान एवं गेहूं की पूसा प्रजातियों का बीज उत्पादन भी कर रहे हैं। इन्होंने सब्जियों के विपणन हेतु मदर डेयरी, रिलायंस फ्रेश, बिग बाजार, बिग एप्पल, फ्रेशफूड आदि के साथ सम्पर्क विकसित किया है जिससे इनकी आय में वृद्धि हुई है।

• सब्जी बीज उत्पादन में प्रशिक्षण प्राप्त करके श्री गहलोत द्वारा गोभी, करेला, मूली, प्याज, बैंगन व टमाटर का बीज उत्पादन कर लाभ अर्जित किया जा रहा है और साथ में अन्य किसानों को उचित दामों पर अच्छी गुणवत्ता वाले बीज उपलब्ध कराए हैं। इनकी सफलता की कहानी कृषि संबंधी कई प्रकाशनों में छप चुकी है तथा दूरदर्शन और आकाशवाणी से प्रसारित हो चुकी है।

• एक अच्छे उत्पादक के साथ–साथ श्री गहलोत नवोन्मेष में भी यकीन रखते हैं। खीरा उत्पादन में केवल बुवाई की उचित तारीख निर्धारित करके इन्होंने सफेद मक्खी के प्रकोप को 30 प्रतिशत तक कम किया। गोभी की सीधी बीजाई करके फसल अवधि घटाई तथा लागत में कमी की। मूली फसल में गेंदा को अंतर–फसल के रूप में उगाकर प्रति हेक्टेयर 4.25 लाख रूपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया। नाबार्ड की सहायता से श्री गहलोत, भूमिपुत्र कृषक क्लब का संचालन भी कर रहे हैं जिसमें सदस्यों को साथ जोड़कर कृषि में उत्पादन और विपणन स्तर पर सुधारों के लिए कार्य किया जाता है।

• श्री कुणाल गहलोत को विभिन्न स्तरों पर कृषि विविधीकरण और नवोन्मेष के लिए मदर डेयरी, ग्लोबल एग्रीकनैक्ट, भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, पूसा संस्थान आदि से सम्मानित किया जा चुका है।

श्री राजेन्द्र पाल सिंह

पिता का नाम	स्व. श्री मंगत सिंह	**पता**	
आयु	66 वर्ष	गांव	: शैला खुर्द
शिक्षा	बी.एससी., एल एल बी	पोस्ट तहसील	: शैला कलाँ : देवबंद
कृषि भूमि	20 एकड़	जिला	: सहारनपुर–247554 उत्तर प्रदेश
मुख्य फसलें	गन्ना, गेहूं, चावल, सरसों, आम एवं अमरूद फलोद्यान, कृषि वानिकी	मोबाइल ई–मेल	: 09837030089 : advdbdrps@gmail.com

उपलब्धियां

- श्री आर.पी. सिंह ने बेहतर उत्पादन एवं उत्पादकता के लिए अपने खेत में नई प्रौद्योगिकियों को अपनाया। श्री सिंह गन्ना की COJ 64, 8436, 766 जैसी प्रगतिशील किस्मों की खेती कर रहे हैं। श्री सिंह पश्चिम उत्तर प्रदेश क्षेत्र में चावल की लोकप्रिय किस्मों 1121 एवं 1509 को प्रारंभ करने में अग्रणी थे।
- श्री सिंह ने अपने खेत में गन्ना–गेहूं–चावल–सरसों तथा गन्ना–गेहूं–गन्ना के रूप में बेहतर फसल चक्र को अपनाया है। इनके द्वारा खेतों में गाय के गोबर का इस्तेमाल, खाद के रूप में प्रभावी ढंग से किया जा रहा है। इस प्रयोजन के लिए इन्होंने अपने आम के फलोद्यान में एक विशेष गड्ढ़ा बनाया है जिसमें गाय के गोबर के साथ–साथ आम की सूखी पत्तियों को इकट्ठा किया जाता है। 'पिट रोटेशन' के उपरांत इसका इस्तेमाल सर्वश्रेष्ठ खाद के रूप में किया जाता है। इस विधि से न केवल इनके खेत की उपज में वृद्धि हुई है वरन इससे कृत्रिम उर्वरकों की खपत में 30 प्रतिशत तक की कमी भी आई है।
- श्री आर.पी. सिंह ने लगभग 8 एकड़ क्षेत्र में अपना फलोद्यान स्थापित किया है। इस फलोद्यान में आम की दशहरी, लंगड़ा, सफेदा तथा अल्फांसो और अमरूद और चीकू की उच्च उपजशील किस्में हैं। वार्षिक उपज को दिल्ली की आजादपुर मंडी में सीधा बेचा जाता है। श्री सिंह ने 'पापुलर' तथा 'यूकेलिपटस' वृक्षों की खेती प्रारंभ की है। इनकी इस योजना में वृक्षों को खेत की मेंड पर उगाया जाता है। प्रत्येक वृक्ष परिपक्व होने में 6 से 7 वर्ष का समय लेता है। उसके बाद इसे बाजार में रूपये 2,000 में बेचा जाता है। इससे श्री सिंह को अतिरिक्त आमदनी हुई है।
- वृक्षों की खेती में इन्होंने बैकवर्ड समेकन किया है और वृक्षों की अपनी निजी नर्सरी स्थापित की है।
- श्री राजेन्द्र पाल सिंह, सहकारी गन्ना समिति, देवबंद के निदेशक; फूल सिंह मैमोरियल इंटर कॉलेज, रनखण्डी, देवबंद के अध्यक्ष; शैला इंटर कॉलेज, शैला, देवबंद के प्रबंधक रहे हैं।

श्रीमती कलाईवानी राजेन्द्रन

पति का नाम	श्री एम. रमैय्या
आयु	53 वर्ष
शिक्षा	10वीं पास
कृषि भूमि	5 एकड़
मुख्य फसलें	धान, दलहन तथा तिल

पता
6/108, नार्थ कडावरायर स्ट्रीट, कलार पशुपतिकोविल
तालुका : पपानासम
जिला : तंजावुर – 614 206, तमिलनाडु
मोबाइल : 9025274876

उपलब्धियां

• श्रीमती कलाईवानी राजेन्द्रन ने आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ चावल आधारित कृषि प्रणाली को अपनाया। इन्होंने चावल की संकर किस्म एडीटीआरएच–1, एडीटी–38, एडीटी–39 तथा एडीटी–43 की खेती कर भारत में 2 टन/हेक्टेयर से अधिक की औसत उत्पादकता की तुलना में 7 टन प्रति हेक्टेयर से कहीं अधिक उत्पादकता हासिल की। इन्होंने चावल की खेती में श्री एसआरआई तकनीक तथा संकर बीजोत्पादन को अपनाया।

• श्रीमती राजेन्द्रन जैविक खेती में विश्वास करती हैं और कीटों तथा रोगों की रोकथाम के लिए जैव कीटनाशकों एवं जैव उर्वरक के रूप में एजोस्प्रिलियम का उपयोग करतीं हैं। इन्होंने कीटों तथा रोगों की रोकथाम के लिए हल्के ट्रैप एवं ट्राइकोडर्मा विरिडी का उपयोग किया।

• श्रीमती राजेन्द्रन नवोन्मेषी किसान हैं जो कि अपने खेत में प्रदर्शनों की व्यवस्था कर कृषि में नए उद्यमों को शुरू करने तथा अपने गांव एवं पड़ोस के गांवों के किसानों को प्रोत्साहित करने हेतु स्वयंसेवक के रूप में कार्य करती हैं। वर्तमान में इनका ध्यान जैविक कृषि एवं एकीकृत कृषि को प्रारंभ कर टिकाऊ कृषि पर है।

• श्रीमती राजेन्द्रन गाय के उत्पाद से निर्मित पंचगव्य, अमृताकैरेजल तथा वर्मी कम्पोस्टिंग एवं हर्बल कीटनाशकों को तैयार करने और प्रचलित करने का कार्य कर रही हैं। इन्हें जुलाई 2005 में प्रथम एनवीए फेलो पुरस्कार मिला है। इन्होंने विभिन्न जिलों यथा डिण्डीगुल, तंजौर, नागापट्टीनम के किसानों के लिए खेती की एसआरआई तकनीक रीतियों पर प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया। साथ ही इन्होंने कृषि से जुड़ी गतिविधियों के लिए वीडियो कान्फ्रेन्सिंग में भी भाग लिया।

• श्रीमती राजेन्द्रन ने नवोन्मेषी तकनीक के लिए ''अपने खेत पर दलहन खेती की मोबाइल स्प्रिन्जियर विधि'' का परीक्षण आयोजित किया। श्रीमती राजेन्द्रन ने कृषि विभाग द्वारा विकसित तकनीकों को अपनाकर अपने साथी किसानों के बीच नवीनतम तकनीकों के प्रसार में उल्लेखनीय दायित्व निभाया। श्रीमती राजेन्द्रन ने सी.ए.बी.आई., नई दिल्ली द्वारा आयोजित पादप डॉक्टर प्रशिक्षण कार्यक्रम में भाग लिया।

श्री के.वी. राकेश

		पता	
पिता का नाम	वेंकटेश के.एच.		
आयु	30 वर्ष	गांव	: कोल्लीबायलु, कसाबा होबली
शिक्षा	स्नातक (बी.ए.)	तालुका	: मुदीगेरे
कृषि भूमि	60 एकड़	जिला	: चिकमगलूर – 577 132, कर्नाटक
मुख्य फसलें	धान, कॉफी, कटहल, आम, नींबू, इलायची, काली मिर्च, वनीला, केला तथा औषधीय व सगंधीय पौधे	टेलिफोन	: 08263 220256
		एमोबाइल	: 9845050630
		ई–मेल	: rakeshgowda173@gmail.com

उपलब्धियां

- श्री राकेश, कर्नाटक राज्य के एक सफल किसान हैं। वह अपनी 4 एकड़ जमीन पर चावल तथा 40 एकड़ जमीन पर रोपण फसलों की खेती कर रहे हैं। कॉफी, कटहल, आम, नींबू, इलायची, काली मिर्च, वनीला, केला तथा औषधीय व सगंधीय पौधों जैसी फसलों द्वारा खेती में विविधीकरण की प्रणाली को अपनाने वाले किसान के रूप में श्री राकेश ने अपने आप को स्थापित किया है।
- इन्होंने एकीकृत कीट प्रबंधन रीतियों, स्प्रिंक्लर सिंचाई प्रणाली तथा जैविक खेती विधियों को अपनाया है। श्री राकेश ने वर्मी कम्पोस्ट उत्पादन, मशरूम (खुम्बी) की खेती, पौधा नर्सरी तैयार करना तथा एजोला उत्पादन जैसी सम्बद्ध गतिविधियों के साथ अपनी कृषि को विविधीकृत किया है। अपने फार्म उत्पादों को बेचने के लिए इन्होंने विभिन्न विपणन कड़ियों के साथ सम्पर्क बनाया है। श्री राकेश कृषि विज्ञान केन्द्र और राज्य के कृषि विभाग सहित अलग–अलग संगठनों से भी जुड़े हुए हैं।
- श्री राकेश अपने फार्म पर प्राकृतिक खेती को अपना रहे हैं और साथ ही वहां औषधीय व सगंधीय पौधों, वन प्रजातियों, चारा फसलों आदि की भी खेती कर रहे हैं। श्री राकेश ने एक विषय विशेषज्ञ के रूप में कई कृषि मेलों में किसानों व वैज्ञानिकों के बीच होने वाली परिचर्चा में भाग लिया है। श्री राकेश विभिन्न संगठनों एवं संस्थानों से जुड़े हुए हैं और साथ ही तालुक आशादायक कृषि परिवार के निदेशक; सहकारिता समिति, हाले मुदीगेरे के सदस्य; तथा TAPCMS, मुदीगेरे के सदस्य के रूप में भी सेवा कर रहे हैं।
- श्री राकेश जैविक कृषि रीतियों को अपनाने के प्रति इच्छुक रहते हैं जिसके अंतर्गत ये पंचगव्य, जीवमरूथा, जैव उर्वरकों, नीम आधारित कीटनाशकों का उपयोग करते हैं तथा डेयरी व खरगोश पालन तथा प्राकृतिक खेती से सीधे तौर पर जुड़े हैं। जैव विविधता के संरक्षण की दिशा में इनका योगदान उल्लेखनीय है।
- इन्होंने फार्म तालाबों का निर्माण कर और खेत की चारदीवारी के साथ–साथ चारा फसलें उगाकर तथा वर्षाजल संग्रहण कर मृदा व जल संरक्षण विधियों को अपनाया है। श्री राकेश द्वारा राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर की 12 अग्रणी कृषि पत्रिकाओं के सदस्य हैं और ये डी डी–1, चंदना, ई–टीवी, उदय टीवी के माध्यम से टेलिविजन कार्यक्रमों में भाग लेते हैं।
- श्री राकेश, कृषि विज्ञान केन्द्र, मुदीगेरे एवं विश्वविद्यालय मुख्यालय, बंगलुरू तथा राज्य के कृषि व बागवानी विभाग के साथ लगातार जुड़े हुए हैं। इन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, मुदीगेरे में सब्जियों की खेती, पौध रोपण का रख–रखाव और फलदार फसल नर्सरी का प्रबंधन आदि से संबंधित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया।
- इन्होंने स्थानीय स्तर पर मशरूम (खुम्बी) की बिक्री के लिए विपण कड़ियों से जुड़ाव किया और मंगलौर, उडुपी, हासन तथा बंगलुरू में विक्रय केन्द्रों के लिए समझौते किए। श्री राकेश खेत उत्पादों के श्रेणीकरण, प्रसंस्करण एवं भण्डारण के कार्य में जुटे हुए हैं और बम्पर उत्पादन की स्थिति में विपणन से भी जुड़े हैं। श्री राकेश ने बाजार श्रृंखला (नेटवर्क) स्थापित कर कम्पोस्ट एवं वर्मी कम्पोस्ट के विपणन के लिए भी व्यवस्था की है।
- इनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों को मान्यता देते हुए, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली ने प्रगतिशील किसान पुरस्कार से सम्मानित किया।

श्री घनश्याम ठाकुर

पिता का नाम	श्री बालक राम	**पता**
आयु	53 वर्ष	गांव : लुहाखर
शिक्षा	हायर सेकेण्डरी	डाकघर : कपाही तहसील : सदर,
कृषि भूमि	6 एकड़	जिला : मण्डी – 175 002 हिमाचल प्रदेश
मुख्य फसलें	रंगीन शिमला मिर्च, टमाटर, खीरा, धान, मक्का,गेहूं, एवं अन्य सब्जियां, तिलहन एवं दलहन	मोबाइल : 09816654085

उपलब्धियां

- श्री घनश्याम ठाकुर ने वर्ष 2001 में भारतीय सेना से सेवानिवृत्ति के बाद कृषि में कुछ नया करने का जज्बा था। वर्ष 2006 में इन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, मण्डी, हिमाचल प्रदेश का दौरा किया और वहां कृषि विशेषज्ञों से उन्नत कृषि प्रौद्योगिकी पर सलाह ली। कृषि विज्ञान केन्द्र, मण्डी द्वारा इन्हें संरक्षित परिस्थितियों के अंतर्गत रंगीन शिमला मिर्च की खेती करने के लिए प्रोत्साहित किया गया।
- श्री ठाकुर ने बागवानी प्रौद्योगिकी मिशन के तहत वर्ष 2007 में 630 वर्गमीटर आकार के एक पॉलीहाउस का निर्माण किया और वर्ष 2007 में ही रंगीन शिमला मिर्च की खेती करना प्रारंभ किया। कृषि विज्ञान केन्द्र के विशेषज्ञों द्वारा समय–समय पर इन्हें सलाह और तकनीकी मार्गदर्शन दिया गया।
- श्री ठाकुर ने पॉलीहाउस की मृदा में विसंक्रमण किया तथा जून के महीने में पॉलीहाउस में नर्सरी प्रारंभ की और उसके उपरान्त जुलाई के महीने में पौध–रोपण किया।
- श्री ठाकुर ने कृषि विज्ञान केन्द्र के विशेषज्ञों द्वारा किए गए प्रदर्शन एवं प्रशिक्षण के अनुसार कटाई छंटाई जैसी उन्नत तकनीकों को अपनाया, फर्टिगेशन का उपयोग किया तथा पॉलीहाउस की स्वच्छता और रोगों व कीटों की रोकथाम के लिए वाजिब छिड़काव समय सारणी पर विशेष बल देते हुए एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन प्रौद्योगिकी को अपनाया और फसल कटाई के बाद पॉलीहाउस की ठीक ढंग से सफाई की।
- संरक्षित परिस्थितियों के तहत रंगीन शिमला मिर्च की खेती प्रारंभ करने से पहले श्री ठाकुर अपनी 2.4 हेक्टेयर जमीन से बामुश्किल 50,000/– रुपये प्रति वर्ष कमा पाते थे लेकिन अब संरक्षित परिस्थितियों में रंगीन शिमलामिर्च तथा अन्य सब्जियों की खेती से श्री ठाकुर प्रति वर्ष 3,00,000/– से 5,00,000/– रुपये तक कमा रहे हैं।
- इसके अलावा श्री ठाकुर के पास द्वितीय उद्यम सैकन्डरी कृषि के रूप में रेशम पालन, मशरूम उत्पादन, वर्मीकम्पोस्ट इकाई तथा आटा मिल भी है। श्री ठाकुर को अनेक सम्मान व पुरस्कार मिल चुके हैं और इनके कार्य की सराहना हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्यमंत्री ने भी की है।

श्री तुलसी राम सेथिया

		पता
पिता का नाम	श्री असमान सेथिया	गांव : मलगांव (डोंगरगुडापारा) तहसील : बकावंड जिला : बस्तर, जगदलपुर (छत्तीसगढ़) मोबाइल : 09691270598 ई–मेल : kvk_jagdalpur1@rediffmail.com
आयु	35 वर्ष	
शिक्षा	5वीं पास (प्राथमिक)	
कृषि भूमि	7 एकड़	
मुख्य फसलें	चावल, मक्का, फल, सब्जियां	

उपलब्धियां

- श्री तुलसी राम सेथिया द्वारा बस्तर जिले के आदिवासी क्षेत्र में टिकाऊ आजीविका के लिए एक अनूठा कृषि–बागवानी आधारित मॉडल फार्म बनाया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र, बस्तर के हस्तक्षेप से पहले 7 एकड़ वर्षा आधारित जमीन में केवल पारम्परिक कृषि विधियों द्वारा स्थानीय किस्मों के अनाज की खेती की जाती थी। इससे होने वाली आमदनी से श्री सेथिया के परिवार का बड़ी मुश्किल से गुजर–बसर हो पाता था। लेकिन वर्ष 2002–03 में श्री सेथिया ने कृषि विज्ञान केन्द्र, बस्तर द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भाग लिया। इन्होंने स्वर्ण ज्योति ग्राम स्वः रोजगार योजना की सहायता से अपने खेत में एक टयूब वैल लगवाया। इसके बाद श्री सेथिया ने वर्ष भर; खरीफ (चावल, मक्का, फल, सब्जियां), रबी (सब्जियां) और जायद (सब्जियां) की खेती की। इन्होंने फलों व सब्जियों की खेती के लिए उन्नत किस्मों/संकरों और उन्नत नर्सरी बनाने वाली विधियों, स्प्रिंक्लर तथा ड्रिप सिंचाई प्रणाली का उपयोग किया। इन्होंने सब्जी फसलों के साथ अन्तर फसलचक्र प्रणाली को अपनाते हुए आम, केला, नारियल की उन्नत किस्मों का फलोद्यान विकसित किया। श्री सेथिया ने अपने खेत में नाडेप (NADEP) कम्पोस्टिंग संरचना भी स्थापित की।
- श्री सेथिया ने स्थानीय के लिए रोजगार भी पैदा किया। इसके साथ ही इन्होंने पड़ोस के 8–10 गांवों में टिकाऊ आजीविका के लिए ''देखकर विश्वास करें और स्वयं करके सीखें द्वारा कृषि–बागवानी आधारित मॉडल का भी प्रसार किया। इसके परिणामस्वरूप इनके सामाजिक–आर्थिक स्तर में आमूलचूल सुधार आया और अब ये टीवी एवं रेडियों कार्यक्रमों के माध्यम से निकटवर्ती ग्रामीण समुदाय के बीच लोकप्रिय एवं एक आदर्श किसान (रोल मॉडल) बन गये हैं। श्री सेथिया ने नाबार्ड, जलसंभर (वाटरशेड), कृषि विभाग, आत्मा, उप निदेशक (बागवानी), गैर सरकारी संगठनों तथा निजी कम्पनियों आदि के साथ बेहतर संबंध अथवा सम्पर्क स्थापित किया है।
- इनके पास कुक्कुट पालन (पॉल्ट्री) की 20–30 उन्नत नस्ल (व्हाइट लैग हार्न) की मुर्गियां एवं 6 नागहंस नस्ल बत्तख और एक गाय भी है जिससे प्रतिदिन 4–5 लिटर दूध मिलता है। विभिन्न स्रोतों से होने वाली अच्छी आमदनी के कारण इन्होंने टयूबवैल के लिए लिया गया कर्ज, बैंक को 5 साल में ही लौटा दिया और दैनिक उपयोग के लिए कई जरूरी सुविधाएं जैसे कि मोटर साइकिल, मोबाइल, डिश टीवी आदि खरीद लिये। अब इनके जीवन स्तर में उल्लेखनीय सुधार आ गया है और अपने बच्चों को अच्छी शिक्षा के लिए जगदलपुर स्थित शहर के एक पब्लिक स्कूल में भेज रहे हैं। श्री सेथिया को कृषि के क्षेत्र में उनके उल्लेखनीय योगदान के लिए अनेक पुरस्कार प्राप्त हुए हैं।

श्री सुनील कुमार सिंह

पिता का नाम	श्री रामवीर सिंह
आयु	36 वर्ष
शिक्षा	स्नातक (बी.ए.)
कृषि भूमि	12 एकड़
मुख्य फसलें	गेहूं, सरसों, अरहर, मक्का,आलू, भिण्डी व लौकी

पता		
गांव	:	मुकंदपुर
पोस्ट	:	मुकंदपुर
जिला	:	अलीगढ़ – 202 001, उत्तर प्रदेश
मोबाइल	:	09412397318

उपलब्धियां

• वर्ष 1999 में अपनी स्नातक शिक्षा पूरी करने के बाद श्री सुनील कुमार सिंह ने अपनी आजीविका के लिए मुख्य स्रोत के रूप में खेती करने का निर्णय किया। प्रारंभ में श्री सिंह ने तीन भैंस के साथ डेयरी पालन का कार्य किया। इससे मिले लाभ को उन्होंने डेयरी को बढ़ाने के लिए लगाया। डेयरी पालन के व्यवसाय को गति मिली और इससे अच्छा लाभ मिला।

• वर्तमान में इनके पास 20 भैंस तथा तीन गाय हैं। इनकी डेयरी से रोजाना मिलने वाला दुग्ध उत्पादन औसतन 150 लिटर है जिससे इन्हें 45,000 रुपये मासिक की शुद्ध आमदनी होती है। प्रतिवर्ष इनकी डेयरी में भैंसों की संख्या बढ़ रही है जिससे उपोत्पाद के रूप में यहां बड़ी मात्रा में गोबर भी पैदा हो रहा है।

• वर्ष 2006 में श्री सिंह ने एक वर्मीकम्पोस्ट इकाई की स्थापना की। वर्तमान में प्रति वर्ष 200 टन वर्मीकम्पोस्ट की बिक्री कर इस वर्मीकम्पोस्ट इकाई से श्री सिंह प्रति वर्ष 5 लाख रुपये की अतिरिक्त आमदनी हासिल कर रहे हैं।

• श्री सिंह ने जैविक खेती प्रारंभ की और ये जैविक तरीके से लौकी, भिण्डी, आलू व मक्का की खेती कर रहे हैं।

• श्री सिंह के प्रयासों को अन्य किसानों तथा राज्य सरकार के कृषि विभाग, कृषि विज्ञान केन्द्र तथा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के संस्थानों द्वारा सराहा गया है और इन्हें विभिन्न संस्थानों एवं विभागों द्वारा अनेक पुरस्कार एवं मान्यता प्रदान की गई है।

श्री अवनीश कुमार

पिता का नाम	श्री रामेश्वर दास	
आयु	51 वर्ष	
शिक्षा	स्नातक (बी.ए.)	
कृषि भूमि	15 एकड़	
मुख्य फसलें	गेहूं, धान, गन्ना, सब्जियां, पोपलर, मशरूम, मधुमक्खी पालन और मिनी डेयरी	

पता

गांव : रादौरी
डाकघर : बुबका
जिला : यमुनानगर (हरियाणा)
मोबाइल : 09050617350

उपलब्धियां

- श्री अवनेश कुमार हरियाणा के जिला यमुनानगर में एक अच्छे मशरूम उत्पादक और मधुमक्खी पालक हैं। मशरूम उत्पादन और मधुमक्खी पालन व्यवसाय से इनकी आमदनी प्रति वर्ष 5 लाख रुपये है।
- वर्ष 2009–10 में इन्होंने राष्ट्रीय बागवानी मिशन के तहत डीएचओ से मिली सब्सिडी की सहायता से मशरूम की खेती के लिए एक शेड का निर्माण कराया और छोटी विधि के साथ मशरूम कम्पोस्ट बनाने के लिए एक कम्पोस्ट चैम्बर बनवाया। इसके अलावा इन्होंने शेष राशि का इस्तेमाल जैविक सब्जियों एवं अनाज के उत्पादन के लिए किया तथा साथ ही अपनी दुधारू गाय एवं उसके बछड़े/बछड़ियों को सी ग्रेड मशरूम आहार के रूप में दिया। इन्होंने दुधारू गाय में दूध देने की अवधि और दुग्ध उत्पादन एवं दूध में वसा में वृद्धि महसूस की। इन्होंने अपने उद्यम के माध्यम से मशरूम एकत्रित करने और उसकी पैकिंग करने के कार्य में 5 महीने के लिए 10 ग्रामीण महिलाओं को रोजगार प्रदान किया।
- श्री अवनेश कुमार ने अपनी गेहूं फसल में फव्वारा (स्प्रिंक्लर) सिंचाई का उपयोग किया और 65 प्रतिशत तक पानी की बचत की। इसके साथ ही इन्होंने 70 क्विंटल/हेक्टेयर की गेहूं दाना उपज हासिल की।
- श्री कुमार ने ड्रिप सिंचाई का प्रयोग करते हुए गन्ना फसल में 1,350 क्विंटल/हेक्टेयर की पैदावार हासिल की। श्री कुमार ने सहारे (स्टैकिंग) के माध्यम से करेला तथा टमाटर जैसी सब्जियों में अच्छी पैदावार हासिल की।
- सर्वश्रेष्ठ किसान के तौर पर श्री अवनेश कुमार को 10,000 रुपये का नकद पुरस्कार एवं उपायुक्त से एक प्रमाण–पत्र मिला।
- श्री अवनेश कुमार स्प्रिंक्लर सिंचाई एवं पोपलर रोपण के साथ गेहूं में शून्य जुताई अंगीकरण जैसी संसाधन संरक्षण तकनीक (आरसीटी) में एक नवोन्मेषी किसान हैं। इन्होंने अपनी फसलों में न्यूनतम कीटनाशकों का प्रयोग किया और फसल उत्पादन में जैव कीटनाशकों का प्रयोग किया।

सरदार पवित्र पाल सिंह पांगली

पिता का नाम	प्रोफेसर बी.एस. पांगली
आयु	58 वर्ष
शिक्षा	सामाजिक विज्ञान में स्नातकोत्तर
कृषि भूमि	55 एकड़
मुख्य फसलें	गेहूं, धान, जौ, लहसुन, प्याज (बीज) एवं चारा–मक्का (बीज)

पता

गांव	:	बी–आई 1378, करतार निवास
डाकघर	:	रामनगर, सिविल लाइन्स
जिला	:	लुधियाना–141 001, पंजाब
टेलिफोन	:	0161–2552252
मोबाइल	:	9814897325
ई–मेल	:	ppspangli@gmail.com

उपलब्धियां

- श्री पवित्र पाल सिंह पांगली, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के किसान क्लब के प्रगतिशील अध्यक्ष के रूप में कार्यरत हैं। इन्होंने धान की पुआल के साथ लहसुन में पलवार तकनीक विकसित कर पंजाब की परिस्थितियों में अधिकतम उपज पाई।
- इन्होंने पंजाब कृषि विश्वविद्यालय के इंजीनियरों द्वारा विकसित लहसुन की बुवाई मशीन से केवल दो मजदूरों की लागत 450/– रुपये के साथ एक ही दिन में प्रति आधा एकड़ में 2000 कलियों की बुवाई कर मशीन को लोकप्रिय बनाया। इसके अलावा, इन्होंने भारतीय बागवानी अनुसंधान संस्थान, बंगलुरू तथा पंजाब कृषि विश्वविद्यालय द्वारा विकसित तकनीकों के साथ फसल में बोल्टिंग कर दो वर्ष के स्थान पर एक वर्ष के घटे हुए समय में प्याज का बीज उत्पादन प्रारंभ किया। इसका विस्तार इन्होंने किसान क्लब के सदस्यों के बीच किया।
- श्री पांगली ने गेहूं की छंटाई द्वारा उसमें मूल्य वर्धन कर आकर्षक पैकिंग के साथ बड़े तथा साफ दर्जे वाले गुणवत्ता के दानों को प्रति क्विंटल 2300/– की प्रीमियम दर पर लुधियाना के शहरी उपभोक्ताओं को बेचा। इसी प्रकार इन्होंने बासमती चावल की भी ग्रेडिंग कर बेचा। इन्होंने शहरी उपभोक्ताओं को लक्षित कर सीजन में ब्रोकोली तथा मक्का (स्वीटकार्न) भी बेची।
- कृषि में अपनी जानकारी बढ़ाने के लिए श्री पांगली ने मई, 2012 में इस्रायल एग्रो टेक का दौरा किया। इन्होंने घरेलु स्तर पर गमलों में सब्जियों तथा पौधाझाड़ी आदि में टेन्शियोमीटर का उपयोग करना भी सीखा।
- श्री पांगली ने ग्रेडिंग द्वारा लुधियाना के बाजार के लिए फल व सब्जियों की विपणन तकनीकों, सुबह तथा षाम की दरों की पूलिंग प्रणाली और वहनीय दामों पर परिवारों को घरेलू आपूर्ति (होम डिलीवरी) करने के बारे में अपने अनुभव बांटे।

श्री राघवेन्द्र सिंहजी सी. जडेजा

पिता का नाम	श्री चन्द्र सिंह जी जडेजा	**पता**	
आयु	71 वर्ष	गांव	: कोटडा सांगनी
शिक्षा	एस.एस.सी.	पोस्ट	: भडवा
कृषि भूमि	36 एकड़	जिला	: राजकोट–360030 गुजरात
मुख्य फसल	मूंगफली, कपास, गेहूं, जीरा, मक्का, सोयाबीन, सब्जियां, गन्ना, चना, आंवला, शरीफा, टीक वुड	मोबाइल	: 09427729201

उपलब्धियां

• श्री राघवेन्द्र सिंह जी सी. जडेजा एक प्रगतिशील किसान हैं तथा फार्म रजिस्टर, जलवायु रजिस्टर तथा वर्षा आंकडों आदि का पूरा रिकॉर्ड रखते हैं। इन्होंने फसल चक्रण को अपनाया है। ये पौधों की नर्सरी तैयार कर रहे हैं।

• श्री जडेजा ड्रिप सिंचाई के साथ–साथ स्प्रिंक्लर सिंचाई का उपयोग भी कर रहे हैं। जल संचयन के लिए इन्होंने वर्षा जल को संकलित करने के लिए अपने खेत में ही एक तालाब बनाया है। श्री जडेजा कई कृषि पत्रिकाएं एवं पुस्तकें पढ़ते हैं और आसपास होने वाले प्रत्येक कृषि मेले में भाग लेते हैं। अपने खेत में इन्होंने हवा के वेग को कम करने और पक्षियों को आकर्षित करने तथा उन्हें ठहरने हेतु आसरा देने के लिए टीकवुड और शरीफा के पौधे लगाये हैं।

• श्री जड़ेजा डेयरी पशुओं के गोबर तथा खेत अपशिष्ट से अपने खेत पर ही वर्मी कम्पोस्ट का उत्पादन कर उसे बेचते हैं। इन्होंने प्रत्येक कम्पोस्ट के साथ राइजोबियम, एजोटोबैक्टर तथा ट्राइकोडर्मा के रूप में जैविक संवर्धन का अनुप्रयोग किया। कटाई के पश्चात कपास एवं अन्य फसलों में पुआल को काटने के लिए इन्होंने शैडर का उपयोग किया और मिट्‌टी में नमी बढ़ाने के लिए खाद के रूप में कटी हुई पुआल को मिलाने के लिए रोटावेटर का इस्तेमाल किया। श्री जड़ेजा ने "गिर नस्ल" की गाय पाली हुई हैं। ब्राजील के गिर प्रजनकों ने इनकी गायों को अपनी भ्रूण परियोजना के लिए चुना है।

• श्री जड़ेजा ने अपने खेत में कृषि वानिकी को अपनाया है। इन्होंने अपनी चार एकड़ जमीन (प्रत्येक एकड़ में 75) में आंवले के पौधे लगाये हुए हैं। ये आंवला वृक्षों की कटाई छंटाई आठ फीट तक की ऊंचाई पर कर देते हैं ताकि वृक्षों की ऊंचाई बढ़े और निचली फसलें इनकी छाया में न रहें। इस तरीके से वृक्षों के बीच कपास, जीरा, मूंगफली जैसी फसलों की खेती करने की सुविधा मिल जाती है।

• इन्होंने आंवला का मूल्य वर्धन कर उससे आंवला जूस, आंवला शरबत, आंवला अचार तथा आंवला जैम आदि उत्पाद तैयार किए। उत्पादों के विपणन के लिए इन्होंने अपने उत्पादों को ग्राहकों को सीधे ही बेचकर अच्छा दाम हासिल किया।

• श्री जड़ेजा को अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं जिनमें कृषि महोत्सव में गुजरात सरकार द्वारा कृषि ऋषि पुरस्कार; एल.एम. पटेल किसान पुरस्कार; राजकोट में MCX एग्रोटेक–2006 में जीवनपर्यन्त उपलब्धि पुरस्कार; जल क्रान्ति ट्रस्ट, राजकोट द्वारा "गिर गोपशु प्रजनक" पुरस्कार; तथा आणंद में आयोजित कृषि मेले में गुजरात राज्य द्वारा सरदार पटेल कृषि अनुसंधान पुरस्कार प्रमुख हैं।

• श्री जड़ेजा को संयुक्त राज्य अमेरिका के कृषि विभाग द्वारा काहिरा, मिस्र में जैव–प्रौद्योगिकी पर चर्चा करने के लिए भारतीय प्रतिनिधि के रूप में आमंत्रित किया गया।

श्री बिवास रंजन बच्छर

पिता का नाम	श्री तारक चन्द्र बच्छर	
आयु	44 वर्ष	
शिक्षा	10वीं पास	
कृषि भूमि	5 एकड़	
मुख्य फसल	धान, जूट, गेहूं, मसूर व सरसा	

पता

गांव	:	गोलदहा
पोस्ट	:	गोलदहा
जिला	:	24 उत्तरी परगना, पश्चिम बंगाल
मोबाइल	:	09732862845

उपलब्धियां

• श्री बिवास रंजन बच्छर एक सीमान्त किसान हैं और जूट की फसल में बहु पंक्ति बुवाई बीज ड्रिल तथा खरपतवार की रोकथाम के लिए रासायनिक तरीके अपनाते हैं। ये तकनीकें इन्हें खेती की लागत में 4000 से 8000 रूपये प्रति हेक्टेयर तक की बचत करने और 30 क्विंटल प्रति हेक्टेयर से भी अधिक जूट रेशा की उपज हासिल करने में मददगार है।

• अपने गांव तथा पड़ोस के क्षेत्रों में सीआरआईजेएएफ, बैरकपुर द्वारा विकसित की गईं प्रौद्योगिकियों के प्रसार में इनकी उल्लेखनीय भूमिका है।

• इन्होंने बागवानी फसलों के साथ समेकन कर अपने खेत को पूरी तरह से विविधीकृत रूप प्रदान किया है। इन्होंने जूट की पारम्परिक खेती को जूट–चावल–सरसों/आलू/गेहूं फसलचक्र अनुक्रम में बदल दिया है। श्री बच्छर ने उन्नत किस्मों और उचित प्रबंधन के साथ आम तथा नारियल फलोद्यान से प्रति वर्ष ₹ 50,000/– का लाभ कमाया है।

• अंतर फसल के रूप में गेंदा की खेती करना प्रारंभ कर प्रति वर्ष ₹ 20,000/– की अतिरिक्त आय अर्जित की है। इनके खेत में एक छोटा मछली तालाब (कैटफिश) भी है जिससे इन्हें प्रति वर्ष ₹ 20,000/– की अतिरिक्त आय होती है।

• श्री बच्छर दुधारू पशुओं को पालकर प्रति वर्ष ₹ 15,000/– प्रति पशु कमाते हैं। पशुओं के गोबर का इस्तेमाल उच्च गुणवत्ता वाली कम्पोस्ट बनाने के लिए किया जाता है।

• श्री बच्छर सब्जियों (टमाटर, फूलगोभी, लौकी) की उच्च उपजशील किस्मों तथा अपने पशुओं के लिए खेत की मेड पर अच्छी गुणवत्ता वाले चारे की किस्म (नेपियर घास) को उगाते हैं। इनके पास आधुनिक फार्म मशीनें हैं और ये खेती की आधुनिक तकनीकों पर विश्वास करते हैं। इनका वार्षिक टर्न ओवर ₹ 2,00,000/– से भी अधिक है।

• श्री बच्छर कृषि की उन्नत विधियों पर आयोजित जिला एवं ब्लॉक स्तरीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों में बढ़–चढ़कर भाग लेते हैं। इन नवीन अन्वेषणों से इन्हें भरण–पोषण से बाजारोन्मुख कृषि की दिशा में बदलाव लाकर अपनी आय को बढ़ाने में मदद मिली है।

श्री रमेश चन्द

पिता का नाम	श्री मनी राम
आयु	42 वर्ष
शिक्षा	12वीं पास
कृषि भूमि	7.5 एकड़
मुख्य फसल	गेहूं, सरसों, जौ, गाजर, प्याज, बाजरा, ज्वार

पता		
गांव	:	पहारशर
पोस्ट	:	पहारशर
तहसील	:	नदवई
जिला	:	भरतपुर, राजस्थान
मोबाइल	:	07597156346

उपलब्धियां

• श्री रमेश चन्द ने आय सृजित करने वाली गतिविधियों के रूप में सर्वश्रेष्ठ फसल चक्र; जैविक खाद को तैयार करना तथा उसका उपयोग; ग्राम विकास कार्य में भागीदारी; दूध संग्रहण बूथ; गोबर गैस–ईंधन बचाने वाली जैविक खाद तैयार करना; गांव के तालाब को पट्टे पर लेकर मत्स्य पालन करना; महिला स्वः सहायता समूह के लिए मात्स्यिकी – बत्तख पालन – कुक्कुट पालन के सर्वश्रेष्ठ मॉडल का विकास करना और उसका अंगीकरण आदि को अपनाया। इसके साथ ही श्री रमेश चन्द ने जैविक खाद का प्रयोग किया, बीज उपचार किया, बीज की उपयुक्त उन्नत किस्म का उपयोग किया, दूध सहकारिता एवं मात्स्यिकी–खेतिहर फसलें–बागवानी–पशु पालन की एकीकृत कृषि प्रणाली को अपनाया।

• श्री रमेश चन्द ने आरटीसी को कृषि उत्पादों की बिक्री की, ''मेरा किसान क्लब'' की सफलता के लिए प्रयास किया और आसपास के गांवों में 5–6 नए किसान क्लब प्रारंभ किए। राजस्थान के साथ–साथ अन्य राज्यों तथा आईएआरआई एवं आईसीएआर से अनेक आगन्तुक नियमित रूप से इनके खेत का दौरा करते हैं और श्री रमेश चन्द अपनी 0.17 हेक्टेयर जमीन से 0.17 लाख रूपये की आमदनी अर्जित कर रहे हैं।

• ''मेरा किसान क्लब (My Kissan Club)'' को राष्ट्रीय पुरस्कार; एकीकृत कृषि प्रणाली फसल + पशु + मात्स्यिकी; तीन महिला स्वः सहायता समूहों की सफलता; भैंस तथा बकरी में नस्ल सुधार; पशुओं को संतुलित आहार (आहार को स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री से तैयार किया जाता है); गेहूं, सरसों तथा दूध के उत्पादन में उल्लेखनीय वृद्धि; प्रगतिशील व नवोन्मेषी किसान के रूप में जिला प्राधिकरण द्वारा मान्यता; स्वतः सहायतार्थ समूह में सदस्यता एवं स्थानीय संगठनों में पद तथा नाबार्ड + कृषि विज्ञान केन्द्र किसान क्लब का मुख्य स्वयंसेवक आदि इनकी सफलता की गाथा स्वयं बयान कर रहे हैं।

• श्री रमेश चन्द को अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है जिनमें प्रमुख हैं:– प्रगतिशील किसान (पशु पालन विभाग–2006); राष्ट्रीय स्तर पर सर्वश्रेष्ठ किसान क्लब (नाबार्ड बैंक–2006–07); जिला स्तर पर प्रगतिशील किसान (आत्मा परियोजना–2007–08); खेतिहर पशु के क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ कार्य (पशु पालन विभाग–2008–09); सरसों का बीजोत्पादन (डीआरएमआर सेवार–2009); सरसों के अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन के सर्वश्रेष्ठ परिणाम (डीआरएमआर सेवार –2009–10); सरसों का रिकॉर्ड उत्पादन (डीआरएमआर सेवार–2011); नवोन्मेषी तकनीकों का अंगीकरण एवं कृषि का व्यावसायीकरण (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली–2011)।

• श्री रमेश चन्द ने नाबार्ड, कृषि विज्ञान केन्द्र, कृषि विभाग, दूध सहकारिता, पशु पालन विभाग, किसान क्लब फेडरेशन तथा ग्राम पंचायत के साथ सम्पर्क विकसित किये हैं।

मेजर मनमोहन सिंह वर्का

पिता का नाम	सरदार शमशेर सिंह वर्का	**पता**
आयु	70 वर्ष	गांव : डी 107, रंजीत एवेन्यु, अमृतसर, पंजाब
शिक्षा	स्नातक (बी.ए.)	टेलिफोन : 0183–2500376
कृषि भूमि	105 एकड़ (निजी) एवं 55 एकड़ (अनुबंध पर)	मोबाइल : 09855251092
मुख्य फसलें	किन्नू, नाशपाती, लीची, आलूबुखारा, पोपलर, हल्दी, गन्ना, गेहूं, धान व मक्का	

उपलब्धियां

• मेजर मनमोहन सिंह वर्का द्वारा 60 एकड़ क्षेत्रफल में पोपलर का पौध रोपण किया गया जो कि पांच वर्ष पुराने हैं। मेजर वर्का, पोपलर में अंतर फसल के रूप में गेहूं, गन्ना तथा हल्दी की खेती करते हैं। इसके साथ ही इनके द्वारा धान, गेहूं व मक्का जैसी फसलें भी उगाई जा रहीं हैं। मेजर वर्का द्वारा सिंचाई एवं फलोद्यान की कटाई–छंटाई की उन्नत विधियां, अंतर फसल के रूप में पोपलर को विकसित करने की तकनीक, पोषण सुविधा तथा एकीकृत कीट प्रबंधन रीतियां अपनाई गई हैं।

इनके पास एक घूर्णनशील हल्दी प्रसंस्करण इकाई है। गन्ने की बुवाई के समय में परिवर्तन करना, दो आंख वाली पोरियों से बुवाई, अमृतसर के क्षेत्र में नाशपाती तथा लीची के बाग की स्थापना, किन्नू के दर्जाकरण (ग्रेडिंग) की इकाई स्थापित करना आदि इनके द्वारा अपनाए गए नवोन्मेष हैं। इसके अलावा इनके द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के लिए धान (पूसा 1121, पूसा 1509), सब्जी (प्याज, गाजर) तथा गेहूं का बीज उत्पादन भी किया जाता है। इन्होंने जल की बचत करने के लिए अपने खेत में टपक सिंचाई विधि को अपनाया है तथा ये जैविक खेती को भी अपना रहे हैं।

• इन्होंने अपने खेत पर ही किन्नू की छंटाई/श्रेणीकरण (ग्रेडिंग), वैक्सिंग और पैकेजिंग इकाई स्थापित की है। प्रति वर्ष 45 एकड़ जमीन पर गेहूं की कटाई के बाद फलोद्यान में ड्रिप सिंचाई, गन्ना में खांचा सिंचाई और हरी खाद की खेती आदि इनकी प्रगतिशीलता के कुछ उदाहरण हैं। इन्होंने पोपलर की सीधी बिक्री हेतु यमुनानगर में एक कड़ी स्थापित की है।

• मेजर वर्का ने पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना, जलगांव, अमरावती, ऊटी, हुबली, बंगलुरू, लाहौर, रावलपिंडी तथा वैकर फाइल्ड ऑफ कैलिफोर्निया में बागवानी पर आयोजित अनेक सम्मेलनों एवं कार्यशालाओं में भागीदारी कर अपनी जानकारी को अद्यतन बनाया है। मेजर वर्का इंडियन अकादमी एवं अकादमी फाइन आर्ट्स के सक्रिय सदस्य; जिला योजना बोर्ड, अमृतसर के सदस्य; तथा कृषि विज्ञान केन्द्र, अमृतसर की वैज्ञानिक सलाहकार समिति के सदस्य हैं।

• बागवानी के क्षेत्र में उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए मेजर वर्का को वर्ष 2011 में पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा प्रतिष्ठित मुख्य मंत्री पुरस्कार प्रदान किया गया। इसके अलावा इन्हें मिलने वाले पुरस्कारों में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद का जगजीवन राम किसान पुरस्कार एवं भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली का नवोन्मेषी किसान पुरस्कार आदि प्रमुख हैं।

श्री भूरा सिंह

पिता का नाम	श्री मंगल सिंह
आयु	40 वर्ष
शिक्षा	हाई स्कूल
कृषि भूमि	3 एकड़
मुख्य फसलें	धान, गेहूं, अरहर, फूलगोभी, भिण्डी व टमाटर

पता	
गांव	: मुमताजपुर
ब्लॉक	: पटौदी
जिला	: गुडगांव, हरियाणा
मोबाइल	: 9812780915

उपलब्धियां

- श्री भूरा सिंह ने फसल उत्पादन, सब्जी उत्पादन एवं डेयरी पालन को शामिल कर एकीकृत कृषि प्रणाली अपनाकर हरियाणा राज्य के सफल किसानों में अपने आप को शामिल करवाया।
- श्री भूरा सिंह ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान से जुड़कर अपने खेत में धान (पीआरएच 10 किस्म), गेहूं, अरहर, सब्जियों (फूलगोभी, भिण्ड़ी व टमाटर) तथा सौंफ के संकर बीज उत्पादन के प्रदर्शन आयोजित किए गए।
- पॉलीहाउस सहित उन्नत कृषि प्रौद्योगिकियों को अपनाने से इनके खेत की उत्पादकता में पर्याप्त वृद्धि हुई। इन्होंने जल संचयन ढांचा भी तैयार किया है। श्री भूरा सिंह ने बेमौसमी सब्जी नर्सरी का उत्पादन एवं विपणन व्यवसाय प्रारंभ किया तथा साथ ही क्षेत्र में उन्नत कृषि प्रौद्योगिकियां अपनाने के लिए साथी किसानों को भी प्रोत्साहित करने में अग्रणी भूमिका निभाई।
- इन्होंने वर्मीकम्पोस्ट, संकर बीज उत्पादन पर दक्षता उन्मुखता प्रशिक्षणों और सब्जियों में एकीकृत कीट प्रबंधन प्रशिक्षणों में भाग लेकर इन विषयों में उल्लेखनीय जानकारी एवं दक्षता हासिल की। इन्होंने पशु स्वास्थ्य सुविधा कैम्पों में भाग लेकर वैज्ञानिक पशु सुविधा एवं प्रबंधन रीतियों के बारे में जानकारी अर्जित की। इन्होंने सब्जी उत्पादन के लिए नेटहाउस (जालघर) तकनीक को अपनाया जिससे इन्हें अधिकतम उत्पादन एवं लाभ अर्जित करने में मदद मिली।
- वैज्ञानिक टीम की निगरानी में इन्होंने अपने खेत पर धान की पीआरएच 10 किस्म के संकर बीज उत्पादन में नर उपज – 5.2 क्विंटल/ एकड़ व मादा उपज – 3.3 क्विंटल/ एकड़ प्राप्त की। पूसा 1121 तथा गेहूं की एचडी 2851, 502, एचडी 2687 किस्मः अरहर की पूसा 992 किस्म का बीज उत्पादन किया। इस पहल में खेती के पारम्परिक तरीकों की तुलना में उल्लेखनीय रूप से कहीं उच्चतर उपज क्षमता और आय दर्ज की गई।
- सब्जी उत्पादन में विविधीकरण करते हुए फसल चक्र में फूलगोभी (किस्म पूसा दीपाली); भिण्ड़ी (किस्म 51); तथा टमाटर (किस्म 5005) को शामिल करके अतिरिक्त लाभ व रोजगार पैदा किया।
- इनकी पत्नी फल परिरक्षण गतिविधियों को चलाने के लिए गठित जय दुर्गा स्वः सहायता समूह की एक सक्रिय सदस्य के साथ पदाधिकारी भी जिन्होंने स्वः सहायता समूह को पंजीकृत करा कर पटौदी ग्रामीण बैंक से जोड़ा है। अतिरिक्त आमदनी और रोजगार पैदा करने के लिए स्वः सहायता समूह द्वारा अपने सदस्यों की बचत को उपरोक्त उद्यमों में लगाया जाता है।
- श्री भूरा सिंह अधिकतम लाभप्रदता तथा टिकाऊ आजीविका सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए अपनी जानकारी बढ़ाने में हमेशा प्रयत्नशील रहते हैं। इनकी उल्लेखनीय उपलब्धियों के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा श्री भूरा सिंह को कृषि विज्ञान मेला 2008 के अवसर पर प्रगतिशील किसान पुरस्कार प्रदान किया गया।

श्री देव राज सिंह

		पता
पिता का नाम	श्री रनबीर सिंह	गांव : बदरपुर सैद
आयु	41 वर्ष	पोस्ट : बदरपुर सैद
शिक्षा	हायर सेकेण्डरी	जिला : फरीदाबाद, हरियाणा
कृषि भूमि	5 एकड़	मोबाइल : 09911777220
मुख्य फसल	गेहूं, चावल एवं सब्जियां	

उपलब्धियां

- श्री देवराज सिंह, गांव बदरपुर सैयद के एक लघु स्तरीय किसान हैं और ये पिछले दस वर्षों से भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के साथ विभिन्न परियोजनाओं से जुड़े रहे हैं। इन्होंने पूसा संस्थान के वैज्ञानिकों के मार्गदर्शन में वैज्ञानिक विधियों के साथ पारम्परिक खेती का मिश्रण किया है। श्री देवराज सिंह खेती की उन्नत तकनीकों को सीखकर उनका इस्तेमाल अपने खेत में गेहूं व धान का बीज उत्पादन करके आय बढ़ा रहे हैं।

- श्री सिंह अपने खेत में धान की किस्म पूसा बासमती 1509 उगा रहे हैं और साथ ही बाजार में इस किस्म का बीज बेचकर अच्छी आय अर्जित कर रहे हैं। इससे इन्हें सामाजिक सेवा करने के साथ–साथ अच्छी आमदनी भी हो जाती है। श्री सिंह बेबीकॉर्न, ब्रोकोली, बंदगोभी, फूलगोभी, टमाटर तथा खीरा आदि जैसी विभिन्न सब्जियों के उत्पादन में शामिल हैं।

- श्री सिंह ने भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान से प्रशिक्षण लेकर सब्जियों तथा विभिन्न खाद्य उत्पादों में मूल्य वर्धन तकनीकों को प्रचलित किया जा रहा है और साथ ही इनके द्वारा अन्य किसानों को मार्गदर्शन भी प्रदान किया जा रहा है।

- श्री सिंह भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा चलाईं गईं विभिन्न अनुसंधान परियोजनाओं में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं। श्री सिंह मुख्य सब्जियों जैसे टमाटर फूलगोभी मिर्च, गाजर, लौकी की अगेती व पछेती फसल पैदावार करके ज्यादा लाभ कमाते हैं।

- इन्होंने जैव कीटनाशक उत्पादन, कटाई उपरांत प्रबंधन तथा बीज उत्पादन जैसी नई तकनीकों पर अपनी जानकारी और कौशल को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों में भागीदारी की। श्री देवराज सिंह ने टमाअर, गाजर, घीया आदि के बीज उत्पादन में भी लाभ अर्जित किया हे।

- श्री देवराज सिंह ने अगेती पौध तैयार करने हेतु अपने खेत पर एक छोटा जालघर और एक पॉलीहाउस भी बनाया हुआ है। वर्मी कम्पोस्ट बनाकर खेत में प्रयोग करके निवेश लागत कम की और उर्वरकों पर निर्भरता घटाई।

- श्री देवराज सिंह किसानों के सशक्तीकरण के लिए आधुनिक कृषि रीतियों को अपनाने हेतु एक पंजीकृत समूह के संस्थापक सदस्य हैं। इन्होंने विभिन्न संस्थानों तथा अन्य साथी किसानों द्वारा समय–समय पर आयोजित खेत अनुसंधान प्रदर्शनों, प्रदर्शनियों तथा मेला आदि में भाग लिया।

श्री सुरेन्द्र कान्त

		पता
पिता का नाम	श्री त्रिलोक चन्द	गांव : मोहना
आयु	45 वर्ष	पोस्ट : मोहना
शिक्षा	स्नातक (कला) एवं कम्प्यूटर कोर्स (एक वर्षीय)	जिला : फरीदाबाद–121 004 हरियाणा
कृषि भूमि	50 एकड़	मोबाइल : 91 9671661339 9467051630
मुख्य फसलें	गेहूं, धान, कपास, गन्ना,सरसों, ग्रीष्म मूंग, ग्वार, बरसीम, जौ, आलू, हल्दी	ई–मेल : surenderkant123@gamail.com

उपलब्धियां

- श्री सुरेन्द्र कान्त सन् 2000 के बाद से पूरी तरह खेती के साथ जुड़कर आधुनिक कृषि की ओर अग्रसर हैं। इन्होंने गन्ना प्रजनन संस्थान (भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद) उच्चानी से प्रशिक्षण प्राप्त कर मुख्य फसल के रूप में गन्ना को अपनाया। श्री कान्त ने उन्नत मशीनरी व तकनीकों जैसे कि लेजर लेवलिंग, मिट्टी पानी की जांच, भूमिगत पाइपलाइन, फसलों की पंक्तियों में बीजाई तकनीक, शून्य जुताई एवं धान की सीधी बीजाई को अपनाया। इसके साथ ही इन्होंने पशु–पालन को अपनाया और खरीफ की मुख्य फसल के रूप में कपास की खेती की।
- श्री सुरेन्द्र कान्त ने मोटे धान के स्थान पर पूसा संस्थान की उन्नत धान किस्मों यथा पी–1121 एवं 1509, ज्वार बाजरे के स्थान पर कपास, गन्ने की पुरानी किस्मों के स्थान पर उन्नत व नई किस्मों के साथ अन्तर फसल के रूप में सरसों, गेहूं, सौंफ, मेन्था, आलू, हल्दी आदि की खेती करनी शुरू की। कृषि वानिकी के अंतर्गत इन्होंने 15 x 13 फीट के फासले पर सफेदा के वृक्ष लगाए जिनमें अन्तर फसल के रूप में ग्वार, बरसीम, कपास, जौ, सरसों आदि की फसल ली। अपने खेत में इन्होंने वर्मी कम्पोस्ट इकाई की स्थापना की, खेती में जैविक उर्वरकों का प्रयोग जैसे ट्राईकोडर्मा, विवेरिया बैसियाना एजेटोबैक्टर पीएसबी आदि का प्रयोग करके गेहूं, गन्ना, सरसों व दलहन फसलों की पैदावार और गुणवत्ता बढ़ाने के लिए काम किया।
- श्री कान्त ने गन्ना फसल उत्पादन की नई तकनीक एक आंख वाली बीजाई को अपनाकर अपने खेत में 600 क्विंटल प्रति एकड़ तक फसल उपज हासिल की। गन्ना वैज्ञानिकों की देख–रेख में इन्होंने अपने फार्म पर गन्ना की उन्नत किस्मों का उत्पादन कर अपने क्षेत्र के किसानों को उपलब्ध कराया। गन्ना बीजाई के लिए इन्होंने अपनी मशीन स्वयं तैयार की और साथ ही जरूरत के अनुसार स्प्रे पम्प तैयार किया एवं गन्ना फसल में केंचुआ की खाद ड़ालने के लिए मशीन बनाई।
- श्री सुरेन्द्र कान्त ने गांव स्तर पर संगठन बनाकर अपने अनुभव को अन्य किसानों के साथ सांझा किया। इनकी सफलता की कहानी 'दैनिक जागरण' समाचार–पत्र में प्रकाशित हुई। इन्होंने आत्मा, फरीदाबाद कृषि विज्ञान केन्द्र व कृषि विभाग द्वारा चलाईं जाने वालीं कार्यशालाओं में भाग लेकर अपना ज्ञानवर्धन किया।
- इनके प्रयासों को विभिन्न स्तरों पर सम्मान मिल चुका है। श्री कान्त को मिले पुरस्कार/सम्मान में नवोन्मेषी किसान पुरस्कार; गुजरात में आयोजित वाइब्रेट गुजरात वैश्विक कृषि सम्मेलन में प्रतिभागिता प्रमाण–पत्र; एन.एस.एफ.आई. द्वारा ग्लोबल एग्री कनेक्ट 2013 में प्रशस्ति पत्र; तथा शुगर मिल, पलवल द्वारा सम्मान प्रमुख हैं।

सरदार मोहिन्दर सिंह ग्रेवाल

पिता का नाम	सरदार अर्जन सिंह
आयु	67 वर्ष
शिक्षा	स्नातक
कृषि भूमि	12 एकड़
मुख्य फसलें	आलू, मक्का, प्याज, लहसुन, भिण्डी, लौकी, फूलगोभी, खरबूजा, मूली, पेठा एवं गाजर (बीज)

पता	
रूपा वेजिटेबल व सीड़ फार्म	
गांव	: कंगनवाल
डाकघर	: जुगियाना
जिला	: लुधियाना –141 120, पंजाब
टेलिफोन	: 0161–2510477
मोबाइल	: 09592459223

उपलब्धियां

• श्री मोहिन्दर सिंह ग्रेवाल, पंजाब राज्य के एक प्रगतिशील किसान हैं। इन्हें खेती का 35 वर्षीय अनुभव है। श्री ग्रेवाल ने अपने खेत को विकसित करके कृषि प्रणाली मोड में विविधीकरण किया एवं कुक्कुट पालन, सूअर पालन, मधुमक्खी पालन, फलों की नर्सरी एवं फलोद्यान आदि जैसे कृषि आधारित उद्यमों को शामिल कर इसको कृषि व्यवसाय के रूप में परिवर्तित किया।

• नवोन्मेषी बहु फसल चक्र और देसी तरीके से विकसित तकनीकों के माध्यम से अधिकतम लाभप्रदता हासिल करने की दिशा में इन्होंने अपने दृष्टिकोण को अभि–उन्मुखता प्रदान की। श्री ग्रेवाल ने अपने कृषि कार्यकलापों में फसल उत्पादन, पुष्प उत्पादन तथा नकदी फसलों का संकर एवं आधारीय बीज उत्पादन करना तथा ताजा सब्जियां उगाना शामिल किया।

• श्री ग्रेवाल ने फसल चक्र सघनता में 50 प्रतिशत की वृद्धि करने के लिए रिले/सहचर (companion) फसल चक्र प्रणाली को अपनाया। प्रौद्योगिकी अपनाने के साथ–साथ श्री ग्रेवाल स्थानीय प्रौद्योगिकियों को उनकी अनुकूलनता के लिए सुधारने हेतु नवीन अन्वेषणों के साथ प्रयोग कर रहे हैं। कम लागत वाली लहसुन की खेती में बुवाई लागत 2,050/– रुपये, एकड़ से घटकर 150/– रुपये एकड़ कर ली। इसी प्रकार, हाथ से की जाने वाली कटाई द्वारा कटाई में लगने वाले समय की बचत हुई और खुरपी का उपयोग कर नुकसान से भी बचा जा सका (98 प्रतिशत गैर क्षतिग्रस्त बल्ब)।

• गाजर के बीज उत्पादन के लिए मातृ गाजर फसल की मशीन से खुदाई करने पर 4,700/– रुपये प्रति एकड़ की बचत हुई। आलू की अंतर फसल खेती करते समय ट्रैक्टर एवं हल से उन्नत आलू की खुदाई करने से धन, आलू के कटने और मजदूरी आदि की बचत हुई।

• मक्का के साथ घीया का अंतर फसल चक्र अपनाने से शुद्ध आय 10,000/– रुपये से बढ़कर 15,000/– रुपये प्रति एकड़ हो गई। खरबूजे की बुवाई की तारीख में फेरबदल कर पौद को पाले से होने वाले नुकसान से बचाया जा सका। श्री ग्रेवाल द्वारा विकसित जल सिंचाई प्रणाली का उपयोग करके फसल को पाले से होने वाले नुकसान से बचाया जा सका।

• इनके द्वारा विकसित आर.सी.ओ. प्लांकर (पाटा) से लागत में 4,700/– रुपये प्रति एकड़ की बचत हुई और इसके साथ ही पर्यावरण अनुकूलन यथा वृक्षों की बचत, दीमक रोधी तथा अतिरिक्त रोजगार पैदा हुआ। भिण्डी के बीजों को यांत्रिकी तरीके से निकालने पर साफ–सुथरे एवं स्वच्छ बीज प्राप्त हुए और कहीं ज्यादा उत्पादन एवं लाभ हासिल हुआ।

• श्री ग्रेवाल कृषि लागत एवं मूल्य आयोग (CACP), कृषि मंत्रालय, भारत सरकार के पूर्व सदस्य रह चुके हैं। इन्होंने पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना से कृषि की नवोन्मेषी आधुनिक प्रौद्योगिकी पर कई प्रशिक्षण प्राप्त किए हैं। श्री ग्रेवाल को सात राष्ट्रीय पुरस्कार, सोलह से अधिक राज्य स्तरीय पुरस्कार और कृषि उत्पाद प्रतियोगिताओं में छः राज्य स्तरीय पुरस्कार तथा राष्ट्रीय एवं राज्य स्तर पर कुक्कुट पालन प्रतियोगिता में आठ पुरस्कार मिल चुके हैं।

श्री शरनप्पा अराकेरी

आयु	50 वर्ष
शिक्षा	स्तानतक
कृषि भूमि	30 एकड़
मुख्य फसल	ज्वार, मूंगफली, हरी मटर, अरहर, कपास, पपीता, अनार, चीकू, कीन्नू, तरबूज एवं करेला

पता		
गांव	:	येलाबुर्गा
तालुका	:	येलाबुर्गा
जिला	:	कोप्पल, कर्नाटक
मोबाइल	:	09448564753

उपलब्धियां

• श्री शरनप्पा अराकेरी, कर्नाटक राज्य के एक सफल कृषि उद्यमी हैं। ये बागवानी, सब्जी बीज उत्पादन, जैविक कृषि, पशु पालन, कुक्कुट पालन और जलसंभर प्रबंधन जैसी विभिन्न कृषि गतिविधियों से जुड़े हुए हैं। श्री अराकेरी पपीता, अनार, चीकू, और किन्नू जैसे फलदार फसलों की खेती कर रहे हैं। इन्होंने अपनी 0.5 एकड़ जमीन से करेला का 1.8 क्विंटल बीज उत्पादन कर 72,000/– रूपये का शुद्ध लाभ कमाया। इसी प्रकार, इन्होंने अपनी एक एकड़ जमीन में कपास का 6.38 क्विंटल बीज उत्पादन कर रूपये 1.30 लाख का शुद्ध लाभ कमाया।

• श्री अराकेरी, कढ़ी पत्ता, अनार, अंजीर और नींबू आदि की नर्सरी चला रहे हैं। इन्होंने ज्वार, मूंगफली, हरी मटर और अरहर जैसी बारानी फसलों की सफलतापूर्वक खेती की है। इन्होंने एक बीज प्रसंस्करण इकाई भी स्थापित की है। इन्होंने पपीते का 2–40 टन बीज उत्पादन कर 11.5 लाख रूपये का लाभ कमाया। अनार में इन्होंने अपनी 30 एकड़ जमीन में केसर किस्म उगाकर दो वर्ष की अवधि में 5 लाख रूपये प्रति हेक्टेयर का लाभ कमाया। श्री अराकेरी ने चीकू की क्रिकेट बॉल एवं कालियापैशन नाम की किस्मों के 800 पौधों को रोपा और 24 x 24 फीट के फासले पर 500 कीन्नू के पौधों को रोपा। इन्होंने अपनी पांच गुंटा (0.12 एकड़) जमीन में तोरई की जयपुर लांग किस्म की खेती कर 40,000 रूपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया।

• अपनी 20 गुंटा जमीन में इन्होंने तरबूज की खेती कर 15,000/– रूपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया। इन्होंने कड़ी पत्ता की 15,000 पौद उत्पन्न की और अन्य किसानों को रूपये 5/पौद की दर से बेचकर 75,000/– रूपये का लाभ हासिल किया। गूटी बांधकर बढ़ाई गई नर्सरी से इन्होंने केसर किस्म की 3 लाख पौद तैयार की और प्रति पौद 8 रूपये की दर से कुल रूपये 8.5 लाख अर्जित किए। श्री अराकेरी ने दयाना की 5000 कलमबंधन तैयार कर 1,23,000/– रूपये का शुद्ध लाभ कमाया और कागजी नींबू की 10,000 पौद तैयार कीं। इसके साथ ही श्री अराकेरी अपने खेत में चंदन, अजावन सोपनट वृक्षों एवं बिकमल्ली जैसे औषधीय एवं सगंधीय पौधों की खेती भी कर रहे हैं।

• इन्होंने ज्वार (मालडंडी) के 8 एकड़ से 40 क्विंटल; मूंगफली (टीएमवी–2) के 8 एकड़ से 32 क्विंटल; मूंग (स्थानीय) के 10 एकड़ से 20 क्विंटल; अरहर (मारूति) के 2 एकड़ से 5 क्विंटल; डेयरी पालन में 6 भैंसों से 33 लिटर प्रतिदिन दूध उत्पादन और उसकी स्थानीय बाजार में आपूर्ति; केंचुआ खाद की 8 इकाइयों (20 x 4 x 4 फीट) से 50 टन वर्मीकम्पोस्ट उत्पादन और साथ ही अपने खेत में सभी रोपण फसलों में रासायनिक उर्वरक के स्थान पर उसका प्रयोग तथा साथ ही घूरे की खाद एवं भेड़ के मल का प्रयोग किया। भूजल का स्तर बढ़ाने के लिए इन्होंने 10 लाख रूपये की लागत से 2 एकड़ क्षेत्रफल में फार्म तालाब बनवाया है

• किसानों को संगठित करके बीज उत्पादन का कार्य प्रारंभ किया और 25 किसानों द्वारा तोरई के 10 एकड़ क्षेत्र में; 25 किसानों द्वारा करेला के 13 एकड़ क्षेत्र में; 10 किसानों द्वारा कपास के 16 एकड़ क्षेत्र में; 10 किसानों द्वारा विन्सा गुलाब के 4 एकड़ क्षेत्र में बीज उत्पादन किया। किसान समुदाय के लाभ के लिए श्री अराकेरी ने कपास बीज प्रसंस्करण इकाई स्थापित की है। अन्य किसानों को कृषि, बागवानी एवं जलसंभर प्रबंधन पर तकनीकी जानकारी दी गई।

• इनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों के लिए इन्हें भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2008 में कृषि विज्ञान मेला के अवसर पर प्रगतिशील किसान पुरस्कार प्रदान किया गया।

श्री अजित गोपाल कवथेकर

पिता का नाम	श्री गोपाल कवाथेकर
आयु	59 वर्ष
शिक्षा	10वीं पास
कृषि भूमि	8 एकड़
मुख्य फसलें	आम, चीकू, बेर, सिट्रस, शरीफा नीबू, तथा इमली के फलोद्यान, ककड़ी, मूंगफली, प्याज, मिर्च, बैंगन आदि

पता		
गांव व डाकघर	:	रतन्जन
तालुका	:	बारशी
जिला	:	सोलापुर, महाराष्ट्र
मोबाइल	:	09923385399

उपलब्धियां

- श्री अजित गोपाल कवाथेकर, महाराष्ट्र के एक नवोन्मेषी एवं प्रगतिशील बागवान हैं। इनके पास अच्छा फार्म हाउस, पशुओं का बाड़ा, वर्मीकम्पोस्ट इकाई, उपकरण रखने का शैड तथा सबमर्सिबल पम्प और 5 hp की मोटर वाला छिड़काव पम्प है। इन्होंने जो फसलचक्र प्रणाली अपनाई है वह इस प्रकार है:– बागवानी–चारागाह प्रणाली (शरीफा + स्टायलो घास), कृषि–बागवानी प्रणाली (फलदार फसलें + अनाज, दलहन एवं सब्जियां), पशु आधारित कृषि – बागवानी – चारागाह प्रणाली (फलदार फसलें + मक्का/चारे के लिए ज्वार), फल + सब्जी प्रणाली – बेर + कमल ककड़ी की खेती, स्ट्रिप फसलचक्र – फलदार फसलें + मूंगफली, प्याज, मिर्च, बैंगन आदि तथा अकेले कागजी नींबू की खेती।
- इनके फार्म हाउस में 50 फीट गहरी पत्थर की खदान है जिसमें श्री कवाथेकर खरीफ मौसम के दौरान वर्षा का पानी इकट्ठा करते हैं और उसका उपयोग रबी मौसम के दौरान करते हैं। इनके फार्म हाउस में 650 इंच गहरा एक बोरवेल भी है जिसकी मदद से गर्मी के मौसम में पानी ऊपर खींच कर उसका उपयोग फल बगीचों में किया जाता है। श्री कवाथेकर ने क्षेत्र में सिट्रस की खेती का क्षेत्रफल बढ़ाने और सिट्रस की खेती में उन्नत तकनीकों को अपनाने की दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिया है।
- वर्ष 1981 के दौरान, इनके पास 3.17 हेक्टेयर जमीन थी जो कि अत्यंत उथली (इंटिसोल) प्रवृति वाली बंजर जमीन थी और जिसकी गहराई 10 सेमी. से भी कम थी जिसमें कहीं–कहीं मुलायम चट्टान, कठोर चट्टान तथा पत्थर थे। पूरी जमीन की उर्वरता बहुत कम थी। अतः श्री कवाथेकर ने अपनी जमीन पर पत्थर तोड़ने–पीसने का व्यवसाय प्रारंभ किया जिसमें कठोर काले पत्थर को ऊपरी सतह से और नीचे से खोदकर निकाला गया और उसे तोड़कर–पीसकर कुछ आय अर्जित की गई। तब वर्ष 1995 के दौरान, महाराष्ट्र सरकार ने फलदार फसलों की खेती करने वाले किसानों के लिए 100 प्रतिशत अनुदान (सब्सिडी) की घोषणा की और इससे उत्साहित होकर श्री कवाथेकर ने संरक्षित एवं जीवन को बचाने वाली सिंचाई के साथ अनेक शुष्कभूमि फलदार फसलों की खेती के लिए अपने जमीन को बदला।
- वर्ष 1999 के दौरान इन्होंने अपने फार्म पर उस्मानाबादी नस्ल की 50 बकरियों को पाला और कुछ हद तक आय अर्जित की। वर्तमान में बांध सहित इनकी सारी की सारी बंजर जमीन में फलदार फसलों की खेती की जा रही है जिसमें की कागजी नींबू, चीकू, बेर, शरीफा, इमली, कमल ककड़ी आदि की खेती सफलतापूर्वक एवं संतोषजनक तरीके से की जा रही है।
- मिट्टी की कम उर्वरता और सीमित संसाधनों को देखते हुए इन्होंने अपने कृषि व्यवसाय को ''कृषि प्रणाली मोड'' में बदला। इस के तहत श्री कवाथेकर उच्चतर पैदावार हासिल करने के लिए अपने खेत में एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन; एकीकृत पौधा पोषक तत्व प्रबंधन; मृदा एवं जल संरक्षण; एकीकृत कीट प्रबंधन; घरेलू प्रौद्योगिकी; एवं वर्मीकम्पोस्ट प्रौद्योगिकी आदि अपनाते हैं। अति उथली मृदा प्रवृति के कारण मिट्टी की कम उर्वरता को देखते हुए तथा उसमें जैविक खाद को मिलाये बिना यह संभव नहीं है कि मृदा की उर्वरता बढ़ाई जा सके और मृदा का स्वास्थ्य बनाये रखा जा सके, इसलिए श्री कवाथेकर ने अपने फार्म में वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन करना प्रारंभ किया। प्रति वर्ष इनके यहां 20–25 टन वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन हुआ और उसका उपयोग फलदार एवं सब्जी फसलों में किया गया जिससे रासायनिक उर्वरकों के प्रयोग में 50 प्रतिशत तक की कमी आई।
- वर्तमान में श्री कवाथेकर के पास कई लाख केंचुएं हैं।

श्री देवी सिंह

पिता का नाम	श्री भीम सिंह	**पता**	
आयु	45 वर्ष	गांव	: सांदल खुर्द
शिक्षा	10वीं	जिला	: सोनीपत, हरियाणा
कृषि भूमि	3 एकड़ (निजी) व 3 एकड़ (पट्टे पर)		
मुख्य फसलें	अरहर, धान, सोयाबीन, मूंग (अंतर फसल), गेहूं, मटर, बैंगन, लोकी, ज्वार		

उपलब्धियां

- श्री देवी सिंह ग्राम सांदल खुर्द, जिला सोनीपत (हरियाणा) के एक लघु किसान हैं। कुछ वर्ष पूर्व तक देवी सिंह एक आम किसान की तरह उस क्षेत्र में प्रचलित धान, गेहूं, ज्वार की खेती करते थे। जिससे उन्हें प्रति वर्ष लगभग 60 से 65 हजार की आमदनी हो जाती थी।
- बासमती धान (पूसा संकर 10 एवं पूसा सुगंध 4), अरहर (पूसा 992, पूसा 2001) किस्मों का प्रदर्शन, गेहूँ की उन्नत किस्म (एच. डी. 2733, एचडी 2824 एवं एचडी. 2932), मटर की पूसा प्रगति एवं आजाद पी. 1, ज्वार (हरे चारे के लिए) की पीसी 9 किस्म की उन्नत खेती के साथ आधुनिक कृषि को अपनाया है।
- किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन, गेहूँ का अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन, पशु स्वास्थ शिविर का आयोजन में अग्रणी रहते हैं। सन् 2006 में पूसा संस्थान ने अपने राष्ट्रीय प्रसार कार्यक्रम के अंतर्गत इस गांव को अंगीकृत किया। बासमती धान, पूसा संकर 10 एवं पूसा 1121 (पूसा सुगंध 4), गेहूं की एचडी 2733, एचडी 2824 एवं एचडी 2932 किस्में तथा मटर की किस्म पूसा प्रगति एवं आजाद पी 1 की व्यावसायिक खेती शुरू की। पूसा संस्थान के मार्गदर्शन से धान से लगभग ₹ 72,500 रूपये व गेहूं एवं मटर से ₹ 55,000 की शुद्ध आय अर्जित की अर्थात जहाँ वर्ष में 65 हजार रूपये प्राप्त होते थे वहीं अब वर्ष में ₹ 1,27,500 की शुद्ध आय हुई। इसके पश्चात् धान की पूसा सुगंध 4 एवं पूसा संकर 10 की खेती 6 एकड़ में 3 एकड़ अपना तथा शेष पट्टे पर लेकर, साथ ही रबी मौसम में गेहूं एवं मटर की उन्नत किस्मों की खेती की जिससे इनकी शुद्ध आय वर्ष में लगभग ₹ 2,80,000/– इन्होंने ट्रैक्टर व कृषि यंत्रों के साथ–साथ घरेलू उपभोक्ता सामान यथा फ्रिज व टेलिविजन इत्यादि खरीद लिया है। इससे उत्साहित होकर इन्होंने अपने घर पर दुग्ध व्यवसाय भी शुरू कर दिया है। अभी इनके पास 6 भैंसें हैं जिससे इन्हें लगभग 90 लीटर दूध प्राप्त होता है। साथ ही श्री देवी सिंह गाँव के कुछ अन्य किसानो से दूध खरीद कर लगभग 150 लीटर दूध प्रति दिन नजदीक के सोनीपत शहर में बेच आते हैं। जिससे इन्हें अपना खर्च निकाल कर प्रतिदिन लगभग ₹ 700/– तथा महीने में लगभग ₹ 20,000/– की शुद्ध आमदनी हो जाती है।

श्री देवी सिंह की इस सफलता को देखकर गांव के अन्य किसानों में भी कृषि की नवीनतम तकनीकियों को अपनाकर कृषि उत्पादन बढ़ाने एवं पशु पालन अपनाने की होड़ सी शुरू हो गयी है।

श्रीमती कृष्णा यादव

पति का नाम	श्री गोवर्धन सिंह यादव
आयु	43 वर्ष
शिक्षा	निरक्षर
कृषि भूमि	1.25 एकड़
मुख्य फसल	अमरूद व घृतकुमारी

पता		
गांव	:	43/3, मैन नजफगढ़, गुड़गांव रोड, बजघेड़ा
जिला	:	गुड़गांव, हरियाणा
टेलीफोन	:	011–25316538
मोबाइल	:	09873871611, 09868494021
ई–मेल	:	skp.consumer@gmail.com

उपलब्धियां

• श्रीमती कृष्णा यादव ने एक सफलतम खाद्य प्रसंस्करण उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बनाई है। कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों द्वारा फलों में मूल्यवर्धन एवं प्रसंस्करण करने का वर्ष 2001–02 में तीन माह का प्रशिक्षण प्राप्त करना इनके जीवन का अहम मोड़ रहा। प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद इन्होंने 3,000 रूपये के प्रारंभिक निवेश के साथ सर्वप्रथम 100 कि.ग्रा. करौंदा (कैरिजा करंडस) का अचार और 5 कि.ग्रा. मिर्च का अचार तैयार किया जिसकी बिक्री कर इन्हें 5,250 रूपये का शुद्ध लाभ मिला। करौंदा अचार तथा कैंडी तैयार करने के अपने शुरूआती दिनों से लेकर अब श्रीमती कृष्णा यादव अलग–अलग तरह की चटनी, अचार, मुरब्बा, एलोयवेरा जैल, जामुन, लीची, आम तथा स्ट्राबेरी के पूसा फल पेय आदि जैसे 152 तरह के उत्पादों का निर्माण कर रही हैं।

• इन उत्पादों को एफ.पी.ओ. टैग भी मिला हुआ है। वर्तमान में इनकी प्रसंस्करण इकाई में 500 क्विंटल फल एवं सब्जियों का प्रसंस्करण किया जाता है जिससे इनका वार्षिक टर्नओवर 2 करोड़ रूपये से भी अधिक है। इसके साथ ही इन्होंने अपने इस व्यवसाय में अन्य लोगों को रोजगार भी दिया हुआ है।

• श्रीमती कृष्णा यादव ने बीएसएफ कैंटिन सहित विभिन्न एजेंसियों के साथ मजबूत व्यापारिक सम्पर्क विकसित किए हैं। वर्तमान में इनके यहां फल एवं सब्जियों को काटने, पीसने तथा मिश्रण के लिए नियमित आधार पर 60 महिलाएं और सीजनल आधार पर लगभग 150 महिलाएं रोजगार प्राप्त कर रही हैं।

• श्रीमती कृष्णा यादव द्वारा प्राकृतिक पूसा पेय एवं सोयानट की नवोन्मेषी प्रौद्योगिकियों का व्यावसायीकरण करने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के साथ एक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए हैं। अब श्रीमती यादव 3 कम्पनियों यथा कृष्णा पिकल्स प्राइवेट लिमिटेड, शिव शक्ति ट्रेडिंग कम्पनी एवं जितेन्द्र ट्रेडिंग कम्पनी की स्वामी हैं।

• श्रीमती यादव को अनेक पुरस्कार एवं सम्मान मिल चुके हैं जिनमें वर्ष 2012 में भारत की 25 उत्कृष्ट महिलाओं की सूची में उनका नाम शामिल होना तथा ASPEE पुरस्कार प्रमुख है। श्रीमती यादव के प्रयासों की सराहना वाइब्रेंट गुजरात 2013 के अवसर पर गांधीनगर गुजरात में आयोजित ग्लोबल एग्रीकल्चर सम्मिट के दौरान की गई और इस अवसर पर इन्हें पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। श्रीमती कृष्णा यादव को विविधीकृत कृषि के लिए वर्ष 2013 का एन.जी. रंगा किसान पुरस्कार भी मिल चुका है। इसके अलावा राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर श्रीमती कृष्णा यादव सशक्तिकरण का एक जीता जागता उदाहरण है। इनके उत्पाद को आस्ट्रेलिया भेजने के लिए भी एक समझौता पर हस्ताक्षर हो चुके है।

श्रीमती शैला अरविन्द अमृते

पित का नाम	श्री यशवंत वसन्त अमृते
आयु	61 वर्ष
शिक्षा	10वीं
कृषि भूमि	22 एकड़
मुख्य फसलें	आम, काजू, कटहल, सुपारी, नारियल, अनानास व केला जैसी, बागवानी फसलें, काली मिर्च, जायफल जैसे मसाले

पता		
गांव	:	गवहे
तालुका	:	दपोली
जिला	:	रत्नागिरी–415712, महाराष्ट्र
टेलिफोन	:	02358–282315
मोबाइल	:	09422443740, 9869937609
ई–मेल	:	ashikarosery@gmail.com

उपलब्धियां

- श्रीमती शैला अरविन्द अमृते ने आसानी से उपलब्ध कच्ची सामग्री, प्रौद्योगिकियों, मानव संसाधन तथा बाजार की सुविधाओं का प्रयोग करके रत्नागिरी जिले में अपना खाद्य प्रसंस्करण उद्यम स्थापित किया है। इन्होंने स्थानीय कृषि विश्वविद्यालय से प्रशिक्षण प्राप्त करने के बाद गांव की महिलाओं को शामिल कर प्रसंस्कृत उत्पादों को बनाने का उद्यम प्रारंभ किया।
- क्षेत्र में प्रचुरता में उपलब्ध स्थानीय मौसमी फलों जैसे कि आम, काजू, सेब, कटहल, करोंदा, कोकम, जामुन आदि का प्रयोग करके सीरप, स्कवैश, अचार, पल्प तथा चटनी आदि जैसे उत्पाद तैयार किए गए।
- इन्होंने महिलाओं के एक स्वः सहायता समूह "उत्कर्ष महिला मण्डल" को पंजीकृत कराया और पापड़, मसाले, आटा तथा आटा मिश्रण जैसे उत्पाद तैयार किए। इस मॉडल से प्रेरित होकर, दूर तथा समीप के गांवों से कई महिलाओं ने स्वः सहायता समूह की स्थापना करने, खाद्य प्रसंस्करण में प्रशिक्षण तथा प्रशासनिक व विपणन सहायता में विभिन्न प्रकार के प्रोत्साहन एवं सहयोग के लिए श्रीमती शैलाताई से सम्पर्क किया।
- दपोली तहसील के गांवों के 50 से अधिक महिला मण्डलों के संघ "भराई महिला बचत गट महासंघ" द्वारा तैयार खाद्य उत्पादों की आपूर्ति मुम्बई के शहरी बाजार में और यहां तक फूड/बिग बाजार/केबी फेयर प्राइस चैन जैसे आधुनिक बिक्री केन्द्रों में की।
- श्रीमती शैलाताई ग्रामीण महिलाओं के लिए आयोजित प्रशिक्षण सत्रों एवं कार्यशालाओं में सक्रिय रूप से भाग लेती हैं और महिला उद्यमशीलता एवं सशक्तीकरण को प्रोत्साहित करने के लिए किसानों की रैलियों को सम्बोधित करतीं हैं।
- श्रीमती शैलाताई जैविक खेती और जैविक तथा पारम्परिक विधियों का उपयोग करके परिरक्षण के लिए नागली (रागी), कोकम, करोन्दा, आम आदि के जैविक उत्पादों पर बल देती हैं।
- श्रीमती शैलाताई को अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार मिल चुके हैं जिनमें जानकी देवी बजाज पुरस्कार, जीजामाता कृषि भूषण पुरस्कार (महाराष्ट्र सरकार), ASPEE फाउंडेशन द्वारा वर्ष की महिला किसान (फल परिरक्षण) पुरस्कार शामिल है।

सुश्री विनोद कुमारी

		पता	
पिता का नाम	श्री गुरदयाल चंद	गांव व डाकघर	: मैली
आयु	34 वर्ष	तहसील	: गढ़शंकर
शिक्षा	हायर सेकेण्डरी	जिला	: होशियारपुर, पंजाब
कृषि भूमि	5 एकड़	टेलिफोन नं.	: 01884–252204
मुख्य फसलें	गेहूं, मक्का, आलू एवं मटर	मोबाइल	: 9478576731
सम्बद्ध उद्यम	फल तथा सब्जी प्रसंस्करण इकाई	ई–मेल	: vinodhoshiarpur@gmail.com

उपलब्धियां

• सुश्री विनोद कुमारी ने अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद बेरोजगारी से मुक्ति पाने के लिए अपनी कृषि व्यवसाय सुधार गतिविधि प्रारंभ की। इन्होंने छोटे स्तर पर अचार बनाने का कार्य प्रारंभ किया और अचार को आसपास के क्षेत्र में बेचा। सुश्री विनोद कुमारी ने पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना से सलाह मशविरा किया और कम संसाधनों के बावजूद आज इस व्यवसाय को सफलतापूर्वक चला रही हैं। सुश्री विनोद कुमारी कृषि विज्ञान केन्द्र, होशियारपुर की बहु विषयी टीम के सम्पर्क में आईं जहां से उन्हें बुनियादी सुविधाओं का गुणवत्तापूर्ण सहयोग मिला तथा साथ ही कृषि विज्ञान केन्द्र, होशियारपुर के ''प्रयोगात्मक अनुभव द्वारा शिक्षण'' वाले दर्शनशास्त्र का लाभ मिला।

• फलों व सब्जियों के परिरक्षण में दक्षता विकास कर इनकी क्षमता को प्रज्ज्वलित किया गया या उसे सही दिशा दी गई। इनकी आन्तरिक ''उद्यमशीलता भावना'' और ''उद्यमशीलता दृष्टिकोण'' के संयोजन को कृषि विज्ञान केन्द्र, होशियारपुर में परिरक्षित उत्पादों की किस्मों के विकास को उत्कृष्ट दक्षता के साथ तैयार किया गया। अचार, जैम, चटनी, स्क्वॉश जैसे उत्पादों ने इनकी सफलता का मार्ग खोला।

• सुश्री विनोद कुमारी की प्रतिभा को पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना ने पहचाना और उन्हें मार्च, 2006 में आयोजित कृषि मेला में द्वितीय सर्वश्रेष्ठ उद्यमशीलता पुरस्कार प्रदान किया। वर्ष 2009 में भटिण्डा में आयोजित क्षेत्रीय किसान मेला में सर्वश्रेष्ठ उद्यमशीलता पुरस्कार, मार्च, 2011 में बल्लोवल सैकनोरी में आयोजित किसान मेला में द्वितीय सर्वश्रेष्ठ उद्यमशीलता पुरस्कार, वर्ष 2011 में पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना द्वारा भटिण्डा में आयोजित क्षेत्रीय किसान मेला में दूसरा सर्वश्रेष्ठ उद्यमशीलता पुरस्कार इनकी उपलब्धियों में से कुछ हैं।

• इन्हें वर्ष 2012 में पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना के किसान क्लब में भी शामिल किया गया। कृषि विज्ञान केन्द्र, होशियारपुर द्वारा प्रोत्साहित किए जाने पर अब इन्हें अपने व्यवसाय से प्रति माह 4,000/– रुपये मोबाइल वैन से 3,000/– रुपये प्रति माह और छोटे समारोहों के लिए बुकिंग आर्डर से 4,000/– रुपये प्रति माह की आय हो रही है। सुश्री विनोद कुमारी को अपने ही गांव में एक नियमित बिक्री केन्द्र से तथा किसान मेलों में स्टॉल लगाकर प्रति माह औसतन 5,000/– रुपये की आय हो रही है।

श्रीमती नम्रता प्रेमजी

		पता
पित का नाम	स्व. श्री बी.एल. घई	
आयु	48 वर्ष	पता : सी–76/2, देवेन्द्र नगर
शिक्षा	स्नातकोत्तर (एम.एससी. रसायनशास्त्र)	जिला : रायपुर – 492 001, छत्तीसगढ़ कार्यालय : मशरूम कॉर्नर शास्त्री मार्केट रायपुर
कृषि भूमि		कार्य : छत्तीसगढ़ मशरूम गांव : तेंदुआ, अभानपुर, रायपुर–493661, छत्तीसगढ़
मुख्य फसलें	मशरूम	टेलिफोन : 0771–2105891 मोबाइल : 9425513199

उपलब्धियां

• श्रीमती नम्रता प्रेमजी एक प्रसिद्ध मशरूम उत्पादक हैं जो कि पहले राजकीय कॉलेज, रायपुर में रसायनशास्त्र की सह–प्राध्यापक थीं। बाद में इन्होंने मशरूम की खेती तथा मशरूम अंडजनन के उत्पादन व प्रसंस्करण का व्यवसाय अपनाया। श्रीमती नम्रता वर्ष 2007 से राष्ट्रीय बागवानी मिशन के अंतर्गत महिला सशक्तीकरण के लिए कार्य कर रही हैं और मशरूम के उत्पादन, प्रसंस्करण तथा विपणन के लिए छत्तीसगढ़ के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षण प्रदान कर रहीं हैं।

• श्री नम्रता द्वारा जिला कबीरधाम की जिला पंचायत के साथ मिलकर गरीबी उन्मूलन कार्यक्रम के तहत छत्तीसगढ़ के सर्वाधिक प्राचीन आदिवासी "बैगा" के बीच मशरूम उत्पादन को लोकप्रिय बनाने की दिशा में कार्य कर रहीं हैं। इन्होंने वर्ष 2004 में एशियन विकास बैंक द्वारा कृषि व्यवसाय एवं व्यावसायिक कृषि परियोजनाओं पर आयोजित पारस्परिक कार्यशाला में वक्ता के रूप में भाग लिया। इसके साथ ही श्रीमती नम्रता ने शिक्षा, जागरूकता व जैव विविधता संरक्षण पर राज्य जैव विविधता रणनीति और कार्यवाही परियोजना में सक्रिय रूप से भाग लिया।

• इन्होंने विश्व बैंक की जे.एफ.एम. परियोजना के अंतर्गत छत्तीसगढ़ क्षेत्र में पर्यावरण विकास एवं वन्य जीव संरक्षण के लिए एन. जी.आई. के रूप में कार्य किया। श्रीमती नम्रता मशरूम की खेती पर दूरदर्शन एवं आकाशवाणी पर नियमित रूप से कार्यक्रम देती हैं। इन्हें ASPEE फाउंडेशन, मुम्बई द्वारा वर्ष 2003 (महिला किसान श्रेणी) के लिए पुरस्कार मिल चुका है। इसके साथ ही श्रीमती नम्रता को वर्ष 2008 में एन.आर.सी.एम., सोलन (हिमाचल प्रदेश) द्वारा प्रगतिशील मशरूम किसान के रूप में 'कृषक रत्न सम्मान" से सम्मानित किया गया।

• श्रीमती नम्रता ने एक उद्यमी के रूप में वर्ष 2007 में एन.आई.आर.डी., हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) में आयोजित राष्ट्रीय प्रदर्शनी में भाग लिया। इन्हें मशरूम के उत्पादन तथा प्रसंस्करण के लिए छत्तीसगढ़ हार्टीकल्चर सोसायटी द्वारा दो बार पुरस्कृत किया गया और मशरूम को बढ़ावा देने, उसके उत्पादन एवं प्रसंस्करण के लिए लघु स्तरीय उद्योग के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य के लिए वर्ष 2001 में उद्योग संघ, बिलासपुर द्वारा सम्मानित किया गया।

श्री पार्थ सारथी घोष

पिता का नाम	स्व. श्री भुवनमोहन घोष	**पता**		
आयु	61 वर्ष	गांव	:	सहजादापुर
शिक्षा	हायर सेकेण्डरी	पोस्ट	:	दक्षिण बिजोयनगर,
		थाना	:	जोयनगर
कृषि भूमि	1.0 एकड़	जिला	:	दक्षिण 24 परगना–743 338 पश्चिम बंगाल
मुख्य फसलें	मशरूम	मोबाइल	:	09609378281
		ई–मेल	:	psghosh54@gmail.com

उपलब्धियां

- श्री पार्थ सारथी घोष, पश्चिम बंगाल राज्य के एक प्रगतिशील खुम्ब (मशरूम) उत्पादक हैं। पहले श्री घोष बांस की रैक पर रखे प्लास्टिक के छोटे थैलों में मशरूम की खेती करते थे। 10 फीट x 10 फीट के एक कमरे में जूट के अधिकतम 162 थैले आ पाते हैं। इस तरीके से एक चक्र (दो माह) में लगभग 162 किग्रा. मशरूम का उत्पादन होता था। इससे केवल 2 बार उत्पादन लेना ही संभव हो पाता है तथा साथ ही पूरी प्रक्रिया में लगभग 25 घंटे का समय लगता है। यह ढांचा अधिकतम 2–3 वर्ष तक बना रह सकता है।
- श्री घोष ने मशरूम की खेती के लिए उन्नत रीति अपनाई जिसमें उन्होंने 10 इंच ऊंचे और 20 इंच चौड़े लोहे के फ्रेम का इस्तेमाल किया। लोहे के फ्रेम के मध्य स्टैण्ड में 4 इंच व्यास वाला एक 4 फीट लंबा छिद्रित प्लास्टिक पाइप लगाया गया। 10 फीट x 10 फीट के एक कमरे में अधिकतम 50 फ्रेम लगाये जा सकते हैं। इस विधि से एक चक (दो महीने) में लगभग 450 किग्रा. मशरूम का उत्पादन किया गया। यह एक ही बार में अपनाई जाने वाली प्रक्रिया है और इसमें 3 बार उत्पादन लेना संभव होता है तथा पूरी प्रक्रिया की स्थापना करने में 20 घंटे का समय लगता है। यह ढांचा 8–10 वर्ष तक बना रह सकता है। इस तरीके से मशरूम का उत्पादन करने से 17050 रुपये/इकाई/चक्र का शुद्ध लाभ और 2.17 का लाभ लागत अनुपात हासिल किया जा सकता है।

श्री बुध राम ठाकुर

पिता का नाम	स्व. श्री सुख राम ठाकुर
आयु	63 वर्ष
शिक्षा	स्नातक
मुख्य फसल	मशरूम

पता		
गांव	:	ठाकुर मशरूम फार्म
पोस्ट	:	छनबजहाट, रेलवे क्रासिंग के पास
जिला	:	सोलन, हिमाचल प्रदेश
मोबाइल	:	09816880000, 01792–230220
ई–मेल	:	tsm711@gmail.com

उपलब्धियां

- श्री बुध राम ठाकुर ने सोलन से प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त वर्ष 1980–81 में अपने घर के एक कमरे में 25 ट्रे के साथ मशरूम की खेती प्रारंभ कर 175 किग्रा मशरूम उत्पादन हासिल किया और 1500 रूपये का शुद्ध लाभ अर्जित किया। वर्ष 1983 में भारतीय स्टेट बैंक द्वारा दिए गए ऋण की मदद से इन्होंने मशरूम की खेती को 250 ट्रे और प्रति वर्ष दो फसल तक बढ़ा लिया। अर्जित लाभ से इन्होंने प्रत्येक सीजन में 15 x 30 फीट आकार की एक इकाई का निर्माण कराया।
- वर्ष 1987 में भारतीय स्टेट बैंक द्वारा दिए गए ऋण की मदद से तथा मशरूम अनुसंधान संस्थान के तकनीकी मार्गदर्शन में 12–12 टन क्षमता वाले दो कम्पोस्ट पास्तुरीकरण चैम्बर और कम्पोस्टिंग यार्ड्स का निर्माण किया।
- वर्ष 1997 के दौरान राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड (NHB) तथा सहकारी बैंक, बगहाट की मदद से खेती इकाइयों को वातानुकूलित इकाइयों में बदल दिया। अब श्री ठाकुर प्रति वर्ष 4–5 फसल के साथ वर्षभर मशरूम की खेती करते हैं। अब इनके पास वातानुकूलित (AC) तथा सामान्य खेती इकाइयां हैं जिनसे प्रति वर्ष 150–170 टन मशरूम पैदा होता है।
- वर्ष 1994 में इन्होंने खादी ग्रामोद्योग बोर्ड की सहायता से एफपीओ संख्या के साथ पंजीकृत मशरूम की पैकेजिंग एवं प्रसंस्करण का कार्य प्रारंभ किया। आज इनके यहां प्रति वर्ष 175 टन मशरूम का उत्पादन किया जाता है जिसे बाजार में लगभग 70 लाख रूपये के मूल्य पर बेचा जाता है। इससे प्रति वर्ष ₹ 25 लाख का शुद्ध लाभ मिलता है। इस उद्यम में 20 नियमित मजदूरों और 12 दिहाड़ी मजदूरों को भी रोजगार मिला है।
- मशरूम उत्पादकों के अध्यक्ष के रूप में कार्य करते हुए श्री ठाकुर को सोलन जिले का सबसे बड़ा मशरूम उत्पादक माना गया। इसके साथ ही इनके द्वारा इंडोर सुविधा से स्वयं तथा बिक्री के लिए गुणवत्तापूर्ण कम्पोस्ट का उत्पादन किया जा रहा है। श्री ठाकुर व्हाइट बटन तथा धिंगरी मशरूम की खेती कर रहे हैं।
- श्री ठाकुर ने भारतीय स्टेट बैंक; राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड; मशरूम अनुसंधान संस्थानों; सहकारी बैंक; खादी ग्रामोद्योग बोर्ड; वाईएसपीयूएच एंड एफ, सोलन; मशरूम निदेशालय, सोलन; तथा हिमाचल प्रदेश राज्य के बागवानी विभाग के साथ सम्पर्क विकसित किए हैं।

श्रीमती मालती रामचन्द्र हेडगे

		पता		
पिता का नाम	श्री शंकर हेडगे			
आयु	41 वर्ष	गांव	:	बृन्दावन फार्म्स
शिक्षा	स्नातक (बी. कॉम.)	पोस्ट	:	मंजली
		तालुका	:	सिरसी
कृषि भूमि	49 एकड़	जिला	:	उत्तर कन्नड़–581402 कर्नाटक
मुख्य फसलें	पपीता, काजू, नारियल, सुपारी तथा आम एवं कुक्कुट पालन	टेलिफोन	:	08384–226270, 228324
		मोबाइल	:	9480495440, 9480379200
		ई–मेल	:	rghbrindavana@gmail.com brindavana@sancharnet.in

उपलब्धियां

- कर्नाटक के उत्तर कन्नड़ जिले की सुश्री मालती रामचन्द्र हेडगे ने कुक्कुट पालन एवं बागवानी में अपने उद्यम प्रारंभ किए। कुक्कुट पालन इन्होंने 25,000 लेयर पक्षियों की क्षमता के साथ प्रारंभ किया और अब इनके फार्म में भवन से ऊंचे उठे प्लैट में पिंजरा पालन, स्वचालित जल सुविधा एवं आहार प्रणालियां एवं मल–मूत्र रख–रखाव प्रणाली आदि जैसी सभी नवीनतम प्रौद्योगिकियां हैं। प्रारंभ में इन्होंने घरेलू प्रयोजन के लिए कुक्कुट तथा पशुओं के लिए आहार तैयार करने का कार्य शुरू किया था लेकिन आजकल ये आहार का व्यावसायिक स्तर पर निर्माण कर उसकी बिक्री कर रहीं हैं। सुश्री मालती अण्ड़ों तथा चूजों की आपूर्ति सीधे स्थानीय बाजार को करती हैं।

- इन्होंने कुक्कुट फार्म से निकलने वाली खाद में मूल्य वर्धन का कार्य प्रारंभ कर उसका इस्तेमाल बागवानी फसलों के लिए किया। शुरू में इनके कुक्कुट फार्म से बड़ी मात्रा में निकलने वाले अपशिष्ट के कारण प्रदूषण की समस्या होती थी। तब इन्होंने बागवानी फसलों में इस अपशिष्ट का अनुप्रयोग करना प्रारंभ किया जिससे उत्पादकता को बढ़ाने में मदद मिली। यह रीति कुक्कुट फार्म में स्वच्छता व सफाई रखने और अण्डा उत्पादन वृद्धि में मददगार साबित हुई।

- श्रीमती मालती ने काजू (वेन्गुर्ला संकर) की अन्तर फसल के साथ पपीते की खेती कर उसकी आपूर्ति गोवा तथा मुम्बई के साथ–साथ स्थानीय बाजार में की। इन्होंने अतिरिक्त पपीते का इस्तेमाल पपीते का गूदा निकाल कर कुक्कुट पक्षियों को आहार के रूप में देकर किया। इसके परिणाम उत्साहवर्धक और आर्थिक दृष्टि से किफायती हैं।

- श्रीमती मालती ने सुपारी की फसल के साथ अंतर फसल के रूप में कोको तथा काली मिर्च की खेती की। इन्होंने अपने खेत में 18 फीट के फासले पर गड्ढे खोदकर पूरे खेत में जल संचयन संरचना स्थापित कीं। वर्षा के मौसम में इन गड्ढों में जल व मृदा का संरक्षण होता है। पूरे खेत को सिंचित करने के लिए ड्रिप सिंचाई एवं फर्टिगेशन विधि का उपयोग किया जाता है और साथ ही बोरवेल पुनर्भरण प्रणाली भी विकसित की गई है।

श्रीमती मीता सोनकुसले

पिता का नाम	श्री एस.पी. झमनानी
आयु	45 वर्ष
शिक्षा	स्नातकोत्तर (कम्प्यूटर अनुप्रयोग), बी.एससी. (जैव विज्ञान)
कुल क्षमता	1200 कुक्कुट पक्षी, कुक्कुट पालन, ब्रायलर (कॉब)
मुख्य फसलें	केला

पता		
गांव	:	1480, उमेश चिकन के ऊपर, हाथीतल रेलवे क्रासिंग के पास
जिला	:	जबलपुर, मध्य प्रदेश
टेलिफोन	:	0761–4035125
मोबाइल	:	9300985553
ई–मेल	:	meetasonkusale@yahoo.com

उपलब्धियां

- सुश्री मीता संकुसले कुक्कुट पालन के व्यवसाय में कार्यरत हैं और इन्होंने ब्रायलर पक्षी पालन, प्रजनन तथा पक्षियों के अनुवर्ती प्रदर्शन के बारे में सीख लेकर वैज्ञानिक पद्धति को अपनाया है। इनके विचार से आहार कारक और फार्म के प्रबंधन की छंटाई किए जाने की जरूरत है।
- अधिक लाभ हेतु आहार संरक्षण अनुपात निर्धारण की भूमिका महत्वपूर्ण होने के कारण इन्होंने अपने उद्यम के लिए एक आहार संरक्षण अनुपात का मानकीकरण किया है। न्यूनतम आहार ग्रहण करके अनुवर्ती स्तर पर मांस की अधिकतम मात्रा पाने के लिए सोया, मक्का तथा खाद्य तेल जैसे संघटकों और उत्तम चिकित्सा का प्रयोग इसमें किया गया। इन्होंने पक्षियों में 2 कि.ग्रा. शरीर भार हासिल करने के लिए 1.61 का न्यून आहार संरक्षण अनुपात हासिल किया।
- समुचित वायु संचार, प्रकाश तथा प्रत्येक 5 घंटे के अन्तराल पर खाना देने की क्रियाविधि, स्वच्छ जल पाइप लाइन द्वारा स्वच्छ जल की आपूर्ति, स्वास्थ्यपरक वातावरण, बाड़े की समुचित ऊंचाई (10 फीट), शुष्क स्वास्थ्यकर कूडा–करकट (अमोनिया बनने को रोकने के लिए ध्यान रखा जाए) आवश्यक हैं। ये सभी कारक न्यूनतम आहार खपत के साथ सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन देने में उत्तम पाए गए।
- आहार भण्डार के आसपास नमी तथा कीटों की रोकथाम कर तथा क्लोरीकृत जल की व्यवस्था कर सुश्री मीता ने कुछ सावधानियां अपनाईं। इन्होंने भूजल की प्रकृति के अनुसार सैनीटाइजर तथा pH नियंत्रक का इस्तेमाल किया। कूडा करकट को नियमित रूप से उठाकर तथा चूने का इस्तेमाल कर स्वास्थ्यपरक स्थिति बनाए रखी गई और टीकाकरण करवाया। इन रीतियों को अपनाकर सुश्री मीता प्रकृति के योग्यतम की उत्तरजीविता के नियम के अनुसार रुपये 50 प्रति कि.ग्रा. के साथ ब्रायलर उत्पन्न करने में सफल होंगी।
- श्रीमती मीता को ASPEE, मुम्बई द्वारा वर्ष 2009 के लिए महिला पॉल्ट्री किसान पुरस्कार मिल चुका है।

श्री सुल्तान सिंह

पिता का नाम	श्री जीत सिंह	**पता**	
आयु	51 वर्ष	गांव	: बुटाना
शिक्षा	स्नातक (बी.ए.)	डाकघर	: निलोखेड़ी
कृषि भूमि	मत्स्य प्रजनन फार्म 27 एकड़ मत्स्य पालन फार्म 50 एकड	जिला	: करनाल – 132 117, हरियाणा
मुख्य फसलें	भारतीय मुख्य कार्पस *(कटला, रोहू मृगला)*, चाइनीज मुख्य कार्पस (कॉमन कार्प, ग्रास कार्प, सिल्वर कार्प), ताजा जल, झींगा, सीबास	मोबाइल	: 9812032544
		ई–मेल	: sfsfinfo@gmail.com sfsfarm@yahoo.com

उपलब्धियां

- श्री सुल्तान सिंह एकीकृत मत्स्य पालन के क्षेत्र में एक सफल उद्यमी हैं। इनके पास कैटफिश का बड़े पैमाने पर उत्पादन करने के लिए 27 एकड़ का एक मत्स्य प्रजनन फार्म है। श्री सिंह प्रतिकूल जलवायु परिस्थितियों में झींगा पालन, कटला में अगेती प्रजनन और रोहू में आधे समय में उत्पादन को दोगुना से ज्यादा करने के लिए जाने जाते हैं। इन्होंने दिन में तीन बार आहार देकर सात महीने में रोहू (लैबियो रोहिता) का एकल संवर्धन कर 8 टन का उत्पादन हासिल किया जबकि पारम्परिक तरीके से 14 महीनों में केवल 2.5 से 4 टन का उत्पादन ही किया जाता था। इन्होंने कॉमन कार्प (साइप्रिनस कार्पियो) का प्रजनन प्रारंभ कर मछलियों का उत्पादन किया। चूंकि कार्पस मछलियों में पिन हड्डी पाई जाती है जिसे आसानी से हटाया नहीं जा सकता लेकिन श्री सुल्तान सिंह ने इसे हटाकर और अपने उत्पाद का मूल्य वर्धन कर उसे फिश फिन्गर्स, फिश बॉल्स, फिश कटलेट्स, नगेट्स आदि का रूप दिया।
- सुल्तान मत्स्य आहार फार्म पर एक घुड़साल फार्म भी है जहां घोड़े पाले जाते हैं, और उन्हें राज्य स्तर पर होने वाले पशु मेले एवं प्रदर्शनी के लिए प्रशिक्षित किया जाता है। इन्हें राज्य स्तरीय पशु प्रदर्शन का प्रमाणन भी मिल चुका है।
- श्री सुल्तान सिंह के पास एक डेयरी फार्म भी है जिसमें 5 गाय, दो भैंस तथा अन्य बछड़े/बछड़ियां हैं। डेयरी पशुओं से निकलने वाले अपशिष्ट को मत्स्य तालाबों में छोड़ दिया जाता है। नवोन्मेषी एवं नवीनतम प्रौद्योगिकी के साथ इनकी गायें प्रति दिन 52 लिटर तक दूध और भैंस प्रति दिन 23 लिटर तक दूध देती हैं। इन्होंने वर्मी कम्पोस्टिंग के माध्यम से एकीकृत पोषक तत्व प्रबंधन प्रणाली को अपनाया है। श्री सुल्तान सिंह 5 प्रजातियों (एंगल, ब्लैक मॉली, कोई कार्प, गुड कार्प एवं सुबान–नी) के सजावटी मत्स्य बीज का उत्पादन कर रहे हैं। पहले सजावटी मत्स्य बीज को ताइवान, मलेशिया एवं थाइलैण्ड आदि विभिन्न देशों से आयात किया जाता था लेकिन अब अपने भरपूर जोश एवं प्रयासों से श्री सुल्तान सिंह ने अपने फार्म पर ही सजावटी मत्स्य प्रजनन को संभव बना दिया है।
- श्री सुल्तान सिंह को अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं जिनमें प्रमुख हैं:– जगजीवन राम किसान पुरस्कार; इंटरनेशनल क्वालिटी सम्मिट अवॉर्ड, प्रगतिशील किसान पुरस्कार; कर्मभूमि सम्मान; इनका जीवन चरित्र "Marquis Who's Who in America" में प्रकाशित किया जा चुका है जिसमें साहस के प्रत्येक प्रमुख क्षेत्र तथा उत्कृष्ट वैज्ञानिक 2008/2009 के 10,000 से भी अधिक विशिष्ट व्यक्तियों अथवा प्रतिनिधियों का प्रोफाइल शामिल है।

श्री एस. अली हुसैन

पिता का नाम	हाजी ए.एम. सैय्यद
आयु	55 वर्ष
शिक्षा	स्कूल स्तर
कृषि भूमि	100 एकड़
मुख्य व्यवसाय	पी. मोनोडॉन (काली) तथा इण्डिकस (सफेद) झींगा उत्पादन

पता		
गांव	:	म.नं. 13, पी.वी. लिंगम सलाई, मारूति नगर मैयिलदुथुरई
जिला	:	नागापट्टीनम – 609 001 तमिलनाडु
मोबाइल	:	9443224968, 9842324967
ई–मेल	:	sah_bismi@rediffmail.com

उपलब्धियां

• श्री अली हुसैन ने एकीकृत मैन्ग्रोव वाले झींगा फार्म का एक अनूठा मॉडल विकसित किया है जिसमें टिकाऊ जलजीव पालन के विभिन्न अवयवों को शामिल किया।

• **बेसमी झींगा फार्म** : जलजीव पालन के क्षेत्र में विशेषज्ञता के साथ 100 हेक्टेयर की पट्टा जमीन पर सन् 1993 से एक लाइसेंसशुदा पशुधन उद्योग पेरूनथोट्टम, सिरकली तालुका में प्रचालन में है। इनका मानना है कि जलजीव पालन की सफलता के लिए रोगमुक्त झींगा बीजों का होना सर्वाधिक महत्वपूर्ण है और इसलिए इन्होंने झींगा हेचेरी के उद्यम में कदम रखा।

• **बेसमी हेचेरी** : इसे वर्ष 2002 में प्रारंभ किया गया और अब इसमें प्रति वर्ष *पी. मोनोडॉन* के 40 मिलियन रोगमुक्त एवं एन्टी–बायोटिक्स मुक्त झींगा बीजों का उत्पादन किया जा रहा है। व्यवसाय में बने रहने और स्वयं आहार तैयार करने के लिए श्री हुसैन ने भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद – केन्द्रीय खारा जलजीव पालन अनुसंधान संस्थान (CIBA), चेन्नई के साथ पीपीपी कार्यक्रम के तहत सन् 2006 में झींगा आहार मिल के व्यवसाय में कदम रखा और 120 दिनों में 30 ग्राम की बढ़वार के साथ इसका उत्पादन प्रति वर्ष 2000 MT पर्यावरण मित्रवत झींगा आहार है। झींगा के आहार के लिए उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण कच्ची सामग्री फिशमील पौधा है। अतः इसे वर्ष 2007 में प्रारंभ किया गया और अब इसमें भाप से प्रति वर्ष 6000 MT कीटाणुरहित फिशमील और साथ 200 MT मछली के तेल का उत्पादन किया जाता है।

• श्री हुसैन ने टिकाऊ जलजीव पालन एवं एकीकृत तटवर्ती क्षेत्र प्रबंधन के इतिहास में अपना नाम दर्ज कराया है। बेसमी फार्म में लगभग 1,00,000 मैन्ग्रोव हैं और मैन्ग्रोव की हरित क्षेत्र में 7 मैन्ग्रोव प्रजातियां हैं। इनकी आहार मिल देसी है और टाइगर झींगा आहार का निर्माण करने में अग्रणी है।

• इन्होंने राष्ट्रीय वैज्ञानिक अनुसंधानों जैसे केन्द्रीय खारा जलजीव पालन अनुसंधान संस्थान (CIBA), चेन्नई तथा अन्य संस्थानों जैसे समुद्रीय उत्पादन निर्यात विकास प्राधिकरण (MPEDA), वाणिज्य मंत्रालय के लिए अपने मात्स्यिकी परीक्षण करने के लिए पूर्ण सहयोग करते हुए संवर्धन के क्षेत्र में मजबूत कड़ी स्थापित की है। श्री हुसैन को वर्ष 2009 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान (IARI), नई दिल्ली ने प्रगतिशील किसान पुरस्कार प्रदान किया।

श्री राजविन्दर पाल सिंह राणा

पिता का नाम	कैप्टन दिलबाग सिंह
आयु	43 वर्ष
शिक्षा	एमबीए (विपणन एवं विज्ञापन तथा बिक्री प्रमोशन)
कृषि भूमि	सामान्य कृषि 2 एकड़, मात्स्यिकी 30 एकड़
मुख्य फसल	मात्स्यिकी

पता

गांव	:	मनदियानी वाया मुल्लनपुर
पोस्ट	:	मनदियानी वाया मुल्लनपुर
जिला	:	लुधियाना, पंजाब
मोबाइल	:	09988339592
ई–मेल	:	rpsrana2009@gmail.com

उपलब्धियां

• श्री राजविंदर पाल सिंह, पंजाब राज्य के एक प्रगतिशील किसान हैं जो कि मत्स्य एवं मत्स्य उत्पादों के उत्पादन तथा विपणन में शामिल हैं। इन्होंने स्वयं एक टैग मशीन बनाई है जिससे मछली पालक किसान बढ़वार की निगरानी हेतु स्टॉक को ढूंढ़ सकते हैं। यह मशीन चलाने में सरल है। इसकी लागत बहुत कम है जो कि 10 पैसे प्रति टैग है। इस मशीन का जीवनकाल काफी लम्बा है और इसकी कुल लागत मात्र 250 रू. है।

• लहसुन की फसल को सुरक्षित बनाने के लिए पलवार का उपयोग किया जाता है जिससे मजदूरी की लागत, खरपतवार नियंत्रण की लागत और कीटनाशकों तथा पीड़कनाशकों के प्रयोग में कमी आती है। मछली के अपशिष्ट भाग को गुड़ के साथ मिलाकर एक गड्ढ़े में रख दिया जाता है और 45 दिनों के बाद इस सामग्री का इस्तेमाल खाद के रूप में उच्च लागत वाली सब्जियों की नर्सरी में किया जाता है। मोबाइल के रेडिएशन प्रभाव को कम करने के लिए मोबाइल कवर के रूप में तथा एक्सेसरीज, महिलाओं के परिधानों, फैशन तकनीक, महिला एवं पुरूषों के पर्स एवं बेल्ट आदि बनाने में मछली की त्वचा का इस्तेमाल किया जाता है।

• मात्स्यिकी में मछलियों को पक्षियों के प्रकोप से बचाने के लिए तालाब में प्लास्टिक के कार्टन रखे जाते हैं, मछलियां स्वयं को इनके पीछे छिपा सकती हैं। इससे चोरी की संभावना भी कम हुई है और साथ ही पानी को बार–बार बदलने की जरूरत नहीं पड़ती क्योंकि पानी का तापमान अपने आप बना रहता है। एफसीआर अनुपात जो कि पहले 3:1 था अब घटकर 1.5:1 पर आ गया है जिससे लागत में कमी आई है और यह किसानों के लिए एक आर्थिक वरदान बना है। विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं मत्स्य किसान विकास एजेंसी (एफएफडीए) की नई प्रौद्योगिकियों की जानकारी हासिल कर और इन्हें अपनाकर किसान कहीं अधिक उत्पादन हासिल कर रहे हैं जिससे इनकी आमदनी भी बढ़ी है। विभिन्न रियायतों अथवा सब्सिडी के बारे में जानकारी का विस्तार हुआ है।

• जलजीव पालन में इस्तेमाल किए गए पानी का दोबारा उपयोग बीज उत्पादन के लिए विभिन्न फसलों की सिंचाई करने में किया जाता है। श्री राणा द्वारा मात्स्यिकी तालाबों में आक्सीजन का स्तर बनाए रखा गया और इससे बिजली की खपत में बचत हुई। बिजली का सही इस्तेमाल कर किसान भाई प्रति वर्ष प्रति एकड़ 12,000 रु. तक की बचत कर रहे हैं।

• श्री राजविंदर पाल सिंह राणा को अनेक पुरस्कार मिल चुके हैं जिनमें भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद, नई दिल्ली द्वारा दिया जाने वाला : जगजीवन राम अभिनव किसान पुरस्कार, 2012 प्रमुख है।

श्री अमर सिंह

पिता का नाम	श्री बखशीश सिंह
आयु	36 वर्ष
शिक्षा	हायर सेकेण्डरी
कृषि भूमि	80 x 50 फीट की तीन सूअर पालन इकाई
मुख्य फसलें	गन्ना
सम्बद्ध उद्यम	सूअर पालन इकाई

पता		
पोस्ट	:	अनवारिया फार्म
तहसील	:	बिलासपुर
जिला	:	रामपुर–244 920, उत्तर प्रदेश
टेलिफोन	:	0595.2420116
मोबाइल	:	09012505055
ई–मेल	:	gbkpiggery@yahoo.co.in

उपलब्धियां

• श्री अमर सिंह पिछले 9 वर्षों से अपना सूअर पालन फार्म चला रहे हैं। इनके परिवार ने इस फार्म का विरोध किया क्योंकि इसमें जाति बंधन और अन्य प्रतिबंध तथा सामाजिक मान्यताएं शामिल हैं। लेकिन अपने परिवार के विरोध के बावजूद श्री अमर सिंह ने 2,94,400/– रुपये खर्च करके अपने इस उद्यम को प्रारंभ किया। प्रारंभ में इन्होंने 4,500/– रुपये की दर से 6 गर्भवती मादा सूअर, 2,800/– रुपये की दर से 6 विकासशील मादा सूअर, रुपये 1,400/– की दर से 6 नवजात सूअर और रुपये 4,000/– की दर से 2 नर सूअर खरीदे। अब श्री अमर सिंह के पास दो फार्म हैं जिनमें 4 नर सूअर, 40 मादा सूअर और 270 नवजात सूअर हैं। इनकी प्रति वर्ष आमदनी 12 लाख रुपये है, जबकि खर्चा रुपये 7 लाख है। अपने सफल सूअर पालन फार्म के कारण ये क्षेत्र में अत्यधिक परिचित हैं और अपने गांव तथा आसपास के गांवों में इनकी इज्जत है।

• श्री अमर सिंह इन्टरनेट का भरपूर उपयोग करते हैं और भारत तथा विदेशों में सूअर पालन के क्षेत्र में नवीनतम जानकारी एवं आधुनिक प्रगति के बारे में सम्पर्क बनाए रखते हैं। साथ ही श्री अमर सिंह उन्नत तकनीकों का उपयोग भी कर रहे हैं। इनके सूअर पालन फार्म में सूअरों की लगातार चिकित्सा जांच की जाती है और समय–समय पर टीकाकरण किया जाता है। सूअरों को उचित संतुलित आहार दिया जाता है जिसमें 40 किग्रा. मक्का, 20 किग्रा. चावल की पॉलिश, 22 किग्रा. गेहूं की भूसी, 15 किग्रा. सोयाबीन खली, 1.5 किग्रा. खनिज और 0.5 किग्रा. नमक का मिश्रण होता है। फार्म पर आहार की खपत प्रतिदिन 1 से 2 क्विंटल है। इस संतुलित व पौष्टिक आहार को स्वयं श्री अमर सिंह ने ही तैयार किया है। इसके लिए इन्होंने नवीनतम मशीनों का उपयोग किया है। आहार तैयार करते समय श्री सिंह स्वच्छता का विशेष ध्यान रखते हैं और इसके लिए इन्होंने चार मजदूर रखे हुए हैं तथा बिजली के लिए एक जनेरेटर की सुविधा भी की हुई है। इसके अलावा श्री अमर सिंह ने सूअर पालन में हुई प्रगति का जायजा लेने के लिए अनेक राज्यों यथा पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, हिमाचल प्रदेश व दिल्ली का दौरा भी किया है।

• श्री अमर सिंह ने अपने खर्चे पर यूरोप का दौरा भी किया है और यह जानकारी हासिल की कि उन देशों में फार्म का रखरखाव किस प्रकार किया जाता है, सूअरों को आहार कैसा और कौन–कौन सी नवीनतम तकनीकों का उपयोग किया जा रहा है। श्री अमर सिंह को सूअर पालन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्यों के लिए कई पुरस्कार मिल चुके हैं जिनमें शामिल हैंः– आईएआरआई, पूसा; आ. ईवीआरआई, बरेली; एवं इंटरनेशनल यंग यूथ अवार्ड्स। श्री अमर सिंह की OLX, Click India पर अपनी वेबसाइट भी है।

श्री महावीर सिंह रोड़

पिता का नाम	श्री अभय राम
आयु	66 वर्ष
शिक्षा	9वीं पास
कृषि भूमि	16 एकड़ (सिंचित)
मुख्य फसलें	ढैंचा, मूंग, तिलहन, धान, गेहूं, सरसों, मक्का एवं सब्जियां

पता		
गांव	:	धतरथ, तहसील : सफीदों
जिला	:	जींद–126110, हरियाणा
टेलिफोन	:	01686–251070
मोबाइल	:	8053227909, 09416567037
ई–मेल	:	resagwal@70gmail.com

उपलब्धियां

• श्री महावीर सिंह रोड़ विविधीकृत कृषि के एक प्रगतिशील किसान हैं। श्री रोड ऐसे कुछ एक पहले व्यक्तियों में से हैं जिन्होंने अपनी गेहूं की फसल में शून्य जुताई तकनीक को अपनाया और इससे जुताई लागत, डीजल, समय व मजदूरी की बचत की तथा नमी और मृदा के प्राकृतिक संसाधनों को बनाये रखा। इन्होंने किसानों को अपने फार्म अपशिष्ट को नहीं जलाने के लिए न केवल प्रोत्साहित किया वरन् उन्हें उसे मृदा में बनाए रखने के लिए प्रेरित भी किया जिससे टिकाऊ कृषि उत्पादन बनाये रखने में मदद मिलती है। रोटेरी ड्रिल और न्यूनतम जुताई भी आदानों की बचत करने और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण करने में लाभदायक हैं। श्री महावीर सिंह रोड द्वारा फसल विविधीकरण को अपनाया गया क्योंकि एकल संवर्धन से मृदा की गुणवत्ता पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है और साथ ही उत्पादकता कम होती है। प्रणालियों के विविधीकरण से मृदा के स्वास्थ्य तथा प्रणाली उत्पादकता को बनाये रखने में मदद मिलती है। इनके द्वारा विविधीकरण हेतु अपनाई गईं प्रमुख फसलें हैंः– गेहूं, सरसों, मूंग, चना, बासमती धान एवं सब्जियां।

• श्री रोड के पास ट्रैक्टर, शून्य जुताई बीज ड्रिल, रोटावेटर, क्यारी प्लांटर जैसी कृषि मशीनरी एवं अन्य उन्नत मशीनों की सुविधा भी है जिसे अन्य किसानों की सुविधा के लिए किराये पर भी दिया जाता है। श्री रोड द्वारा हरी खाद, कम्पोस्ट, जैव–उर्वरकों, मृदा स्वास्थ्य को बनाए रखने के लिए मिट्टी की जांच जैसी समेकित पोषक तत्व प्रबंधन रीतियां अपनाई जा रहीं हैं। इनके द्वारा सेस्बेनिया (ढैंचा), सूरजमुखी जैसी हरी खाद वाली फसलों का उपयोग किया जा रहा है और इसे बढ़ावा दिया जा रहा है। जैव–उर्वरक का उपयोग एक उचित स्तर पर मिट्टी में सूक्ष्मजीवों की संख्या को बनाये रखने के लिए किया जाता है। मिट्टी में उपजाऊपन जिससे टिकाऊपन को बढ़ावा मिलता है, को बनाये रखने के लिए श्री रोड़ नियमित रूप से गेहूं की फसल में फॉस्फोरस घुलनशील बैक्टीरिया, माइकोराईजा तथा एजोटोबैक्टर का प्रयोग करते हैं।

• श्री रोड ने खेत की मेड़ पर नीम, सफेदा एवं शीशम जैसे वृक्ष और जामुन, अमरूद, केला व अंगूर के फलदार पौधों की रोपाई की है जिससे इनके परिवार की जरूरतें पूरी होती हैं। श्री रोड बासमती धान की खेती करते हैं और उसका निर्यात कर रहे हैं। श्री रोड भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की गेहूं व धान किस्मों के बीज उत्पादक हैं और अन्य किसानों को अपने बीजों की आपूर्ति भी करते हैं। श्री रोड ने आईआरआरआई तथा सिम्मिट, जैसे राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संगठनों के वैज्ञानिकों तथा ऑस्ट्रेलिया एवं इंग्लैंड के वैज्ञानिकों के साथ सम्पर्क स्थापित किया है। कृषि क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिए इन्हें अनेक पुरस्कार एवं मान्यता प्रमाण–पत्र मिल चुके हैं।

श्री वेंकटराव गणेशराव तेलंग

पिता का नाम	श्री गणेशराव तेलंग
आयु	83 वर्ष
शिक्षा	बी.एससी. (कृषि)
कृषि भूमि	30 एकड़
मुख्य फसलें	सुपारी, काली मिर्च, नारियल, कोको, कॉफी, केला व बांस

पता

गांव	:	कोरलकट्टा
पोस्ट	:	कोरलकट्टा
तालुका	:	सिरसी
जिला	:	उत्तर कन्नड़–581 318 कर्नाटक
टेलिफोन	:	08384–284041
मोबाइल	:	9379081606
ई–मेल	:	telangsoujaya@gmail.com

उपलब्धियां

• कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय, धारवाड़ से बी.एससी. (कृषि) पूरी करने के बाद श्री वेंकटराव गणेशराव तेलंग ने अपना जीवन अपने क्षेत्र के आर्थिक रूप से कमजोर किसान साथियों के विकास में समर्पित किया। श्री तेलंग ने सहकारी समितियां तथा शिक्षा संस्थान प्रारंभ कर साथी किसानों के वित्तीय, शैक्षणिक एवं सामाजिक उत्थान में सहायता की। इन्होंने कृषि विज्ञान केन्द्र, सीपीसीआरआई, कृषि विज्ञान विश्वविद्यालय जैसी अनुसंधान एवं प्रसार एजेन्सियों की सहायता से कृषि सम्मेलनों, कार्यशालाओं के आयोजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

• श्री तेलंग बहु फसलचक्र प्रणाली अपना रहे हैं जिसमें मुख्य फसल के रूप में सुपारी तथा उस पर लटकी हुई काली मिर्च की बेल, 18 फीट x 19 फीट के फासले के मध्य कोको पौध रोपण शामिल है। खेती की कम लागत के साथ अधिक लाभ हासिल करने के लिए एक एकड़ क्षेत्र में कुल मिलाकर 540 सुपारी पौधे, 540 काली मिर्च बेल तथा 270 कोको पौधे समायोजित किए गए हैं। कम उपजशील बोरवेल की सहायता से सिंचाई प्रभावशीलता हासिल करने के लिए सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली अपनाई गई है। श्री तेलंग सुपारी की पत्तियों, केले की पत्तियों, सुपारी के छिलके, सूखी कोको पत्तियों, कटाई छंटाई की गई कोको की हरी पत्तियों को काटकर इनका उपयोग सुपारी के पौधों में करते हैं तथा वर्ष में कम से कम तीन बार पूरे बगीचे में फैला देते हैं। पारम्परिक किसान, सुपारी की एक एकड़ में खेती करने के लिए ब्रिटिश कानून (कनारा पूर्व ग्राम अधिनियम) के दौरान प्रदान की गई नौ एकड़ बीट्टा भूमि का प्रयोग करते हैं। अतः श्री तेलंग द्वारा वनों की कटाई नहीं करके जहां एक ओर राष्ट्रीय सम्पत्ति की बचत की गई है वहीं उन्होंने खेत अपशिष्ट का न्यायोचित उपयोग भी किया है।

• मृदा संरक्षण और जल भराव परिस्थितियों में सुधार के लिए श्री तेलंग ने 18 फीट के अन्तराल पर छिद्रित पीवीसी पाइपों का उपयोग करके तथा निकासी पाइप को सिंचाई कुंए से जोड़कर उप सतही निकासी प्रणाली का उपयोग किया और उसी जल का पुनर्चक्रण किया। फिल्टरिंग सामग्री के रूप में सुपारी तथा नारियल के छिलके का उपयोग किया गया। इस प्रणाली से खुली निकासी को बदला गया और साथ ही मृदा कटाव को रोका गया। श्री तेलंग ने मशीनीकृत कटाई उपरांत प्रौद्योगिकी विकसित की है जिसका कि किसानों द्वारा व्यापक पैमाने पर उपयोग किया जा रहा है। उपयोग किए गए उपकरणों मुख्यतः स्टेनलेस स्टील बरतनों का उपयोग सुपारी की गिरी तथा काली मिर्च को उबालने के लिए किया जाता है, स्टील की केतली का उपयोग गर्म सुपारी तेल ले जाने के लिए किया जाता है और मिर्च डिकॉनिग तथा मिर्च पल्पर का उपयोग मूल्य वर्धन के लिए किया जाता है।

श्री गनपत लाल नागर

पिता का नाम	श्री छोटू लाल नागर
आयु	43 वर्ष
शिक्षा	आठवीं
कृषि भूमि	8.25 एकड़
मुख्य फसलें	सोयाबीन, मूंग (अंतर फसल), गेहूं अमरूद, आंवला, सफेद मुसली, लहसुन, हल्दी, धनिया, मेथी, चारा ज्वार, बरसीम

पता

श्री बालाजी हाईटेक हर्बल फार्म

गांव	:	गुलाबपुरा
पोस्ट	:	पलायथा
तहसील	:	अन्ता,
जिला	:	बरान–325 202, राजस्थान
मोबाइल	:	09829054171
ई–मेल	:	kvkanta@gmail.com

उपलब्धियां

• श्री गनपत लाल नागर अन्ता तहसील के गुलाबपुरा ग्राम के एक प्रगतिशील किसान हैं। इन्हें परम्परागत कृषि से लगभग एक लाख रूपये का शुद्ध लाभ प्राप्त होता था। वर्ष 2002 में कृषि विज्ञान केन्द्र अन्ता (बारां) से औषधीय फसलों की खेती पर प्रशिक्षण प्राप्त कर इन्होंने वर्ष 2003 में 0.5 हेक्टेयर में सफेद मूसली और कालमेघ की खेती से 1 लाख रूपये का लाभ कमाया तथा 1.5 हेक्टेयर में आंवला व अमरूद का बगीचा व ड्रिप सिंचाई पद्धति को कार्यान्वित किया। बगीचे में सफेद मूसली, सोयाबीन, धनिया, मूंग, उड़द की खेती करके वर्ष 2004 में 2.20 लाख रूपये की आय प्राप्त की।

• वर्ष 2005 में ही कृषि विज्ञान केन्द्र के सहयोग से स्प्रिंक्लर (फव्वारा) संयंत्र एवं दो भैस व दो गाय की लघु डेयरी की स्थापना की। साथ ही वर्मी कम्पोस्ट इकाई की स्थापना कर सभी फसलों में वर्मीकम्पोस्ट उर्वरकों का उपयोग शुरू किया। इस प्रकार से वर्ष 2005 में खेत का शुद्ध लाभ 3.20 लाख रूपये हो गया। सन् 2006 में मूसल प्रसंस्करण का प्रशिक्षण लेकर कार्य शुरू किया। वर्ष 2007 में बगीचे में 0.10 हेक्टेयर में हल्दी की खेती की शुरूआत की तथा मूसली की खेती में चौड़ी क्यारी पद्धति से खेती शुरू की। 2009–10 में लहसुन की खेती 0.5 हेक्टेयर. में शुरू की तथा सफेद मूसली का क्षेत्रफल 0.4 हेक्टेयर कर लिया गया। वर्ष 2010 में इनको पूसा प्रगतिशील किसान पुरस्कार मिला। पुरस्कार से प्रेरित होकर श्री नागर ने सफेद मूसली की खेती में अनेक नवाचार किये, जिसमें मूसली धुलाई व छिलने की मशीन का निर्माण तथा मूसली खुदाई हेतु यांत्रिकीकरण मुख्य है। इन नवाचारों से मूसली की खुदाई, सफाई, छिलाई की लागत व मजदूरों की आवश्यकता में 90 प्रतिशत तक की कमी आई है। मूसली की बुवाई पद्धति में परिवर्तन कर (उठी हुई चौड़ी क्यारी) सिंचाई जल में 50 प्रतिशत बचत के साथ मूसली का उत्पादन 45–50 किवंटल प्रति हेक्टेयर गीली (करीबन 9 क्विंटल सूखी) मूसली प्राप्त की है जिसका बाज़ार मूल्य एक से सवा लाख रूपये प्रति क्विंटल है। श्री नागर नवम्बर माह के बाद मूसली की फसल के साथ धनिया, चना व गेहूँ की मिलवां खेती कर 50–60 हजार रूपये प्रति हेक्टेयर की अतिरिक्त आमदनी प्राप्त कर रहे हैं। श्री गनपत लाल नागर के नवाचारों के कारण भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् द्वारा इनका चयन जगजीवनराम अभिनव किसान पुरस्कार–2012 के लिए किया गया।

श्री रविन्द्र रंगनाथराव चव्हाण पाटिल

		पता	
पिता का नाम	श्री रंगनाथ राव	गांव	: ए–1 न्यू मॉडर्न फार्म
आयु	61 वर्ष	पोस्ट	: दिओलाली प्रवारा
शिक्षा	स्नातक (बी.एससी. (बागवानी)	तालुका	: राहुरी
कृषि भूमि	12.5 एकड़	जिला	: अहमदनगर–413716, महाराष्ट्र
मुख्य फसल	खरीफ : अरहर, सोयाबीन, बाजरा रबी : चना, गेहूं, प्याज व गन्ना	मोबाइल	: 09422751729

उपलब्धियां

• श्री रविन्द्र रंगनाथ चव्हाण, बाजरा एवं दलहन (अरहर, सोयाबीन) के बीज उत्पादन, डेयरी पालन, बकरी पालन, मशरूम की खेती, वर्मीकल्चर उत्पादन एवं औषधीय पौधों की खेती, कृषि उत्पादन के विविधीकरण एवं व्यावसायीकरण के क्षेत्र में एक सफल किसान हैं। श्री चव्हाण द्वारा आम, नारियल, अमरूद, आंवला, अनार तथा शरीफा जैसी फलदार फसलें उगाई जा रही हैं। इन्होंने बागवानी फसलों में ड्रिप सिंचाई तथा दलहन, गेहूं व मूंगफली में स्प्रिंक्लर सिंचाई को अपनाया है। इन्होंने किसानों को विभिन्न कृषि गतिविधियों को दिखाने के लिए ''न्यू मॉडर्न फार्म'' के रूप में अपने खेत को विकसित किया है और महिला स्वः सहायता समूह; किसान क्लब; जयकिसान कॉपरेटिव जल वितरण समिति; औषधीय व सगंधीय पौध रोपण; रूरबन बायो–आर्गेनिक एग्रो डेवलेपमेंट प्रा. लि. विपणन कम्पनी); प्रसार गतिविधियों; सैनीटेशन संत गजट बाबा स्वच्छता अभियान, प्रसार अध्ययन दौरे; प्रसार–किसान क्लब; तथा कुक्कुट पालन स्वः सहायता समूह जैसे 50 किसान संगठनों को स्थापित किया है।

• इन्होंने वर्ष 1980 में सोयाबीन कृषि प्रणाली की सर्वप्रथम पहल की और साथ ही एमपीकेवी, राहुरी की दलहन सुधार परियोजना के मार्गदर्शन में सूखा परिस्थितियों के तहत उपयुक्त फसलचक्र प्रणाली को अपनाते हुए अरहर + सोयाबीन तथा अरहर + बाजरा अंतर फसलचक्र प्रारंभ किया। श्री चव्हाण द्वारा एकीकृत कीट प्रबंधन तथा जल प्रबंधन तकनीकों को अपनाया गया। सूखा परिस्थितियों के तहत फसल की उपज बढ़ाने तथा साथ ही फलों एवं खाद्यान्नों की गुणवत्ता बनाए रखने में वर्मीवाश का छिड़काव भी किया गया। पिछले चार वर्षों में अरहर + सोयाबीन से प्रति एकड़ 13,960 रूपये का लाभ अर्जित किया वहीं अरहर + बाजरा से प्रति एकड़ 10,372 रूपये का लाभ अर्जित किया। इस प्रौद्योगिकी का विस्तार महाराष्ट्र के अहमदनगर, नासिक तथा पुणे जिले में भी हुआ। इन्होंने अपने खेत पर एकीकृत गेहूं किस्म त्रियम्बक (NIAW-301) की रीतियों के पैकेज को भी आजमाया।

• इन्होंने वर्ष 2002 में जैविक कृषि की पहल की जो कि लागत प्रभावी तथा लाभ अर्जित करने वाली विधि सिद्ध हुई। वर्ष 2005–06 में किसान क्रान्ति क्लब में जैविक खेती प्रारंभ की गई। इनके खेत पर बागवानी, गन्ना, चना, गेहूं तथा सब्जी आदि में जैविक खेती को अपनाया गया जिसके लिए श्री चव्हाण को अनेक सम्मान एवं प्रमाण–पत्र प्राप्त हुए।

• इनकी उत्कृष्ट उपलब्धियों को मान्यता प्रदान करते हुए भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा श्री रविन्द्र रंगनाथ चव्हाण को कृषि विज्ञान मेला–2008 के अवसर पर प्रगतिशील किसान पुरस्कार प्रदान किया गया।

श्री नारायण उन्नी पोट्टेथ

पिता का नाम	श्री एम. रामचन्द्रन मेनन
आयु	58 वर्ष
शिक्षा	स्नातक (बी.काम.)
कृषि भूमि	18 एकड़
मुख्य फसलें	विशिष्ट चावल (किस्म नावारा, पलक्कादन मट्टा), नारियल, आम, कटहल, इमली, सब्जियां, दालचीनी, औषधीय वृक्ष एवं अन्य वृक्ष (टीक)

पता		
गांव	:	नवारा इको फार्म करूकामणि कलाम चित्तूर कॉलेज
पोस्ट	:	पलक्कड–678 104, केरल
टेलिफोन	:	04923–221177, 2222277
मोबाइल	:	9447277749
वेबसाइट	:	www.navara.in

उपलब्धियां

- श्री नारायण उन्नी पोट्टेथ ने वर्ष 1995 में कृषि कार्य करना प्रारंभ किया और अपने खेत के लिए एक दीर्घावधि योजना बनाई। इन्होंने अपने खेत को एक एकीकृत कृषि प्रणाली के रूप में विकसित किया जिसमें नारियल, औषधीय पादपों, मसालों, सब्जियों और फलों की खेती की। इन्होंने अपने खेत में गाय पालन भी किया।
- इन्होंने वर्ष 2000 से ट्रांसप्लांटर्स और कम्बाइन्ड हार्वेस्टर का उपयोग कर चावल की खेती यांत्रिक तरीके से करना प्रारंभ किया। वर्ष 2003 में इनके खेत को ''जैविक प्रमाणन'' प्राप्त हुआ। इनके पूरे खेत (नवारा इको फार्म) को वर्ष 2006 में जैविक प्रमाण–पत्र प्रदान किया गया। भारतीय उद्योग संघ (CII) के मार्गदर्शन से इन्होंने किसानों की मदद के लिए ''नवारा राइस फार्मर्स'' और ''पलक्काडन मट्टा राइस फार्मर्स'' के समूह गठित किए और चावल किस्मों को भौगोलिक संकेतक (GI) के रूप में पंजीकृत कराया। भौगोलिक संकेतक के रूप में किसी कृषि उत्पाद को पंजीकृत कराने की भारत में यह प्रथम किसान प्रेरित पहल थी।
- ''नवारा'' एक सष्टिका चावल किस्म है जो केवल केरल के कुछ भागों में उगाई जाती है और इसका इस्तेमाल गठिया, लकवा और पोलियो के आयुर्वेदिक उपचार में किया जाता है। नवारा किस्म के चावल का उपयोग एक स्वास्थ्यवर्धक एवं पौष्टिक खाद्य के रूप में किया गया। हालांकि, कम पैदावार और खेती में चुनौतियों के कारण अनूठी औषधीय विशेषताओं वाली चावल की यह किस्म केरल में लुप्त होने के कगार पर है। नवारा इको फार्म में प्रारंभ से ही बीज शुद्धीकरण कर और जैविक कृषि कार्यपद्धति का विकास कर नवारा चावल किस्म का संरक्षण किया गया।
- नवारा इको फार्म में लगातार जैव–विविधता को बनाये रखा जाता है। यह फार्म पशुओं, पक्षियों तथा तितलियों का घर है। फार्म की गतिविधियां पारिस्थितिकी और पर्यावरण के अनुकूल चलाईं जाती हैं।
- नवारा इको फार्म पर 200 पौधों का एक वनस्पति संग्रहालय बनाया गया है। मूल्य वर्धित जैविक प्रमाणित, जी.आई. पंजीकृत नवारा धान से नवारा चावल, कुटे हुए चावल तथा चावल पाउडर को यूएनएफ के ब्राण्ड नाम से बाजार में बेचा जाता है। श्री पोट्टेथ ने कुल 72 सेमिनारों, कार्यशालाओं, सम्मेलनों, व्यापार मेलों तथा प्रदर्शनियों में भाग लिया है।
- श्री पोट्टेथ को अगस्त, 2009 में संयुक्त राज्य अमेरिका में आयोजित अंतर–राष्ट्रीय सम्मेलन में प्रस्तुतीकरण देने के लिए IFOAM द्वारा आमंत्रित किया गया था। इन्हें दिनांक 13–15 अक्तूबर, 2010 के दौरान सुवॉन, दक्षिण कोरिया में ''टिकाऊ कृषि विकास एवं एशिया पैसिफिक में कृषि जैव–विविधता का उपयोग'' विषय पर आयोजित अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी में भी आमंत्रित किया गया था। श्री पोट्टेथ भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद तथा राज्य कृषि विश्वविद्यालय के सम्मेलनों में प्रस्तुतीकरण दे चुके हैं। नवारा इको फार्म द्वारा वेबसाइट www.navara.in. का सृजन कर उसे बनाए रखा गया है।
- श्री पोट्टेथ को वर्ष 2008 में प्लांट जीनोम सेवियर कम्यूनिटी रिकॉगनिशन अवॉर्ड तथा अन्य पुरस्कार मिल चुके हैं। श्री पोट्टेथ पौधा किस्म एवं कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण, भारत सरकार के सदस्य हैं।

श्री मुनीश कुमार त्यागी

		पता		
पिता का नाम	श्री राज सिंह त्यागी	गांव	:	महलवाला
आयु	42 वर्ष	पोस्ट	:	महलवाला
शिक्षा	स्नातकोत्तर (एम.एससी.) बागवानी	जिला	:	मेरठ, उत्तर प्रदेश
कृषि भूमि	9 एकड (7 एकड़ पट्टे पर)	मोबाइल	:	09212377757
मुख्य फसल	गेहूं (बीज), धान, मूंग, ग्लैडिओलस, कंदाकार, गेंदा (बीज), हल्दी, पपीता व आम	ई–मेल	:	mktyagi1972@yahoo.co.in

उपलब्धियां

• श्री मुनीश कुमार त्यागी, मेरठ, उत्तर प्रदेश के एक कृषि स्नातक तथा बागवानी में परा–स्नातक किसान हैं। इन्होंने दूसरे किसानों को लाभ पहुंचाने के लिए 'त्यागी फाउंडेशन' तथा 'लक्ष्मी जन कल्याण सेवा संस्थान' नाम से गैर–सरकारी संगठनों की स्थापना की है। इन्होंने अपने खेत पर चावल, गेहूं, दलहन एवं सब्जी फसलों की उन्नत उच्च उपजशील किस्मों को अपनाया और उच्चतर उपज प्राप्त की।

• इन्होंने अपने खेत पर बायोगैस संयंत्र, राइजोबियम संवर्धन का उपयोग, वर्मीकम्पोस्ट का उत्पादन एवं उपयोग, ट्राइकोडर्मा का उपयोग, सूक्ष्म सिंचाई प्रणाली एवं शून्य जुताई प्रणाली का उपयोग तथा गेहूं में क्यारी प्लांटर का उपयोग सहित नवोन्मेषी प्रौद्योगिकियों को अपनाया है। श्री त्यागी अपने खेत में एजोला एवं नील हरित शैवाल तथा एकीकृत कीट प्रबंधन तकनीक तथा बेहतर कृषि रीतियों का अनुपालन करते हैं।

• इन्होंने सब्जियों, फलदार फसलों तथा फूलों की खेती कर फसल विविधीकरण को बढ़ावा दिया है और इससे इनकी आमदनी भी पर्याप्त रूप से बढ़ी है।

• श्री त्यागी किसानों को बीज उत्पादन, वर्मी कम्पोस्टिंग, भूदृश्य निर्माण, पौध रोपण, पुष्प उत्पादन, मधुमक्खी पालन, संरक्षित कृषि तथा खाद्य प्रसंस्करण जैसे क्षेत्रों में सामूहिक कार्रवाई करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

• श्री त्यागी ने अपने गांव में किसान कम्पनी, किसान क्लब तथा सहकारी समिति स्थापित की है। इनके द्वारा व्यापक पैमाने पर भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की किस्मों के बीजों का उत्पादन किया जा रहा है।

• श्री त्यागी को कृषि में उल्लेखनीय योगदान के लिए कई अनुसंधान एवं विकास संगठनों तथा राज्य कृषि विश्वविद्यालयों द्वारा जिला एवं राज्य स्तर पर अनेक पुरस्कार एवं सम्मान प्रदान किए गए हैं। श्री मुनीश कुमार त्यागी को कृषि में उल्लेखनीय योगदान के लिए वर्ष 2013 में भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली द्वारा "आईएआरआई फेलो पुरस्कार' प्रदान किया गया।

श्री जयसिंह

पिता का नाम	श्री हरद्वारी राम	पता
आयु	45 वर्ष	गांव : बदरपुर सैद पोस्ट : पिपली जिला : फरीदाबाद, हरियाणा
शिक्षा	12वीं पास	
कृषि भूमि	12 एकड़	
मुख्य फसल	गेहूं, चना, जौ, सरसों, बाजरा, मूंग, लोबिया एवं ग्वार	

उपलब्धियां

• श्री जयसिंह की आय का मुख्य स्रोत खेती है। श्री जयसिंह पारम्परिक रूप से खेती करते थे जिसमें ये अनाज, दलहन तथा तिलहन (रबी मौसम में गेहूं, चना, जौ एवं सरसों तथा खरीफ मौसम में बाजरा, मूंग, लोबिया एवं ग्वार) की खेती करते थे। रबी 2004–05 से भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के साथ जुड़ाव के बाद श्री जयसिंह ने अपने साथी किसानों के साथ भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान की नवीनतम कृषि प्रौद्योगिकियों को अपनाने में गहन रूचि ली। इनके द्वारा अनुप्रयोग की गई किस्में मूंग (पूसा विशाल); बाजरा (पूसा 23, पूसा 605, पूसा 266); कपास (पूसा 8–6); गेहूं (एचडी 2329, एचडी 2687, एचडी 2824, एचडी 2285, डब्ल्यूआर 544); चना (बीजी 1088, बीजी 1108, बीजी 1053, बीजीडी 72, बीजी 372, बीजी 362); सरसों (पूसा जयकिसान, पूसा बोल्ड, पूसा जगन्नाथ, पूसा महक एवं पूसा अग्रणी) रही।

• भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित एवं सिफारिश की गई अन्य प्रौद्योगिकियों को अपनाकर श्री जयसिंह अपनी फसल उपज में 25 से 50 प्रतिशत तक की वृद्धि करने में सफल रहे। इन्होंने अपने गांव के तथा झुंझुनू जिले के आसपास के गांवों के किसानों को भी इन उन्नत प्रौद्योगिकियों को अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों की सलाह एवं मार्गदर्शन एवं श्री जयसिंह द्वारा प्रोत्साहित करने पर इनके गांव तथा आसपास के गांवों के किसान भी उच्च उपजशील किस्मों के बीजों का उपयोग कर रहे हैं।

• श्री जयसिंह ने अपने खेत में एक बायोगैस संयंत्र भी स्थापित किया जिससे 60 से 70 प्रतिशत तक पशुओं के गोबर की बचत हुई है जिसे पहले गोबर के उपलों के रूप में जला दिया जाता था। अब इससे अच्छी किस्म की खाद तैयार की जाती है। यह खाद सामान्य घूरे की खाद से चार गुना बेहतर है। इसका उपयोग करके न केवल पोषक तत्वों की बचत कर रहे हैं बल्कि इससे सिंचाई के पानी की भी बचत की जा रही है। आज इनकी कुकिंग गैस एवं प्रकाश की सभी आवश्यकताएं इस संयंत्र से पूरी की जा रही हैं।

• इनकी सफलता से प्रेरित होकर इनके गांव तथा आसपास के क्षेत्र के 15 अन्य किसानों ने भी अपने खेतों में गोबर गैस संयंत्र स्थापित किए और वर्तमान में इन किसानों द्वारा भी अपनी घरेलू ऊर्जा जरूरतों (कुकिंग एवं घरेलू प्रकाश) को पूरा करने के लिए गोबर गैस संयंत्र का उपयोग किया जा रहा है। श्री जयसिंह द्वारा इस शुष्क क्षेत्र जहां पानी की कमी है, में पानी की बचत करने के लिए फसलों की बुवाई हेतु विकसित एक्वा फर्टि सीड ड्रिल का उपयोग किया गया। इस मशीन का उपयोग कर श्री जयसिंह ने गेहूं, जौ, चना एवं सरसों आदि की बुवाई की। गुणवत्ता कृषि आदानों की खरीद और कृषि उत्पादों की विपणन से संबंधी बाजार की समस्याओं को सुलझाने के लिए श्री जयसिंह ने एक सहकारी समिति गठित की है।

श्री हनीफ खान

पिता का नाम	श्री शहीद खान
आयु	50 वर्ष
शिक्षा	10वीं
कृषि भूमि	4 एकड़
मुख्य फसल	धान, आलू, खीरा, लौकी

पता		
गांव	:	खुशलिया
जिला	:	गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश

उपलब्धियां

• श्री हनीफ खान, जिला गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश के एक लघु किसान हैं। भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान द्वारा कुशलिया गाँव को अंगीकृत करने से पूर्व श्री हनीफ खान अन्य किसानों की तरह परम्परागत ढंग से स्थानीय प्रजातियों की खेती करते थे जिससे इनके घर का खर्च बड़ी कठिनाई से चल पाता था। अंगीकृत गाँव होने के कारण हनीफ खान कृषि वैज्ञानिकों के सम्पर्क में आये और उनकी तकनीकी सहायता से धान की प्रजाति पूसा सुंगध 4 की खेती एक हेक्टेयर क्षेत्र में की जिसका कुल उत्पादन 50 किवंटल हुआ। श्री हनीफ खान ने मिल द्वारा धान से चावल निकलवाकर बाजार में 40 रू. प्रति कि.ग्रा. के हिसाब से बेचा जिससे इन्हें कुल 1 लाख रूपये की आमदनी हुई जिसमें से कुल लागत खर्च को निकालने के बाद सत्तर हजार रूपये का शुद्ध लाभ प्राप्त हुआ।

• श्री हनीफ खान ने खेत में धान काटने के पश्चात उसी खेत में आलू की बुवाई की जिसमें 300 किवंटल उत्पादन हुआ। इससे इन्हें 1 लाख 80 हजार की कुल आमदनी हुई जिसमें से कुल खर्च रूपये 50 हजार काट कर लगभग एक लाख 30 हजार रूपए का शुद्व लाभ मिला।

• उसी खेत में उन्नत प्रजाति का संकर खीरा आधा हेक्टेयर में और शेष में लौकी की पूसा नवीन प्रजाति की बुवाई की। खीरा और लौकी दोनो का खर्च निकालकर (लगभग 15 हजार खर्चा) कुल ₹ 85 हजार का शुद्व लाभ मिला। इस प्रकार श्री हनीफ खान ने पूरे वर्ष में धान–आलू–खीरा–लौकी का फसल चक्र अपनाया, धान का प्रसंस्करण कर (चावल निकाल कर) बेचा, आलू का विक्रय बेमौसम में (उस समय करना जब बाजार माँग अधिक हो) किया। श्री हनीफ खान को अधिक बाजार मूल्य प्राप्त करने के लिए अपने उत्पाद को बेमौसम बेचना अधिक लाभकारी रहा।

• श्री हनीफ खान ने न केवल लाभकारी फसल चक्र अपनाया वरन् एक अच्छी सोच, सूझबूझ से अपने उत्पाद को बेचकर कुल शुद्व लाभ 2 लाख 85 हजार ₹ प्रति हेक्टेयर प्राप्त किया, जो परम्परागत खेती की तुलना में कई गुना अधिक है।

• समय की माँग के हिसाब से खेती में वैज्ञानिक–परामर्श एवं सुनियोजित खेती को समाहित करते हुए श्री हनीफ खान ने अपनी खेती में गुणात्मक उत्थान किया है। आज श्री हनीफ खान अपने क्षेत्र के किसानों के लिए मार्गदर्शक के रूप में प्रेरणा स्रोत बने हुए हैं।

टिप्पणियाँ

टिप्पणियाँ

टिप्पणियाँ

संपादक मंडल

डॉ. जे.पी. शर्मा

डॉ. जे.पी. शर्मा संयुक्त निदेशक (प्रसार), भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली को प्रासंगिक विषयों जैसे कृषि प्रौद्योगिकियों का परिष्करण, परिनगरीय खेती और उद्यमशीलता विकास आदि पर अनुसंधान करने का श्रेय प्राप्त है। उनके ख्यातिप्राप्त जर्नलों, पत्रिकाओं और समाचार–पत्रों में 300 से भी अधिक लेख तथा 30 पुस्तके तथा बुलेटिन प्रकाशित हुए है। वे 'कम्यूनिटी मोबलाइजेशन फॉर सस्टेनेबल डेवलपमेंट' जर्नल के मुख्य संपादक हैं। डॉ. शर्मा अनेक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय व्यावसायिक समितियों के सदस्य हैं। उन्हें 60 से भी अधिक पुरस्कार/मान्यताएं प्राप्त हुई हैं जिनमें कृषक समुदाय के उत्थान के लिए उत्कृष्ट योगदान करने के लिए कुछ अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार भी शामिल हैं।

डॉ. नारायण कुम्भारे

डॉ. नारायण कुम्भारे, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के कृषि प्रौद्योगिकी सूचना केंद्र में प्रभारी के पद पर कार्यरत हैं। वे पिछले 14 साल से कृषि प्रसार के विषय में अनुसंधान, प्रशिक्षण, स्नातकोत्तर शिक्षण कार्यक्रम तथा विस्तार गतिविधियों के प्रबंधन से जुड़े हुए हैं। उन्होंने टिकाऊ आजीविका के लिए नवोन्मेषी कृषि विस्तार मॉडल तथा अनाज और दालों में अंतर विश्लेषण पर अनुसंधान किया है। उन्होंने युवा वैज्ञानिक पुरस्कार एवं उत्कृष्ट कम्यूनिटी मोबिलाइजर पुरस्कार प्राप्त किया हैं। उनके लगभग 20 शोधपत्र, 25 लोकप्रिय लेख, 50 तकनीकी बुलेटिन तथा पुस्तकों में प्रकाशित हुए हैं।

डॉ. प्रेमलता सिंह

डॉ. प्रेमलता सिंह, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में प्रधान वैज्ञानिक, प्राध्यापक और अध्यक्ष (कार्यवाहक) के पद पर कार्यरत हैं। उन्हें 25 वर्षों से अधिक का अध्यापन, अनुसंधान, प्रसार कार्य और प्रशिक्षण का अनुभव है। उनके 200 से अधिक प्रकाशन हैं। वह भारतीय कृषि प्रसार जर्नल की मुख्य सम्पादक रहीं। उन्होंने संयुक्त राज्य अमेरिका की ओहिओ स्टेट विश्वविद्यालय से प्रशिक्षण प्राप्त किया। डॉ. प्रेमलता सिहं को आईएसईई अध्येता और जी.एस. विद्यार्थी पुरस्कार के साथ–साथ वर्ष 2014 में भा.कृ.अनु.सं. का उत्कृष्ट अध्यापक पुरस्कार मिल चुका है

डॉ. मनजीत सिंह नैन

डॉ. मनजीत सिंह नैन, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि प्रसार संभाग, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली में कार्यरत है तथा इन्होने शेर ए कश्मीर कृषि और प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय जम्मू में लगभग 12 वर्षों तक कार्य किया। इनका 50 से अधिक शोध पत्रों, दो पुस्तकों, 25 अध्यायों, तकनीकी पत्रों और किसानों के लिए अनेकों लेखों को मिलाकर 100 से ज्यादा प्रकाशनों में योगदान रहा है। इनको प्रसार शिक्षा सोसाइटी का युवा वैज्ञानिक, आईएसईई अध्येता (ISEE Fellow), मोबिलाइजेशन फैलो आदि पुरस्कार मिल चुके है तथा तीन पेशेवर पत्रिकाओं के संपादक मण्डल के सदस्य हैं।

डॉ. राजर्षि राय बर्मन

डॉ. राजर्षि राय बर्मन, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली के कृषि प्रसार संभाग में वरिष्ठ वैज्ञानिक के पद पर कार्यरत है। डॉ. बर्मन प्रसार प्रणाली, कृषि प्रसार मे सूचना व प्रसार तकनीकी का प्रयोग, संचार मे शोध और स्नातकोत्तर शिक्षण कर रहे है। इन्होंने कई शोध पत्र, पुस्तक, पुस्तक अध्याय, लोकप्रिय लेख, तकनीकी बुलेटिनों और अन्य विस्तार प्रकाशनों प्रकाशित किए है और कई पुरस्कारों के प्राप्तकर्ता है।